असली 200

खतरनाक

डरावनी कहानियां

इस दुनिया में

खतरनाक डरावनी कहानियाँ

इस दुनिया में

Table of Contents

अध्याय 1

अध्याय दो

अध्याय 3

अध्याय 4

अध्याय 5

अध्याय 6

अध्याय 7

अध्याय 8

अध्याय 9

अध्याय 10

अध्याय 11

अध्याय 12

अध्याय 13

अध्याय 14

अध्याय 15

अध्याय 16

अध्याय 19

अध्याय 20

अध्याय 21

अध्याय 22

अध्याय 23

अध्याय 24

अध्याय 25

अध्याय 26

अध्याय 27

अध्याय 28

अध्याय 29

अध्याय 30

अध्याय 31

अध्याय 32

अध्याय 33

अध्याय 34

अध्याय 35

अध्याय 36

अध्याय 37

अध्याय 38

अध्याय 39

अध्याय 40

अध्याय 41

अध्याय 42

अध्याय 43

अध्याय 44

अध्याय 45

अध्याय 46

अध्याय 47

अध्याय 48

अध्याय 49

अध्याय 50

अध्याय 51

अध्याय 52

अध्याय 53

अध्याय 54

अध्याय 55

अध्याय 56

अध्याय 57

अध्याय 58

अध्याय 59

अध्याय 60

अध्याय 61

अध्याय 62

अध्याय 63

अध्याय 64

अध्याय 65

अध्याय 66

अध्याय 67

अध्याय 68

अध्याय 69

अध्याय 70

अध्याय 71

अध्याय 72

अध्याय 73

अध्याय 74

अध्याय 75

अध्याय 76

अध्याय 77

अध्याय 78

अध्याय 79

अध्याय 80

अध्याय 81

अध्याय 82

अध्याय 83

अध्याय 84

अध्याय 85

अध्याय 86

अध्याय 87

अध्याय 88

अध्याय 89

अध्याय 90

अध्याय 91

अध्याय 92

अध्याय 93

अध्याय 94

अध्याय 95

अध्याय 96

अध्याय 97

अध्याय 98

अध्याय 99

अध्याय 100

अध्याय 101

अध्याय 102

अध्याय 103

अध्याय 104

अध्याय 105

अध्याय 106

अध्याय 107

अध्याय 108

अध्याय 109

अध्याय 110

अध्याय 111

अध्याय 112

अध्याय 113

अध्याय 114

अध्याय 115

अध्याय 116

अध्याय 117

अध्याय 118

अध्याय 119

अध्याय 120

अध्याय 121

अध्याय 122

अध्याय 123

अध्याय 124

अध्याय 125

अध्याय 126

अध्याय 127

अध्याय 128

अध्याय 129

अध्याय 130

अध्याय 131

अध्याय 132

अध्याय 133

अध्याय 134

अध्याय 135

अध्याय 136

अध्याय 137

अध्याय 138

अध्याय 139

अध्याय 140

अध्याय 141

अध्याय 142

अध्याय 143

अध्याय 144

अध्याय 145

अध्याय 146

अध्याय 147

अध्याय 148

अध्याय 149

अध्याय 150

अध्याय 151

अध्याय 152

अध्याय 153

अध्याय 154

अध्याय 155

अध्याय 156

अध्याय 157

अध्याय 158

अध्याय 159

अध्याय 160

अध्याय 161

अध्याय 162

अध्याय 163

अध्याय 164

अध्याय 165

अध्याय 166

अध्याय 167

अध्याय 168

अध्याय 169

अध्याय 170

अध्याय 171

अध्याय 172

अध्याय 173

अध्याय 174

अध्याय 175

अध्याय 176

अध्याय 177

अध्याय 178

अध्याय 179

अध्याय 180

अध्याय 181

अध्याय 182

अध्याय 183

अध्याय 184

अध्याय 185

अध्याय 186

अध्याय 187

अध्याय 188

अध्याय 189

अध्याय 190

अध्याय 191

अध्याय 192

अध्याय 193

अध्याय 194

अध्याय 195

अध्याय 196

अध्याय 197

अध्याय 198

अध्याय 199

अध्याय 200

दुनिया की 200 सबसे खतरनाक डरावनी कहानियाँ

दस्तावेजी रूप से दर्ज भयावह घटनाओं, असाधारण घटनाओं और मानव इतिहास के सबसे काले अध्यायों का

एक व्यापक वृत्तांत

हर कहानी पूरी तरह से बताई गई है—कुछ भी छोड़ा नहीं गया, कुछ भी नरम नहीं किया गया।

विषयसूची

अध्याय 1: एमिटीविल का आतंक—वह घर जहाँ से मौत का खून बहा
अध्याय 2: लंदन का टावर—सदियों का खून और चीखते भूत अध्याय 3: डायटलोव दर्रा की घटना—नौ पर्वतारोही, एक भयानक रात अध्याय 4: गुड़ियों का द्वीप—मेक्सिको का सबसे डरावना स्थान
अध्याय 5: काली आँखों वाले बच्चे—पागलपन में समाप्त होने वाली मुलाक़ातें अध्याय 6: पोवेगलिया द्वीप—इटली का शापितों का निषिद्ध द्वीप
अध्याय 7: एडम्स की घंटी चुड़ैल—वह प्रेतवाधित घटना जिसने एक राष्ट्रपति को भयभीत कर दिया अध्याय 8: सेसिल होटल—लॉस एंजिल्स का मौत का घर
अध्याय 9: बोरली रेक्टरी का प्रेतवाधित होना—इंग्लैंड का सबसे प्रेतवाधित घर 10: सैली हाउस—एक ऐसा दानव जो विशेष रूप से पुरुषों को निशाना बनाता था अध्याय 11: एनफील्ड पोल्टरजिस्ट—इतिहास में सबसे अधिक बार देखी गई भूतिया घटना अध्याय 12: विलिस्का कुल्हाड़ी हत्याकांड—अमेरिका की सबसे खूनी अनसुलझी रात अध्याय 13: विनचेस्टर रहस्यमयी घर—मृतकों से बचने के लिए बनाया गया अध्याय 14: वूलपिट के हरे बच्चे—दूसरी दुनिया से आए आगंतुक अध्याय 15: स्किनवॉकर रेंच—जहां भौतिकी के नियम टूट जाते हैं अध्याय 16: मर्टल्स प्लांटेशन—कब्रिस्तान पर बना, खून से लथपथ अध्याय 17: नरक की आवाजें—सोवियत बोरहोल जिसने शापितों की

आवाजें सुनीं अध्याय 18: ब्लू बेल हिल का प्रेत हिचहाइकर—ब्रिटेन का सबसे स्थायी प्रेत अध्याय 19: यूनिट 731—जापान का गुप्त आतंक जिसे दुनिया ने भुलाने की कोशिश की अध्याय 20: मॉथमैन—विनाश का पैगंबर 21: रेक—वह प्राणी जो सोते समय आपको देखता है 22: आओकिगाहारा—जापान का वृक्षों का सागर, मृत्यु का वन 23: पूर्वी राज्य कारागार का प्रेतवाधित क्षेत्र 24: फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर—वेस्ट वर्जीनिया का अलौकिक आतंक 25: पेरिस कैटाकॉम्ब्स—प्रकाश के शहर के नीचे छह मिलियन आत्माएं 26: ताओस हम—एक ऐसी ध्वनि जो लोगों को पागलपन की ओर ले जाती है 27: गेवाउदान का जानवर—फ्रांस का अजेय मॉन्स्टर
अध्याय 28: इगोरॉट्स के लटकते ताबूत—फिलीपींस के आकाश में मृत लोग अध्याय 29: 1518 का नाचता प्लेग—जब लोग नाचते-नाचते मर गए अध्याय 30: ग्रीनब्रियर भूत —वह मृत महिला जिसने अपनी ही हत्या का रहस्य सुलझाया अध्याय 31: फ्लाइंग डचमैन—तीन शताब्दियों में देखा गया एक भूतिया जहाज
अध्याय 32: रोआनोक की खोई हुई बस्ती—बिना किसी निशान के गायब हो गई
अध्याय 33: बनी मैन ब्रिज—वर्जीनिया का कुल्हाड़ी चलाने वाला प्रेत
अध्याय 34: ऑक्टागन हाउस—वाशिंगटन डी.सी. का सबसे पुराना भूत
अध्याय 35: वार्डली हॉल की चीखती खोपड़ी
अध्याय 36: केली-हॉपकिंसविले मुठभेड़—जब किसानों ने एलियंस से लड़ाई लड़ी
अध्याय 37: ओकविले ब्लब्स—जिलेटिनस बारिश जिसने बड़े पैमाने पर बीमारी फैलाई
अध्याय 38: एवोरा में हड्डियों का चैपल—मानव खोपड़ियों से बनी दीवारें अध्याय 39: रेन्हम हॉल की भूरी महिला—ब्रिटेन की सबसे प्रसिद्ध भूतिया तस्वीर अध्याय 40: हाईगेट वैम्पायर—लंदन का अमर प्राणी कब्रिस्तान में आतंक मचाता है अध्याय 41: रॉबर्ट द

डॉल—फ्लोरिडा का सबसे भयानक खिलौना

अध्याय 42: स्टुल कब्रिस्तान—कैनसस में नरक का द्वार

अध्याय 43: बंदर के पंजे का अभिशाप—वह इच्छा जो विनाश करती है

अध्याय 44: मैरी किंग्स क्लोज़—एडिनबर्ग की दबी हुई प्लेग गली

अध्याय 45: फ्लैनन आइल्स लाइटहाउस रहस्य—तीन रखवाले गायब अध्याय 46: ब्लैक डाहलिया हत्याकांड—हॉलीवुड का अनसुलझा हॉरर

अध्याय 47: काउंटेस बाथोरी—हंगरी की रक्त काउंटेस

अध्याय 48: व्हेली हाउस—कैलिफ़ोर्निया की सबसे प्रेतवाधित इमारत

अध्याय 49: हार्ज़ पर्वत के खोए हुए बच्चे—जर्मनी की डरावनी परी कथा अध्याय 50: एसएस ओरंग मेडन—मृत नाविकों से भरा भूतिया जहाज अध्याय 51: काले कपड़ों वाले लोग—सरकारी एजेंट या कुछ और

अध्याय 52: स्टोन टेप सिद्धांत—मौत को रिकॉर्ड करने वाली इमारतें

अध्याय 53: विलमिंगटन का ओकडेल कब्रिस्तान—चीखता हुआ भूत अध्याय 54: स्टेनली होटल—जहां स्टीफन किंग को अपना दुःस्वप्न मिला अध्याय 55: लीप कैसल का प्रेतवाधित होना—आयरलैंड का सबसे खूनी किला

अध्याय 56: हर्टगेन वन की भूत सेना—द्वितीय विश्व युद्ध का अलौकिक आतंक 57: रोते हुए लड़के की पेंटिंग्स—शापित कला जो हर आग से बची रही अध्याय 58: सवाना कब्रिस्तान—अमेरिका का सबसे प्रेतवाधित शहर अध्याय 59: हैती का ज़ोंबी—चलते-फिरते मुर्दों का असली विज्ञान अध्याय 60: ओवरटाउन ब्रिज—स्कॉटलैंड में जहाँ कुत्ते मरने जाते हैं अध्याय 61: मर्सी ब्राउन मामला—अमेरिका का आखिरी असली पिशाच अध्याय 62: जर्सी का शैतान—पाइन बैरेंस का शाश्वत राक्षस अध्याय 63: काला शक—

ईस्ट एंग्लिया का शैतानी कुत्ता अध्याय 64: होइया बासिउ वन—रोमानिया का पेड़ों का बरमूडा त्रिकोण अध्याय 65: ब्रिजवाटर त्रिकोण—नया इंग्लैंड का आतंक क्षेत्र अध्याय 66: हाईगेट कब्रिस्तान—लंदन में विक्टोरियन गोथिक हॉरर अध्याय 67: गेटिसबर्ग का भूतिया किस्सा—अमेरिका का सबसे प्रेतवाधित युद्धक्षेत्र अध्याय 68: नाज़का रेखाएँ—रेगिस्तानी रेखाचित्र जो केवल अंतरिक्ष से दिखाई देते हैं अध्याय 69: वॉयनिच पांडुलिपि—वह किताब जिसे कोई नहीं पढ़ सकता अध्याय 70: समरविंड हवेली—विस्कॉन्सिन का गायब होता प्रेतवाधित घर अध्याय 71: मैटून का पागल गैसर—अदृश्य विषदाता अध्याय 72: डोनर पार्टी—सिएरा नेवादा में उत्तरजीविता हॉरर अध्याय 73: स्टोनवॉल इन पोल्टरजिस्ट—न्यूयॉर्क का छिपा हुआ प्रेतवाधित किस्सा अध्याय 74: छाया लोग—वे पहरेदार जिनकी व्याख्या करना असंभव है अध्याय 75: शिकागो का प्रेतवाधित होटल—एच.एच. होम्स का हत्यारा महल अध्याय 76: जहरीली गोली हत्याएं—शिकागो में अनसुलझी सामूहिक हत्या 77: डिब्बुक बॉक्स—दुनिया की सबसे खतरनाक वस्तु अध्याय 78: हाउस्का कैसल—चेक गणराज्य में नरक का द्वार अध्याय 79: मिस्र की चीखती ममी—आतंक में मरने वाले मृत लोग अध्याय 80: मैरी सेलेस्टे—वह जहाज जो अपने चालक दल के बिना रवाना हुआ अध्याय 81: व्यथित व्यक्ति चित्रकार—कथित तौर पर मानव रक्त से बनी कला अध्याय 82: केडी केबिन हत्याकांड—कैलिफ़ोर्निया में अनसुलझा नरसंहार अध्याय 83: हैमेलिन के बच्चे—पाइड पाइपर का असली आतंक अध्याय 84: वेवर्ली हिल्स सैनिटोरियम—लुइसविले की मृत्यु सुरंग अध्याय 85: बुस्को का जानवर—इंडियाना का असंभव कछुआ अध्याय 86: हाईगेट दानव—वह सत्ता जिसका नाम नहीं लिया जा सकता अध्याय 87: एनेलिज़ मिशेल का कब्ज़ा—जर्मनी का वास्तविक भूत-प्रेत भगाने की प्रक्रिया अध्याय 88: ला ल्लोरोना—मेक्सिको में मारे गए

बच्चों का रोता हुआ भूत अध्याय 89: वेंडिगो—कनाडा की शीत ऋतु की नरभक्षी आत्मा अध्याय 90: द चैम्प—लेक चैम्पलेन का प्राचीन राक्षस अध्याय 91: शैतो डी ब्रिसैक का प्रेतवाधित होना—फ्रांस की 'लेडी ऑफ द ग्रीन' अध्याय 92: द थंडरबर्ड—उत्तरी अमेरिका का आकाश आतंक अध्याय 93: द केडी केबिन हॉरर—उत्तरी कैलिफोर्निया का सबसे खूनी रहस्य अध्याय 94: द स्लेंडर मैन—डिजिटल मिथक वास्तविक दुनिया की हिंसा बन जाता है अध्याय 95: द सुसाइड फॉरेस्ट ऑडियो रिकॉर्डिंग—जापान की भयावह ईवीपी अध्याय 96: द टॉयन्बी टाइल्स—फिलाडेल्फिया में गुमनाम संदेश स्ट्रीट्स अध्याय 97: माउंट मिसरी रोड—लॉन्ग आइलैंड का अंधकार का द्वार अध्याय 98: तमन शुड मामला—ऑस्ट्रेलिया की सबसे रहस्यमय मौत अध्याय 99: पास्कागौला अपहरण—अमेरिका का सबसे विश्वसनीय एलियन मुठभेड़ अध्याय 100: तुंगुस्का घटना—वह विस्फोट जिसने दुनिया को हिला दिया अध्याय 101: शैतान का घर—इटली की अपशकुन इमारत अध्याय 102: एडिनबर्ग कैसल का भूत—स्कॉटलैंड का प्राचीन ढोलक वादक अध्याय 103: टोकोलोशे—दक्षिणी अफ्रीका का रात्रि दानव अध्याय 104: ब्लैक फॉरेस्ट का भूतिया अनुभव—कोलोराडो का सैन्य-स्तरीय भूत अध्याय 105: नैन रूज—डेट्रॉइट का छोटा लाल विनाश का दानव अध्याय 106: गैल्वेस्टन का मॉथमैन—टेक्सास का तटीय आतंक

अध्याय 107: फिलाडेल्फिया प्रयोग—गायब हुआ जहाज अध्याय 108: पोप लिक मॉन्स्टर—केंटकी का ब्रिज गोट मैन अध्याय 109: पोवेगलिया प्लेग के गड्ढे—खुदाई करने वालों को क्या मिला

अध्याय 110: होप डायमंड का अभिशाप—खून में सना हुआ रत्न अध्याय 111: शैतो डी गुडानेस का प्रेतवाधित होना—पाइरेनीज़ में फ्रांसीसी आतंक अध्याय 112: ऑस्ट्रेलियाई

मिन मिन लाइट्स—वे रोशनी जो आपका घर तक पीछा करती हैं अध्याय 113: सेंट ऑगस्टीन लाइटहाउस—फ्लोरिडा का सबसे पुराना प्रेतवाधित स्थान अध्याय 114: हाथ उसका विरोध करते हैं पेंटिंग—ईबे पर सबसे प्रेतवाधित वस्तु अध्याय 115: लिज़ी बॉर्डन हाउस—फॉल रिवर की खूनी कुल्हाड़ी

अध्याय अध्याय 116: ओज़ार्क हॉलर—मिसौरी का दहाड़ता हुआ साया राक्षस अध्याय 117: ड्रिस्किल होटल—ऑस्टिन का प्रेतवाधित टेक्सास स्थल अध्याय 118: एनाबेल गुड़िया—राक्षस का पसंदीदा पात्र अध्याय 119: ब्लेडेनबोरो का राक्षस—उत्तरी कैरोलिना का पिशाच शिकारी अध्याय 120: गेटिसबर्ग के भूत—वे मृत जो युद्धक्षेत्र से कभी नहीं लौटे अध्याय 121: तुतनखामुन का अभिशाप—मृत्यु फिरौन की कब्र का पीछा करती है अध्याय 122: प्लकली गांव का प्रेतवाधित होना—इंग्लैंड का सबसे प्रेतवाधित गांव अध्याय 123: अल्काट्राज़ द्वीप का प्रेतवाधित होना—चट्टान के कारागार भूत अध्याय 124: फ्रेस्नो नाइटक्रॉलर—कैलिफ़ोर्निया के चलते हुए सफेद स्तंभ अध्याय 125: प्राचीन मेढ़े का प्रेतवाधित होना सराय—इंग्लैंड की सबसे पुरानी प्रेतवाधित सराय अध्याय 126: कोलचेस्टर गैरीसन पोल्टरजिस्ट—सेना का अपना प्रेतवाधित मामला अध्याय 127: लेक लैनियर में डूबने की घटनाएँ—जॉर्जिया का शापित जलाशय अध्याय 128: एनफील्ड मॉन्स्टर—इलिनॉय का सड़क किनारे का आतंक अध्याय 129: सिसिली की रोती हुई मैडोना—दुनिया भर में रोती हुई मूर्तियाँ अध्याय 130: चिलिंगहैम कैसल का प्रेतवाधित मामला—इंग्लैंड का हड्डियों का गड्ढा अध्याय 131: मोकेले-म्बेम्बे—कांगो में अफ्रीका का जीवित डायनासोर अध्याय 132: यातिमा हाउस में आग—जापान का पोल्टरजिस्ट आगजनी करने वाला अध्याय 133: एक्समूर का जानवर—ब्रिटेन का प्रेत विशालकाय अध्याय 134: बेलमेज़ के चेहरे—स्पेन का सहज चित्र आतंक अध्याय 135:

बर्कले स्क्वायर नंबर 50 का प्रेतवाधित इलाका—लंदन का हत्यारा भूत अध्याय 136: मुस्कुराते चेहरे वाले हत्यारे—अमेरिका की संगठित डूबने की साजिश अध्याय 137: स्प्रिंग हील्ड जैक—विक्टोरियन इंग्लैंड का छलांग लगाता दानव अध्याय 138: रैग्ड पॉइंट का प्रेतवाधित इलाका—कैलिफ़ोर्निया का तटीय प्रेत अध्याय 139: ग्लोज़ेल टैबलेट—फ्रांस का अनसुलझा प्राचीन रहस्य अध्याय 140: माउंट रेनियर यूएफओ मुठभेड़—वह दृश्य जिसने सब कुछ शुरू किया अध्याय 141: 1789 का महान भय—फ्रांस का सामूहिक अलौकिक आतंक अध्याय 142: सेंट एल्मो की आग नाविक—समुद्री यात्रियों का प्लाज्मा राक्षसों से सामना अध्याय 143: रेंडलेशम जंगल की पहेली—ब्रिटेन का रोसवेल अध्याय 144: यूएसएस हॉर्नेट का भूतिया अनुभव—नौसेना का भूतिया विमानवाहक पोत अध्याय 145: टाइटैनिक के भूत—अटलांटिक के मृत अध्याय 146: रोमानियाई स्ट्रिगोई—मूल पिशाच अध्याय 147: शिकागो के मॉथमैन—शहर का हालिया पंख वाला आतंक अध्याय 148: फीनिक्स लाइट्स—पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर यूएफओ दर्शन अध्याय 149: ब्लैक-आईड सुसान—मैरीलैंड का राजमार्ग पर दिखने वाला भूत अध्याय 150: होइया बासिउ का भूतिया जंगल—जहां लोग समय खो देते हैं अध्याय 151: ओक आइलैंड मनी पिट—कनाडा का शापित खजाना खोज अध्याय 152: उत्तरी यूरोप के दलदली शव—बलिदानित मृत अध्याय 153: ग्लैमिस कैसल का प्रेतवाधित होना—स्कॉटलैंड का सीलबंद कमरा रहस्य अध्याय 154: अंगिकुनी का लुप्त होता गाँव—कनाडा का भूला हुआ आतंक अध्याय 155: लॉफ्टस हॉल का प्रेतवाधित होना—आयरलैंड का नरक का द्वार अध्याय 156: फ्रेस्नो नाइट क्रॉलर्स—जीव विज्ञान को चुनौती देने वाली संस्थाएँ अध्याय 157: ग्लेनलो एबे का प्रेतवाधित होना—आयरलैंड का मध्ययुगीन आतंक अध्याय 158: तैमूर की शापित कब्र—वह चेतावनी जिसे अनदेखा

किया गया अध्याय 159: ब्लडी टॉवर का भूत—इंग्लैंड का सबसे पुराना दर्ज प्रेतवाधित होना अध्याय 160: हेसडेलन लाइट्स—नॉर्वे का अस्पष्ट प्रकाश घटनाएँ अध्याय 161: बकरे का अभिशाप—शिकागो का सबसे लंबा खेल अभिशाप अध्याय 162: ईस्टर्न एयरलाइंस के भूतिया विमानों का प्रेतवाधित होना अध्याय 163: हवाई के रात्रि जुलूसकर्ता—लावा पर चलने वाले मृत व्यक्ति अध्याय 164: बेटिसकोम्ब मनोर की चीखती खोपड़ी अध्याय 165: ग्लेन कोए का आकर्षण—स्कॉटलैंड का भूतों का युद्धक्षेत्र अध्याय 166: एल्थम पोल्टरजिस्ट—लंदन का उपनगरीय आतंक अध्याय 167: पुल पर जानवर—न्यू इंग्लैंड का असंभव जानवर अध्याय 168: ऑशविट्ज़ के भूत—दुनिया का सबसे प्रेतवाधित होलोकॉस्ट स्थल अध्याय 169: रानी का प्रेतवाधित होना मैरी—कैलिफ़ोर्निया का मृत्यु का तैरता होटल अध्याय 170: चिचेन इट्ज़ा सेनोट्स—बलिदान के पवित्र कुएँ अध्याय 171: लोच नेस मॉन्स्टर—स्कॉटलैंड का प्राचीन झील आतंक अध्याय 172: नॉरफ़ॉक द्वीप पर दंड कॉलोनी का प्रेतवाधित होना अध्याय 173: द हैंड्स रेज़िस्ट हिम नामक प्रेतवाधित चित्र अध्याय 174: चुचुन्या—साइबेरिया का टैगा का जंगली आदमी अध्याय 175: इंग्लैंड का रोता हुआ लड़का अभिशाप अध्याय 176: लरनाच कैसल का प्रेतवाधित होना—न्यूजीलैंड का टूटा हुआ दिल अध्याय 177: डोपेलगैंगर—अपनी ही मृत्यु से मिलना ओमेन
अध्याय 178: रोम के कैटाकॉम्ब्स—शाश्वत शहर के नीचे दो मिलियन मृत अध्याय 179: कैक्टिस कैसल का प्रेतवाधित होना—ब्लड काउंटेस का स्थल अध्याय 180: मनीला में बालेटे ड्राइव—फिलीपींस की सबसे प्रेतवाधित सड़क अध्याय 181: ब्रैक्सटन काउंटी का फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर
अध्याय 182: लंदन के लैंगहम होटल का प्रेतवाधित होना—बीबीसी का अपना

प्रेतवाधित होना अध्याय 183: डॉ हिल का शापित जंगल—भारत का प्रेतवाधित स्कूलहाउस अध्याय 184: ले रॉय का सामूहिक उन्माद—वे लड़कियां जो कांपना बंद नहीं कर सकीं अध्याय 185: चीखती हुई ममी—अज्ञात शाही जो पीड़ा में मर गया अध्याय 186: टेके टेके—जापान की आधी महिला शहरी किंवदंती जो सच हुई अध्याय 187: सैन ज़कारिया का भूतिया अनुभव—वेनिस का भुला दिए गए मृतकों का द्वीप अध्याय 188: कुचिसके-ओन्ना—जापान की फटी हुई मुँह वाली महिला अध्याय 189: एपिडॉरस के प्राचीन रंगमंच का भूतिया अनुभव अध्याय 190: पियासा पक्षी—मिसिसिपी का मूल अमेरिकी राक्षस अध्याय 191: गौरव का हाथ—बंद दरवाजों को खोलने वाला कटा हुआ हाथ अध्याय 192: अकर्सहस किले का भूतिया अनुभव—नॉर्वे की मध्ययुगीन भूतों की जेल अध्याय 193: साउथर फेल की प्रेत सेना—इंग्लैंड का पर्वतीय मृगतृष्णा अध्याय 194: कासा लोमा का भूतिया अनुभव—कनाडा का निराशा का गॉथिक महल अध्याय 195: वर्साय का शापित दर्पण—मृत्यु को दर्शाने वाला प्रतिबिंब अध्याय 196: भूतिया अनुभव शैटो डे फौगेरेस—ब्रिटनी का सबसे खूनी किला अध्याय 197: न्यूगेट जेल का काला कुत्ता—मौत का दूत अध्याय 198: पोएनारी किले का भूतिया साया—व्लाद द इम्पेलर का अपना किला अध्याय 199: हिममानव ओत्ज़ी का प्राचीन अभिशाप—मौत उसके खोजकर्ताओं का पीछा करती है अध्याय 200: अंतिम प्रविष्टि—पुरालेख से एक चेतावनी

प्रस्तावना: दुनिया के सबसे काले पन्ने

इस संग्रह में मानव इतिहास में दर्ज सबसे विस्तृत रूप से प्रलेखित, सबसे विचलित करने वाली और सबसे भयावह सच्ची कहानियाँ शामिल हैं। ये कहानियाँ प्राचीन काल से लेकर समकालीन काल तक, हर महाद्वीप और हर सदी को समेटे हुए हैं, और इनमें अलौकिक

घटनाओं से लेकर जघन्य आपराधिक कृत्यों और भौगोलिक एवं जैविक रूप से अस्पष्ट घटनाओं तक, हर प्रकार की भयावहता शामिल है। इन्हें मनोरंजन के लिए नहीं चुना गया है, हालाँकि इनमें से कई कहानियाँ अत्यंत प्रभावशाली हैं। इन्हें केवल एक ही मानदंड के आधार पर चुना गया है: कि ये घटित हुई थीं। कि वास्तविक लोगों ने इनका अनुभव किया था। कि इनके घटित होने के प्रमाण इतने विश्वसनीय रूप में मौजूद हैं कि इन्हें नकारना बौद्धिक बेईमानी से कहीं अधिक है।

अपने सच्चे रूप में, हॉरर कोई शैली नहीं है। यह कोई कलात्मक विधा या कथा कहने की कोई परंपरा नहीं है। यह उस दुनिया की सीमाओं का सामना करने का अनुभव है जिसे आप समझते हैं— वह क्षण जब वास्तविकता, जिस पर आप अब तक सुसंगत और बोधगम्य व्यवहार करने के लिए भरोसा करते आए हैं, ऐसा करना बंद कर देती है। इस पुस्तक की हर कहानी ऐसे ही एक क्षण को दर्शाती है। कुछ कहानियाँ मानवीय बुराई के इतने चरम रूप को दर्शाती हैं कि यह अस्थायी रूप से मनुष्य की इस सामान्य धारणा को नष्ट कर देती हैं कि मनुष्य मूल रूप से अपने और दूसरों के अस्तित्व के प्रति उन्मुख होते हैं। कुछ कहानियाँ प्राकृतिक या ब्रह्मांडीय विचित्रता के इतने गहरे क्षण हैं कि उन्हें वैज्ञानिक ज्ञान की मौजूदा संरचना में समाहित नहीं किया जा सकता। कुछ कहानियाँ ऐसी उपस्थिति, शक्तियों या सत्ताओं से मुठभेड़ हैं जो ज्ञात जीवन के किसी भी वर्गीकरण में फिट नहीं बैठतीं और वर्तमान मानवीय समझ द्वारा प्रदान किए गए किसी भी तंत्र द्वारा स्पष्ट नहीं की जा सकतीं।

इस पुस्तक को उन लोगों के प्रति सम्मान के साथ पढ़ें जिनकी पीड़ाएँ इसकी मूल सामग्री हैं। इन पन्नों में वर्णित कई लोग दर्दनाक मौत मरे, या अपने अनुभवों से टूट गए, या अपना शेष जीवन उन घटनाओं की छाया में बिताया जिन्हें न तो समझा जा सकता था, न ही

उनकी व्याख्या की जा सकती थी, और न ही उन्हें भुलाया जा सकता था। उनकी कहानियाँ सुनाए जाने योग्य हैं। उन्हें सुना जाना चाहिए। और दुनिया की सबसे भयावह वास्तविकताओं से जुड़े दो सौ दस्तावेजी अनुभवों के संचित भार से आप जो भी निष्कर्ष निकालें, कम से कम आपको एक ऐसे पाठक के रूप में ईमानदारी से पढ़ना चाहिए जो जो कुछ भी पढ़े उससे विचलित होने के लिए तैयार हो— क्योंकि इन वृत्तांतों से विचलित होना ही वास्तव में उनके प्रति उस सटीकता के साथ प्रतिक्रिया देना है जिसकी वे मांग करते हैं।

अध्याय 1

एमिटीविल का खौफ—वह घर जो मौत के खून से लथपथ था

13 नवंबर, 1974 की ठंडी सुबह, न्यूयॉर्क के शांत उपनगरीय इलाके एमिटीविले में एक ऐसा घिनौना अपराध हुआ जिसने शहर की पहचान पर हमेशा के लिए दाग लगा दिया। 23 वर्षीय रोनाल्ड डीफियो जूनियर, जो एक ऐसे अंधकार में डूबा हुआ था जिसे न तो जांचकर्ता और न ही मनोचिकित्सक पूरी तरह से समझा सके, भोर से पहले तड़के 112 ओशन एवेन्यू के गलियारों में घूम रहा था। .35 मार्लिन लीवर-एक्शन राइफल से लैस होकर, वह एक कमरे से दूसरे कमरे में व्यवस्थित और निर्मम शांति से गया और अपने पिता रोनाल्ड डीफियो सीनियर, अपनी माँ लुईस, अपने दो भाइयों मार्क और जॉन, और अपनी दो बहनों डॉन और एलिसन की हत्या कर दी। प्रत्येक पीड़ित अपने बिस्तर पर औंधा पड़ा मिला, मानो उनकी नींद में ही मृत्यु हो गई हो। इस तथ्य ने अधिकारियों को बहुत परेशान कर दिया क्योंकि विष विज्ञान रिपोर्टों में किसी के भी शरीर में कोई शामक दवा नहीं पाई गई। छह लोग। छह हत्याएं। किसी भी पड़ोसी ने गोली चलने की आवाज

नहीं सुनी, जबकि हथियार की आवाज इतनी तेज थी कि मुर्दों को भी जगा सकती थी। इस मामले में चुप्पी ही सबसे लंबे समय तक अनसुलझे रहस्यों में से एक बन गई। डीफियो परिवार समृद्ध था, लेकिन गहरी परेशानियों से घिरा हुआ था। रोनाल्ड सीनियर एक दबंग व्यक्ति थे जो अपने हिंसक स्वभाव के लिए जाने जाते थे, और घर का माहौल लंबे समय से परिचितों द्वारा दमनकारी और दुखी बताया जाता था। पड़ोसियों को याद था कि बच्चे अपने आंगन में दबे पांव, घबराहट भरी ऊर्जा के साथ घूमते थे, मानो हमेशा किसी झटके के लिए तैयार हों। रोनाल्ड जूनियर, जिसका उपनाम बुच था, का नशीली दवाओं के सेवन और छोटे-मोटे अपराधों का इतिहास था, और बाद में खुद के कबूलनामे के अनुसार, उसने दावा किया कि उसे एक आवाज सुनाई देती थी - एक गहरी, आदेश देने वाली, अमानवीय आवाज - जो उसे बताती थी कि उसका परिवार उसे मारने की योजना बना रहा है और उसे पहले कार्रवाई करनी होगी। यह एक वास्तविक मनोविकृति थी, पागलपन के बचाव का समर्थन करने के लिए गढ़ी गई कहानी थी, या कुछ और भी भयावह था, इस पर दशकों तक बहस चलती रही। डीफियो को छह हत्याओं के आरोप में दोषी ठहराया गया और पच्चीस साल से आजीवन कारावास की छह लगातार सजाएं सुनाई गईं। मार्च 2021 में जेल में उसकी मृत्यु हो गई, और वह कभी भी पूरी तरह से यह नहीं समझा पाया कि उसके परिवार के किसी भी सदस्य ने चीख क्यों नहीं मारी।

हत्याओं के तेरह महीने बाद, जॉर्ज और कैथी लुट्ज़ ने उस घर को कम कीमत पर खरीद लिया। वे घर के हिंसक इतिहास से भली-भांति परिचित थे, लेकिन उस विशाल औपनिवेशिक शैली की इमारत से आकर्षित थे, जिसकी ऊपरी मंजिलों से झांकती विशिष्ट अर्धचंद्राकार खिड़कियां आंखों की तरह दिखती थीं। उस घर में बिताए अट्ठाईस

दिनों के दौरान जो कुछ हुआ, वह अमेरिकी इतिहास में सबसे अधिक दस्तावेजित और सबसे विवादित भूतिया वृत्तांत बन गया। जॉर्ज लुट्ज़ का दावा था कि वह हर रात ठीक 3:15 बजे जाग जाते थे, जो हत्याओं का अनुमानित समय था, और एक अकथनीय आवेग उन्हें नावघर की जाँच करने के लिए प्रेरित करता था। वे दिन-रात चिड़चिड़े होते गए, नहाना बंद कर दिया, समय का ध्यान रखना भूल गए, और एक अजीब सी बेचैनी से घर को गर्म करने वाली चिमनी को जलाने लगे। कैथी ने बताया कि वह अपने बिस्तर के ऊपर हवा में तैरती हुई महसूस करती थीं, दिसंबर के मध्य में सिलाई कक्ष में मक्खियों के झुंड देखती थीं, जबकि वहां कोई मक्खी नहीं होनी चाहिए थी, और जब वह जागती थीं तो बाथरूम के दर्पण में उनका चेहरा एक झुर्रीदार, बूढ़ी औरत के चेहरे में बदल जाता था। उनकी बेटी मिस्सी ने एक काल्पनिक दोस्त बना लिया जिसे वह जोडी कहती थी—एक ऐसी आकृति जिसे वह दूसरी मंजिल पर अपने बेडरूम की खिड़की के बाहर खड़ी एक शैतानी सूअर बताती थी जिसकी आँखें लाल चमकती थीं। एक बार, जॉर्ज का दावा है कि उसने बाहर अंधेरे में चमकती लाल आँखों पर शॉटगन से गोली चलाई और एक चीख सुनी, हालाँकि वहाँ न तो कोई चोट का निशान मिला और न ही कोई जानवर। बाद में संपत्ति की जाँच करने वाले जाँचकर्ताओं ने तहखाने में एक नकली दीवार के पीछे एक छिपा हुआ कमरा पाया, जो पूरी तरह से लाल रंग से रंगा हुआ था, और यह जगह किसी भी वास्तुशिल्प योजना में नहीं दिखाई देती थी। घर को आशीर्वाद देने आए पारिवारिक पुजारी ने दावा किया कि एक निराकार पुरुष आवाज ने उन्हें 'बाहर निकलो!' का आदेश दिया और बाद में उनके हाथों में छाले पड़ गए जिनका डॉक्टरों को कोई चिकित्सीय कारण नहीं मिला। लुत्ज़ परिवार 14 जनवरी, 1976 को अपना सारा सामान छोड़कर घर से भाग गया। वे फिर कभी वापस नहीं लौटे।

बाद में रहने वाले लोगों और स्वतंत्र जांचकर्ताओं ने एमिटीविले मामले के बारे में पूरी तरह से विरोधाभासी बयान दिए हैं। संदेह करने वालों में, जिनमें डीफियो का बचाव करने वाले वकील विलियम वेबर भी शामिल थे, ने बाद में दावा किया कि पूरी भूतिया कहानी लुट्ज़ परिवार के साथ शराब के नशे में मिलकर पैसे कमाने की योजना के तहत गढ़ी गई थी। परिवार ने इस बात से पूरी तरह इनकार किया। पैरानॉर्मल जांचकर्ता एड और लॉरेन वॉरेन ने उस संपत्ति का दौरा किया और वहां से बेहद भयभीत होकर लौटे, उन्होंने इसे अब तक के सबसे भयावह स्थानों में से एक बताया। उनकी जांच के दौरान ली गई एक तस्वीर में कथित तौर पर एक छोटे लड़के की चमकती आंखों से दरवाजे के पीछे झांकने की छवि दिखाई गई थी - जबकि वह लड़का फोटोग्राफी के दौरान वहां मौजूद नहीं था। चाहे 112 ओशन एवेन्यू अलौकिक बुराई का अड्डा था, किसी परिवार के मनोवैज्ञानिक आघात का परिणाम था, या जानबूझकर गढ़ी गई मिथक का परिणाम था, यह घर दुनिया भर के जिज्ञासु लोगों को आकर्षित करता रहता है। वर्तमान मालिकों ने, जिन्होंने आगंतुकों को हतोत्साहित करने के लिए इमारत के बाहरी हिस्से में बदलाव किया है, कथित तौर पर कभी भी कुछ भी असामान्य अनुभव नहीं किया है। लेकिन शायद उस घर में जो भी चीज मौजूद थी, वह हमेशा दीवारों या लकड़ी से नहीं, बल्कि उस खून से जुड़ी हुई थी जो बहुत पहले वहां बहाया गया था।

अध्याय दो

लंदन टावर—सदियों का खून और चीखते भूत

टेम्स नदी के उत्तरी किनारे से किसी भयानक सपने से जन्मी पत्थर की किलेबंदी की तरह उभरती हुई, लंदन की मीनार लगभग एक हजार वर्षों से पूरे ब्रिटेन और संभवतः

दुनिया की सबसे प्रेतवाधित इमारत के रूप में खड़ी है। विलियम द कॉन्कर्रर ने 1078 में इसका निर्माण शुरू किया था, और उसके बाद की शताब्दियों में, यह मीनार एक शाही महल, एक खजाना, एक शस्त्रागार, एक चिड़ियाघर, एक टकसाल और - सबसे कुख्यात रूप से - एक जेल और एक फांसी स्थल के रूप में इस्तेमाल होती रही। इसकी दीवारों के भीतर एक सौ बारह से अधिक लोगों को आधिकारिक तौर पर फांसी दी गई, और अनगिनत अन्य लोग इसकी नम और अंधेरी कोठरियों में उपेक्षा, यातना और निराशा से मर गए। ऐसा लगता है कि पत्थर स्वयं एक ऐसी पीड़ा से सराबोर है जो सामान्य इतिहास से परे है, और रात में इसकी रखवाली करने वाले पहरेदार - जिन्हें योमन वार्डर्स या बीफीटर्स के नाम से जाना जाता है - ने पीढ़ियों से चले आ रहे व्यक्तिगत अलौकिक अनुभवों का एक ऐसा संग्रह जमा किया है जिसे कोई भी संशयवादी दृष्टिकोण पूरी तरह से खारिज नहीं कर पाया है।

सबसे अधिक बार दिखाई देने वाले प्रेतों में से एक हेनरी अष्टम की दूसरी पत्नी ऐनी बोलेन का भूत है, जिन्हें 19 मई, 1536 को टॉवर ग्रीन पर व्यभिचार, अनाचार और राजद्रोह के आरोपों में सिर कलम कर दिया गया था। आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि ये आरोप दरबार में उनके शत्रुओं द्वारा रची गई मनगढ़ंत कहानियाँ थीं। सदियों से प्रत्यक्षदर्शियों ने टॉवर के गलियारों में ट्यूडर पोशाक पहने एक महिला को बिना सिर के चलते हुए देखा है, जिसका कटा हुआ सिर उसकी बगल में दबा हुआ था। 1864 में, क्वीन हाउस के पास पहरा दे रहे एक सैनिक ने बताया कि उस पर एक सफेद, बिना सिर वाली आकृति ने हमला किया और उसने अपनी संगीन से उस पर वार किया, जो बिना किसी प्रतिरोध के उस आकृति के आर-पार हो गई। वह बेहोश हो गया और बाद में उसका कोर्ट-मार्शल किया गया, हालांकि घटना के दो अन्य प्रत्यक्षदर्शियों ने उसकी गवाही की

पुष्टि की और अंततः उसे बरी कर दिया गया। खबरों के अनुसार, ऐनी बोलेन की प्रेतवाधित आकृति को उनके बचपन के घर हेवर कैसल और नॉरफ़ॉक के ब्लिकलिंग हॉल में उनकी फांसी की सालगिरह पर हर साल सिर कटे घोड़ों द्वारा खींची गई एक प्रेतवाहन में आते हुए देखा गया है।

दो युवा राजकुमार— एडवर्ड पंचम और रिचर्ड, ड्यूक ऑफ यॉर्क— शायद टावर के भूतिया निवासियों में सबसे दुखद हैं। 1483 में उनके चाचा रिचर्ड, ड्यूक ऑफ ग्लॉसेस्टर, जिन्होंने रिचर्ड तृतीय के रूप में सिंहासन संभाला, ने उन्हें टावर में कैद कर दिया था। ये लड़के इतिहास के रिकॉर्ड से गायब हो गए और फिर कभी नहीं देखे गए। 1674 में, एक सीढ़ी तोड़ रहे मजदूरों ने पत्थरों के नीचे दबे दो बच्चों के कंकाल खोजे, और ये अवशेष, जिन्हें व्यापक रूप से राजकुमारों के माना जाता है, वेस्टमिंस्टर एबे में दफना दिए गए। ब्लडी टावर में सफेद नाइटगाउन पहने दो छोटे लड़कों की धुंधली आकृतियाँ देखी गई हैं, जो हाथ पकड़े हुए और असीम उदासी के भाव से बाहर की ओर देखते हुए पत्थर की दीवारों में विलीन हो जाते हैं। इन आकृतियों को देखने वाले गार्ड एक गहरे दुख का वर्णन करते हैं, एक ऐसा गहरा शोक जो बड़े-बड़े आदमियों को बिना किसी तर्कसंगत कारण के रुला देता है।

आधिकारिक रिकॉर्ड में दर्ज टॉवर की सबसे हालिया सत्यापित अलौकिक घटना 1997 की है, जब एक वरिष्ठ योमन वार्डर ने मार्टिन टॉवर में एक ऐसी शक्ति का सामना करने की सूचना दी, जिसने उन्हें शारीरिक रूप से दीवार से दबा दिया और कुछ सेकंड तक वहीं रोके रखा, फिर छोड़ दिया। वे कल्पनाओं में खोए रहने वाले व्यक्ति नहीं थे— अपनी नियुक्ति से पहले उन्होंने दशकों तक ब्रिटिश सेना में सेवा की थी— और टॉवर के निवासी गवर्नर के पास दर्ज उनके लिखित विवरण में उस अनुभूति का वर्णन इस प्रकार

किया गया है कि जैसे किसी बड़े, अदृश्य हाथ ने उन्हें जानबूझकर और तिरस्कारपूर्ण सहजता से दबा दिया हो। टॉवर के कौवे, वे प्रसिद्ध काले पक्षी जिनकी निरंतर उपस्थिति के बारे में किंवदंती है कि यह सुनिश्चित करती है कि राज्य का पतन नहीं होगा, कई बार सुबह बिना किसी स्पष्टीकरण के मृत पाए गए हैं, और ऐसी प्रत्येक खोज से पहले की रात को, वार्डरों ने स्वतंत्र रूप से पक्षियों को अत्यधिक बेचैनी से व्यवहार करते हुए, घोंसले में बैठने से इनकार करते हुए और अंधेरे में बार-बार चिल्लाते हुए देखा है। चाहे ये मौतें संयोग हों, पक्षियों की सामान्य मृत्यु दर हों, या कुछ और भयावह हो जिसे केवल कौवे ही महसूस कर सकते हैं, टावर के सबसे पुराने रास्तों में अकेले रात बिताने वाला कोई भी व्यक्ति इस अनुभव से पूरी तरह अछूता नहीं रहा है।

अध्याय 3

डायटलोव दर्रे की घटना—नौ पर्वतारोही, एक भयानक रात

1 फरवरी 1959 को, नौ अनुभवी सोवियत पर्वतारोहियों की मृत्यु इतनी विचित्र और रहस्यमय परिस्थितियों में हुई कि यह मामला दशकों तक सोवियत अधिकारियों द्वारा गुप्त रखा गया और आज भी जांचकर्ताओं, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए एक पहेली बना हुआ है। तेईस वर्षीय इगोर डायटलोव के नेतृत्व में, यह समूह उरल पॉलिटेक्निक संस्थान के छात्र और स्नातक थे, जो अब रूस कहलाने वाले उत्तरी उरल क्षेत्र में स्थित ओटोर्तेन पर्वत की यात्रा पर निकले थे। सभी नौ अनुभवी पर्वतारोही थे—ठीक वैसे लोग जो जंगल में लापरवाही भरी, घातक गलतियाँ नहीं करते। वे साइबेरियाई सर्दियों की भीषण ठंड के लिए पूरी तरह से तैयार थे। वे इलाके से अच्छी तरह वाकिफ थे। उन्होंने पहले भी साथ में शिविर लगाए थे। फिर भी, खोलात स्याखल पर्वत की ढलान

पर—जिसका नाम स्थानीय मानसी भाषा में 'मृत पर्वत' है—कुछ ऐसा घटित हुआ कि उन्हें आधी रात को, कड़ाके की ठंड में, बिना जूतों, बिना कोट के और बिना किसी बाहरी खतरे के, अपने तंबू से भागना पड़ा।

बचाव दल ने शिविर को नौ दिन बाद खोजा, जब समूह ने सूचना देने से इनकार कर दिया था। उन्होंने जो दृश्य बताया, वह तर्कसंगत नहीं था। तंबू अंदर से कटा हुआ था, जिससे पता चलता है कि पर्वतारोहियों ने प्रवेश द्वार का उपयोग करने के बजाय हताशा और घबराहट में भागने की कोशिश में कपड़े को चीर दिया था। बर्फ में बने पदचिह्न— शांत, संयमित पदचिह्न— तंबू से दूर जंगल की ओर जा रहे थे, जिससे संकेत मिलता है कि समूह भागा नहीं था, बल्कि किसी स्तब्ध या नियंत्रित अवस्था में चल रहा था। पहले दो शव, यूरी डोरोशेंको और यूरी क्रिवोनिशचेंको, वृक्ष रेखा के पास एक छोटी सी आग के अवशेषों के पास मिले, वे केवल अंतर्वस्त्र में थे। दोनों एक चीड़ के पेड़ पर चढ़े थे; शाखाएँ लगभग पाँच मीटर की ऊँचाई पर टूटी हुई थीं, जिससे पता चलता है कि उन्होंने तने को असाधारण बल से पकड़ा था। इगोर डायटलोव सहित तीन और शव शिविर स्थल और वृक्ष रेखा के बीच मिले, जो स्पष्ट रूप से तंबू में लौटने का प्रयास कर रहे थे। बाकी बचे चार पर्वतारोहियों का पता मई तक नहीं चला, जब बर्फ पिघली और वे देवदार के पेड़ से लगभग पचहत्तर मीटर दूर एक खाई में मिले। ये चारों मौतें सबसे भयावह थीं। ल्यूडमिला डुबिनिना की जीभ, आंखें, होंठ और चेहरे का कुछ हिस्सा गायब था। सेम्योन ज़ोलोटार्योव की आंखें और भौहें नहीं थीं। फॉरेंसिक पैथोलॉजिस्ट ने पाया कि डुबिनिना और ज़ोलोटार्योव को छाती में अंदरूनी चोटें आई थीं— पसलियां टूटी हुई थीं और रक्तस्राव हुआ था— जो किसी कार दुर्घटना के बराबर बल से कुचले जाने के अनुरूप थीं, फिर भी त्वचा पर कोई खास बाहरी चोट के निशान नहीं थे। पैथोलॉजिस्ट हैरान थे

और उन्होंने चोटों की तुलना तेज रफ्तार वाहन दुर्घटनाओं में लगी चोटों से की, जहां कोई व्यक्ति स्टीयरिंग व्हील से टकरा जाता है, लेकिन शवों के आसपास ऐसी कोई बाहरी वस्तु नहीं मिली जो इतना बल उत्पन्न कर सके। कपड़ों की कई वस्तुओं पर रेडियोधर्मिता के निशान पाए गए। जांच करने वाले डॉक्टर ने कुछ पर्वतारोहियों की आंखों को असामान्य रूप से चौड़ा बताया, मानो वे अत्यधिक, निरंतर भय में मर गए हों। इस घटना के बाद से बीते छह दशकों में कई तरह के सिद्धांत सामने आए हैं। सोवियत जांचकर्ताओं का आधिकारिक निष्कर्ष - एक 'मजबूत प्राकृतिक शक्ति' - इतना अस्पष्ट था कि उसका कोई अर्थ ही नहीं रह गया। बाद के सिद्धांतों में कई बातें सामने आईं, जैसे कि भयंकर हवाएं जो दहशत पैदा करने वाली इन्फ्रासाउंड ध्वनि उत्पन्न कर सकती थीं, हिमस्खलन जिसके कारण लोग भागने लगे लेकिन हिमस्खलन का कोई भौतिक प्रमाण नहीं मिला, क्षेत्र में सैन्य हथियारों का परीक्षण, सोवियत गुलाग प्रणाली से भागे कैदियों से मुठभेड़, स्थानीय मानसी लोगों के हमले, यूएफओ और विज्ञान द्वारा अभी तक दर्ज न की गई किसी पूरी तरह से अज्ञात प्राकृतिक घटना का हस्तक्षेप। 2019 में रूस द्वारा की गई एक पुन: जांच में यह निष्कर्ष निकाला गया कि हिमस्खलन ही इसके लिए सबसे अधिक जिम्मेदार था, लेकिन इस निष्कर्ष के आलोचकों का कहना है कि शवों पर बर्फ के दबाव से लगी चोटों के कोई निशान नहीं थे, ढलान की स्थलाकृति इतनी खड़ी नहीं थी कि कोई बड़ा हिमस्खलन हो सके, और उस रात क्षेत्र में किसी अन्य शिविर में रहने वाले व्यक्ति ने हिमस्खलन की कोई गतिविधि नहीं देखी। इस ढलान का मानसी नाम—मृत पर्वत—1959 से बहुत पहले से प्रचलित था। स्थानीय आदिवासी वहाँ डेरा डालने से इनकार करते थे और पीढ़ियों से इस निषेध को कायम रखे हुए थे। उन्होंने सोवियत जांचकर्ताओं को बस इतना बताया था कि यह पर्वत 'बुरा' है। पैंसठ साल बाद भी, कोई भी सिद्धांत

वहाँ मिली हर बात की पूरी तरह व्याख्या नहीं कर पाया है। डायटलोव समूह के नौ सदस्य येकातेरिनबर्ग के मिखाइलोव कब्रिस्तान में दफन हैं। उनकी समाधि पर लगी तस्वीरों में नौ युवा, मुस्कुराते चेहरे दिखाई देते हैं, जो उस बर्फीली ढलान पर उनका इंतजार कर रहे अकल्पनीय भयावहता से पूरी तरह अनजान थे।

अध्याय 4

गुड़ियों का द्वीप—मेक्सिको का सबसे भयानक स्थान

मेक्सिको सिटी के दक्षिण में स्थित ज़ोचिमिल्को नहरों के घने जंगल में, जहाँ जलकुंभी से भरी संकरी ट्रैजिनेरा नाव से ही पहुँचा जा सकता है, लगभग एक हेक्टेयर का एक द्वीप है जिसे पश्चिमी गोलार्ध का सबसे भयावह स्थान माना जाता है। ला इस्ला दे लास मुनेकास —गुड़ियों का द्वीप—हज़ारों गुड़ियों से भरा पड़ा है: बच्चों की गुड़िया, प्लास्टिक की फैशन गुड़िया, कपड़े से बनी भरवां गुड़िया, चीनी मिट्टी के चेहरे वाली प्राचीन गुड़िया, प्लास्टिक के खिलौने और हर तरह की गुड़िया, जो पेड़ों, बाड़ों और इमारतों से लटकी हुई हैं और अलग-अलग अवस्थाओं में सड़ रही हैं। उनके अंग कटे हुए हैं। उनकी आँखें गायब हैं। उनके चेहरे फटे हुए हैं, दशकों से खुले में रहने के कारण बदरंग हो गए हैं और काई और मकड़ी के जालों से ढके हुए हैं। कुछ गुड़ियों के खोखले शरीर के अंदर साँप कुंडली मारे हुए हैं। उष्णकटिबंधीय आर्द्रता में, वे इस तरह से सड़ते हैं कि आगंतुकों को यह आंतरिक रूप से, गहराई से गलत लगता है - मानो वे फेंके हुए खिलौनों की तरह कम और किसी ऐसी चीज के अवशेषों की तरह अधिक हों जो कभी जीवित थी।

इस द्वीप की कहानी डॉन जूलियन सैंटाना बैरेरा से शुरू होती है, जो बीसवीं शताब्दी के मध्य में द्वीप पर रहने आए एक एकांतप्रिय व्यक्ति थे। कहा जाता है कि उन्होंने अपनी पत्नी और परिवार को छोड़कर नहरों में एकांतवास करने का फैसला किया था। उन्होंने जिन कुछ स्थानीय लोगों से संपर्क बनाए रखा, उनसे बातचीत में उन्होंने बताया कि द्वीप पर पहुँचने के कुछ ही समय बाद उन्हें अपनी पारंपरिक तैरती हुई कृषि भूमि (चिनम्पास) के पास नहर में डूबी एक युवती का शव मिला। वे उसे बचा नहीं सके। उसकी मृत्यु के कुछ समय बाद ही उन्हें कुछ आवाज़ें सुनाई देने लगीं: एक लड़की की रोने की आवाज़; रात में उनकी झोपड़ी के आसपास छोटे-छोटे कदमों की आहट; बिना किसी के मौजूद हुए वस्तुओं का अपने आप हिलना। उन्हें विश्वास हो गया कि लड़की की आत्मा द्वीप पर फंसी हुई है और वह या तो बेचैन है या दुष्ट आत्मा है—वे निश्चित नहीं थे कि कौन सी—इसलिए उन्होंने उसे शांत करने के लिए गुड़िया लटकाना शुरू कर दिया। पचास वर्षों के दौरान उन्होंने हजारों गुड़ियां जमा कीं, अपने बगीचे की सब्जियों के बदले गुड़ियां खरीदीं, कूड़े के ढेरों और नहरों से उन्हें निकाला, और एक अदृश्य शक्ति को प्रसन्न करने की परियोजना के लिए अपने जागने का हर घंटा समर्पित कर दिया।
द्वीप की यात्रा करने वाले पर्यटक लगातार एक बेहद परेशान करने वाले व्यक्तिगत अनुभव की रिपोर्ट करते हैं, जो जीर्ण-शीर्ण गुड़ियों के वस्तुनिष्ठ रूप से भयावह दृश्य से कहीं अधिक गहरा होता है। कई पर्यटक लगातार यह महसूस करते हैं कि कोई उन्हें देख रहा है, मानो कई अदृश्य आँखें द्वीप पर उनकी हर गतिविधि पर नज़र रख रही हों। टूर गाइड बताते हैं कि कुछ गुड़ियां हर बार आने पर हिलती हुई प्रतीत होती हैं—नाटकीय रूप से नहीं, बल्कि सूक्ष्म रूप से, उनकी स्थिति या उनकी दृष्टि के कोण में बदलाव होता है, जिसे हमेशा हवा या उस संरचना के हिलने-डुलने से नहीं जोड़ा जा

सकता जिस पर वे लटकी हुई हैं। कभी-कभी पर्यटक बिना किसी स्पष्ट कारण के बेचैन हो जाते हैं और द्वीप छोड़ने की विनती करते हैं। द्वीप पर ली गई तस्वीरों में अक्सर अप्रत्याशित विसंगतियाँ दिखाई देती हैं: खिड़कियों में ऐसे चेहरे जहाँ कोई चेहरा नहीं होना चाहिए, पेड़ों के बीच धुंधली मानव आकृतियाँ, प्रकाश की ऐसी त्रुटियाँ जो किसी ज्ञात फोटोग्राफिक घटना से मेल नहीं खातीं। कई पर्यटकों ने द्वीप पर कहीं से बच्चे के हंसने की आवाज़ सुनने की सूचना दी है, जबकि वहाँ कोई बच्चा मौजूद नहीं था।
डॉन जूलियन सैंटाना बैरेरा 17 अप्रैल, 2001 को अपनी नहर में मृत पाए गए। उनकी मृत्यु उसी जलधारा में हुई जहाँ, उनके स्वयं के कथनानुसार, उन्होंने पाँच दशक पहले उस छोटी बच्ची का शव पाया था। उनके परिवार और स्थानीय ज़ोचिमिल्को समुदाय ने इस संयोग को अत्यंत महत्वपूर्ण माना, हालाँकि आधिकारिक तौर पर इसे आकस्मिक डूबने की घटना बताया गया। उनके भतीजे अनास्तासियो सैंटाना को यह द्वीप विरासत में मिला और वे आज भी इसकी देखभाल करते हैं। वे हर साल यहाँ आने वाले हजारों पर्यटकों द्वारा दान की गई गुड़िया भी यहाँ रखते हैं, जो अब एक प्रकार का आध्यात्मिक तीर्थस्थल बन गया है। यह द्वीप स्थानीय ट्रैजिनेरा (छोटी नाव) संचालकों के लिए अच्छी आय का स्रोत है। अनास्तासियो ने कई बार कहा है कि उनका मानना है कि गुड़िया जीवित हैं, उनमें मृतकों की आत्माएं निवास करती हैं, और कुछ रातों में वे उन्हें अंधेरे में आपस में फुसफुसाते हुए सुन सकते हैं। उन्हें यह डरावना नहीं लगता। वे जीवन भर उनके साथ रहे हैं। लेकिन उन्होंने शांत और पूर्ण विश्वास के साथ यह भी कहा है कि द्वीप के कुछ हिस्से ऐसे हैं जहां वे अंधेरा होने के बाद प्रवेश नहीं करते हैं - ऐसी जगहें जहां यहां पले-बढ़े होने के बावजूद भी उन्हें जाने में सुरक्षित महसूस नहीं होता है।

अध्याय 5

काली आंखों वाले बच्चे—पागलपन में समाप्त होने वाली मुठभेड़ें

उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया से तीन दशकों में एकत्रित किए गए वृत्तांतों के आधार पर एक ऐसी घटना उभर कर सामने आई है जो शहरी किंवदंती और वास्तविक मानवीय अनुभव के बीच एक विचित्र और विचलित करने वाली स्थिति में है: ऐसे बच्चों का प्रकट होना जिनकी आँखें पूरी तरह से और एकसमान रूप से काली हैं, जिनमें पुतली या सफेद सफेदी नहीं है, बल्कि उनकी आँखों में एक भावहीन, प्रकाशहीन, खालीपन भरी निगाह है। इन प्राणियों का—यदि वे प्राणी हैं या कुछ और—लगातार वर्णन किया जाता है कि वे लगभग छह से सोलह वर्ष की आयु के बीच दिखाई देते हैं, अक्सर रात में प्रकट होते हैं, और एक ही विशिष्ट व्यवहार में संलग्न होते हैं: प्रवेश की गुहार लगाना। वे दरवाज़े खटखटाते हैं। वे कारों की खिड़कियों पर थपथपाते हैं। वे कार पार्किंग और सुनसान सड़कों पर लोगों के पास जाते हैं। और वे अलग-अलग स्तर की बेचैनी के साथ, जो उन्हें जितनी देर तक प्रवेश नहीं दिया जाता, उतनी ही बढ़ती जाती है, अंदर आने की अनुमति मांगते हैं। उनकी गुहार हमेशा तर्कसंगत होती है। उन्हें फोन का इस्तेमाल करना है। वे रास्ता भटक गए हैं। उन्हें ठंड लग रही है। उन्हें लिफ्ट चाहिए। बहाना बदलता रहता है, लेकिन मूल विनती एक ही रहती है: हमें अंदर आने दो।

इस घटना का पहला व्यापक रूप से प्रचारित विवरण पत्रकार ब्रायन बेथेल से जुड़ा है, जिन्होंने 1996 में टेक्सास के एबिलीन में हुई एक घटना का वर्णन किया था। बेथेल एक सिनेमाघर की पार्किंग में अपनी कार में बैठे थे, तभी लगभग दस से बारह वर्ष की आयु

के दो लड़के उनके पास आए और उनकी खिड़की पर दस्तक दी। उन्होंने कहा कि वे अपने घर जाना चाहते हैं और दावा किया कि वे अपने पैसे घर पर भूल गए हैं और फिल्म शुरू होने से पहले उन्हें लेने वापस जाना होगा। बेथेल बताते हैं कि उन्हें एक अत्यधिक, अतार्किक, लकवाग्रस्त कर देने वाला भय महसूस हुआ—एक अच्छी रोशनी वाली पार्किंग में खड़े दो बच्चों की स्थिति के अनुपात से कहीं अधिक—और यह भय तब और भी तीव्र हो गया जब उन्होंने अंततः देखा कि लड़कों की आँखें पूरी तरह से काली थीं। वे यह भी बताते हैं कि उन्हें कार का दरवाजा खोलने की एक अनियंत्रित, लगभग अप्रतिरोध्य इच्छा हुई, मानो बाहर से उनकी इच्छाशक्ति को बाधित किया जा रहा हो। उन्होंने दरवाजा नहीं खोला। वे गाड़ी चलाकर चले गए। उनके रियर-व्यू मिरर में, बच्चे गायब हो चुके थे।

2020 के दशक की शुरुआत तक सैकड़ों की संख्या में जमा हुए इन वृत्तांतों में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि पूरी तरह से असंबंधित गवाहों के बयानों में एकरूपता है, जबकि वे एक-दूसरे की रिपोर्टों से अनभिज्ञ भी नहीं हो सकते थे। पूरी तरह से काली आँखों का विशिष्ट और सर्वसम्मत विवरण सबसे स्पष्ट समानता का बिंदु है, लेकिन गवाहों पर पड़ने वाले भावनात्मक प्रभाव का वर्णन भी लगभग उतना ही सुसंगत है: यह केवल भय नहीं था, बल्कि एक विशिष्ट, प्रबल, लगभग अलौकिक भय था जिसे अलग-अलग तरह से 'गलत होने' के रूप में, प्राकृतिक दुनिया के साथ मौलिक रूप से असंगत किसी चीज़ का सामना करने की अनुभूति के रूप में, और किसी पशुवत स्तर पर इस निश्चितता के रूप में वर्णित किया गया है कि कोई शिकार की उपस्थिति में है। कई गवाहों ने इस अनुभूति को सम्मोहन के शिकार लोगों द्वारा बताई गई अनुभूति के समान बताया है - एक ऐसी अनुभूति कि उनके अपने निर्णय लेने में हस्तक्षेप किया जा रहा था,

कि उनके दिमाग का कोई हिस्सा बहुत हद तक आज्ञा का पालन करना चाहता था, और केवल एक हताश, तीव्र, अस्तित्व-स्तर का प्रतिरोध ही उन्हें ऐसा करने से रोक रहा था। जो लोग बच्चों को अपने घर में आने की अनुमति देते हैं, उनके साथ क्या होता है, इसके विवरण दुर्लभ हैं, लेकिन अगर उन पर पूरी तरह विश्वास किया जाए, तो वे कहीं अधिक भयावह हैं। रिकॉर्ड में दर्ज कुछ गवाहियाँ—जिनमें से कोई भी औपचारिक रूप से सत्यापित नहीं है, लेकिन कई विस्तृत और आपस में सुसंगत हैं—का वर्णन करती हैं कि काली आँखों वाले बच्चों को घर में आने देने के बाद, उन्हें याददाश्त में भ्रम और बिखराव का सामना करना पड़ा, और उसके बाद घटनाओं का एक बिगड़ता क्रम सामने आया: लगातार बीमारी, आर्थिक बर्बादी, रिश्तों का टूटना, जागते हुए बुरे सपने, और कम से कम तीन मामलों में, उस घटना के कुछ महीनों के भीतर परिवार के सदस्यों की मृत्यु। क्या ये परिणाम किसी वास्तविक अलौकिक खतरे की पुष्टि करते हैं, किसी दर्दनाक और अकथनीय अनुभव के मनोवैज्ञानिक परिणाम हैं, या किसी विक्षिप्त व्यक्ति की मनगढ़ंत कहानी है जिसने पहले से मौजूद दुर्भाग्य को समझाने के लिए किसी प्रचलित मिथक का सहारा लिया है, यह निश्चित रूप से निर्धारित करना असंभव है। जो निश्चित है वह यह है कि यह घटना कम होने का कोई संकेत नहीं दिखा रही है। हर साल नए स्थानों से, इस अवधारणा के बारे में पहले से कोई जानकारी न रखने वाले नए गवाहों से रिपोर्टें सामने आती हैं, जिनमें उन्हीं शांत, पीले बच्चों का वर्णन होता है जिनकी आँखें वैसी ही बेजान होती हैं, और वे वही निरंतर, धैर्यपूर्वक, कोमल और भयावह विनती करते हैं।

अध्याय 6

पोवेगलिया द्वीप—इटली का शापितों का द्वीप

वेनिस लैगून के दक्षिणी भाग में, वेनिस के व्यस्त पर्यटक जलमार्गों से अलग, धूसर पानी के एक छोटे लेकिन विशाल विस्तार से घिरा हुआ, एक छोटा सा द्वीप है, जिस पर इतालवी सरकार ने पिछली शताब्दी के अधिकांश समय तक आम जनता के जाने पर प्रतिबंध लगा रखा है। पोवेगलिया द्वीप आकार में बड़ा नहीं है—मुश्किल से सात हेक्टेयर भूमि—लेकिन इसकी मिट्टी और जीर्ण-शीर्ण वास्तुकला में इतना गहरा और दीर्घकालिक दुख समाया हुआ है कि यह मानव इतिहास की सबसे भयावह घटनाओं का एक स्मारक बन गया है। चौदहवीं शताब्दी और सत्रहवीं शताब्दी में प्लेग के प्रकोप के दौरान, पोवेगलिया को एक संगरोध द्वीप के रूप में इस्तेमाल किया गया था—एक ऐसी जगह जहाँ बीमार, संदिग्ध बीमार और मृतकों को मुख्य भूमि की आबादी से अलग करके ले जाया जाता था। ऐतिहासिक अनुमानों के अनुसार, इन अवधियों के दौरान द्वीप पर एक लाख साठ हजार से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। उनके शवों को विशाल सामूहिक चिताओं में जलाया गया, राख मिट्टी में इतनी मात्रा में मिल गई कि आज द्वीप की मिट्टी का अनुमान है कि पचास प्रतिशत से अधिक मानव राख और खंडित हड्डियाँ हैं। अनुमानों के अनुसार, पोवेगलिया की सतह पर मौजूद मिट्टी का लगभग एक तिहाई हिस्सा किसी न किसी रूप में मानव अवशेषों से युक्त है। द्वीप पर कृषि या निर्माण कार्य करने वाले श्रमिकों को बार-बार पतली ऊपरी मिट्टी को खोदकर मानव हड्डियों - जांघ की हड्डियाँ, खोपड़ियाँ, पसलियाँ, उंगलियों की हड्डियाँ - की खुदाई करनी पड़ी है, जो इतनी अधिक मात्रा में हैं कि सामान्य खुदाई असंभव हो जाती है। द्वीप के पेड़ इसी समृद्ध, भयावह मिट्टी में उगते हैं, और वेनेशियन लैगून के मछुआरे लंबे समय से द्वीप के तटों के पास जाल न डालने की परंपरा का पालन करते आ रहे हैं। इसका कारण कोई नियामक कारण नहीं है, बल्कि यह है कि उनके जाल मछलियों के बजाय मानव हड्डियों से भरे

लौटते हैं। यह इतना भयावह अनुभव है कि इस पर सदियों पुराना एक अनौपचारिक प्रतिबंध लगा हुआ है। द्वीप का घंटाघर, जो अब आंशिक रूप से ढह चुका है, पीढ़ियों से अपने आप बजता रहा है। शांत रातों में इसकी धीमी, एकल ध्वनि पानी के पार सुनाई देती है, जबकि घंटाघर को बहुत पहले ही हटा दिया गया था।

1922 में, पोवेगलिया द्वीप में संस्थागत आतंक का अंतिम और शायद सबसे भयावह अध्याय तब शुरू हुआ जब एक मनोरोग अस्पताल खोला गया, जिसे बाद में एक अतिरिक्त इमारत के साथ विस्तारित किया गया। इस अस्पताल में मानसिक बीमारी से पीड़ित रोगियों को पूर्व प्लेग कॉलोनी की इमारतों में रखा गया था। पूर्व कर्मचारियों की रिपोर्टों और बचे हुए कुछ अभिलेखों से पता चलता है कि मुख्य चिकित्सक, जिसका नाम आधिकारिक दस्तावेजों में नहीं मिलता है, लेकिन कई समकालीन विवरणों में उसका उल्लेख है, ने रोगियों पर प्रायोगिक शल्यक्रियाएँ कीं - लोबोटोमी और अन्य क्रूर तंत्रिका संबंधी प्रक्रियाएँ जो उपचार के उद्देश्य से नहीं बल्कि व्यक्तिगत शोध के लिए, बिना बेहोशी के, इमारत की ऊपरी मंजिलों पर की गईं। सबसे प्रचलित विवरण के अनुसार, इस चिकित्सक ने अंततः घंटी टावर से कूदकर आत्महत्या कर ली, या तो द्वीप के बुरे प्रभाव से, या अपराधबोध से, या - कहानी के सबसे भयावह संस्करण में - किसी अदृश्य शक्ति द्वारा प्रेरित होकर। उस दौरान अस्पताल में काम करने वाली एक नर्स ने दशकों बाद दिए एक साक्षात्कार में दावा किया कि डॉक्टर की गिरने से तुरंत मृत्यु नहीं हुई थी, बल्कि जब वह टावर के आधार पर बुरी तरह घायल पड़े थे, तब जमीन से धुंध उठी और उनके मुंह में घुस गई, जिससे उनकी आवाज हमेशा के लिए शांत हो गई। अस्पताल 1968 में बंद हो गया।

विशेष अनुमतियों के तहत द्वीप पर अस्थायी पहुँच प्राप्त करने वाली अलौकिक जाँच टीमों ने—या कुछ मामलों में अवैध रूप से अन्वेषण करने के लिए निषेध का उल्लंघन करने वाली टीमों ने—औद्योगिक या सैन्य संदर्भ के बाहर अब तक दर्ज की गई सबसे तीव्र विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र विसंगतियों को लगातार प्रलेखित किया है, ऐसे वातावरण में जहाँ ऐसी रीडिंग का कोई ज्ञात स्रोत नहीं है। एक वर्ग मीटर से भी कम क्षेत्रफल वाले स्थानों में दस से पंद्रह डिग्री सेल्सियस तक तापमान में गिरावट बार-बार दर्ज की गई है और इसे वास्तुशिल्पीय विशेषताओं या वायु प्रवाह के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। थर्मल इमेजिंग कैमरों ने ऐसे कमरे में मानव परछाईं जैसी आकृतियाँ कैद की हैं जो भौतिक रूप से खाली हैं। ऑडियो रिकॉर्डर ने मानव श्रवण सीमा से थोड़ी ही अधिक आवृत्तियों पर ऐसी ध्वनियाँ रिकॉर्ड की हैं जिन्हें स्पेक्ट्रल विश्लेषण द्वारा चीख के रूप में पहचाना गया है—यह किसी एक व्यक्ति की चीख नहीं, बल्कि एक साथ कई लोगों की चीख है, एक अज्ञात स्रोत से उत्पन्न पीड़ा का एक मिश्रित स्वर। इतालवी सरकार द्वीप की मालिक बनी हुई है और समय-समय पर इसके दीर्घकालिक पट्टे के अधिकारों की नीलामी करती रही है, हालाँकि आज तक वाणिज्यिक विकास के सभी प्रयास विफल रहे हैं। सबसे हालिया पट्टेदार, एक व्यवसायी जिसने इसे एक लक्जरी रिसॉर्ट के रूप में विकसित करने की योजना बनाई थी, ने कथित तौर पर नवीनीकरण शुरू करने के कुछ ही हफ्तों के भीतर परियोजना को छोड़ दिया। उन्होंने अपने फैसले के लिए कोई स्पष्टीकरण देने से इनकार कर दिया है।

अध्याय 7

एडम्स की घंटी वाली चुड़ैल—वह प्रेतवाधित घटना जिसने एक राष्ट्रपति को भयभीत कर दिया

सन् 1817 से 1821 के बीच, टेनेसी के एडम्स (जिसे तब रेड रिवर के नाम से जाना जाता था) में रहने वाले बेल परिवार ने भूत-प्रेत की ऐसी घटना का सामना किया, जो अमेरिकी इतिहास में भूत-प्रेत की सबसे विस्तृत रूप से प्रलेखित घटना बन गई। यह घटना इतनी गंभीर और पुख्ता सबूतों से भरी थी कि इसने संयुक्त राज्य अमेरिका के सातवें राष्ट्रपति एंड्रयू जैक्सन का ध्यान आकर्षित किया। बताया जाता है कि जैक्सन ने फार्महाउस का दौरा किया और भयभीत होकर जल्दबाजी में वहां से चले गए, और उन्होंने वहां दूसरी रात बिताने से इनकार कर दिया। जॉन बेल, एक समृद्ध किसान और स्थानीय बैपटिस्ट समुदाय के सम्मानित सदस्य थे, उन्होंने सबसे पहले अजीब आवाजों के रूप में इन गड़बड़ियों को महसूस किया: फार्महाउस की दीवारों और छत पर दस्तक, फर्श पर जंजीरों के घिसटने की आवाज, चूहों द्वारा फर्नीचर को कुतरने जैसी आवाजें, और घर के बाहरी हिस्से पर पत्थरों के फेंके जाने की आवाजें, लेकिन फेंकने वाले का कोई पता नहीं चला। ये आवाजें घर के हर सदस्य और कई आगंतुकों ने एक साथ सुनीं, इसलिए ये किसी एक व्यक्ति की मानसिक परेशानी का परिणाम नहीं थीं।

वह शक्ति—यदि वह एकवचन थी—भौतिक शोर से लेकर सक्रिय, लक्षित उत्पीड़न तक, भयावह तेज़ी से बढ़ती गई। बेल परिवार के बच्चों ने बताया कि रात में अदृश्य हाथों ने उनके बिस्तर की चादरें फाड़ दीं। जॉन बेल के बेटे डूरी के चेहरे पर एक अदृश्य शक्ति ने इतनी ज़ोर से प्रहार किया कि उसके चेहरे पर निशान पड़ गए। जॉन बेल स्वयं सबसे लगातार और क्रूर हमलों का शिकार हुए: उन्हें थप्पड़ मारे गए, घूंसे मारे गए, उनके बाल खींचे गए, उनकी त्वचा में पिन चुभाई गईं, और उनके जबड़े में ऐंठन होने

लगी जिससे वर्षों तक उन्हें खाना और निगलना लगातार कठिन होता गया। वे दुबले-पतले और कमज़ोर हो गए, उस हट्टे-कट्टे आदमी की परछाईं मात्र रह गए जो वे इन गड़बड़ियों के शुरू होने से पहले थे। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस भी शक्ति ने इस प्रेतवादन को संचालित किया, उसने उन्हें विशेष, निर्दयी क्रोध के साथ चुना, मानो उनका कष्ट ही घर में उसकी उपस्थिति का प्राथमिक उद्देश्य था।

वह सत्ता संवाद करती थी। बेल विच मामले का शायद यही सबसे परेशान करने वाला पहलू है—कि परिवार को सताने वाली शक्ति न तो बुद्धिहीन थी, न ही यादृच्छिक, बल्कि उसमें बोलने की क्षमता थी, ऐसा ज्ञान था जो उसके पास नहीं होना चाहिए था, और एक तिरस्कारपूर्ण, लगभग प्रदर्शनकारी द्वेष था। वह ज़ोर से बोलती थी, पहले फुसफुसाहट में जिसे सुनने के लिए आगंतुकों को पास झुकना पड़ता था, फिर पूरी आवाज़ में जो कमरे को भर देती थी। वह धर्मग्रंथों के लंबे और सटीक उद्धरण देती थी। वह दूर-दराज के स्थानों पर एक साथ घटित हो रही घटनाओं के बारे में सवालों के जवाब दे सकती थी। एक बार उसने एक स्थानीय पादरी को उस बातचीत का सटीक विवरण दिया जो उसने उसी सुबह दूसरे शहर के एक अनुयायी के साथ की थी, एक ऐसी बातचीत जो पादरी ने खुद किसी को नहीं बताई थी। वह उपदेशों की विषयवस्तु को उनके दिए जाने से पहले ही जानती थी, पत्रों के पाठ को उनके खोले जाने से पहले ही जानती थी, अजनबियों के नाम उनके परिचय से पहले ही जानती थी। उसने परिवार की मुखिया लूसी बेल के प्रति विशेष स्नेह दिखाया, उसके तकिए पर ताजे फलों के उपहार छोड़ती थी और उसकी उपस्थिति में भजन गाती थी, जबकि जॉन बेल के प्रति उसने अपना सबसे क्रूर व्यवहार दिखाया।

जॉन बेल की मृत्यु 20 दिसंबर, 1820 को हुई। अगली सुबह जब परिवार ने उन्हें बेहोशी की हालत में पाया और डॉक्टर को बुलवाया, तो उन्हें दवाइयों की अलमारी में एक शीशी मिली जिसमें एक गहरा, अज्ञात तरल पदार्थ था जिसे परिवार में कोई नहीं पहचानता था। जॉन जूनियर ने उस तरल पदार्थ का कुछ हिस्सा परिवार की बिल्ली को पिला दिया, जिसकी बाद में मृत्यु हो गई। जब उन्होंने उस अलौकिक शक्ति से शीशी के बारे में पूछा, तो उसने कथित तौर पर एक तीखी, भद्दी, विजयी हंसी हंसते हुए दावा किया कि उसने ही जॉन को जहर दिया था। मृत्यु का आधिकारिक कारण अज्ञात बीमारी दर्ज किया गया, लेकिन परिवार और उनके समुदाय को वास्तविक कारण पर कोई संदेह नहीं था। जॉन बेल की मृत्यु के बाद के महीनों में वह अलौकिक शक्ति धीरे-धीरे लुप्त होती गई, और धीरे-धीरे कम दिखाई देने लगी, फिर पूरी तरह से गायब हो गई। लेकिन 1828 में, वह थोड़े समय के लिए लौटी, परिवार से दोबारा मिली और भविष्य की घटनाओं - अमेरिकी गृहयुद्ध, प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध - के बारे में कई भविष्यवाणियां कीं, और फिर यह कहकर चली गई कि वह एक सौ सात साल बाद वापस आएगी। वर्ष 1935 बिना किसी दस्तावेजी घटना के बीत गया। बेल विच चाहे जो भी थी—मृतकों की आत्मा, मनोवैज्ञानिक पीड़ा का अलौकिक रूप से प्रकट हुआ प्रतिबिंब, एक राक्षसी बुद्धि, या कुछ ऐसा जो किसी भी मौजूदा वर्गीकरण प्रणाली से पूरी तरह बाहर आता है—यह अपनी पहली रिपोर्ट की गई उपस्थिति के दो शताब्दियों बाद भी, ऐतिहासिक अभिलेखों में सबसे ठोस रूप से प्रमाणित भूत-प्रेत की घटना बनी हुई है।

अध्याय 8

सेसिल होटल—लॉस एंजिल्स का मौत का घर

लॉस एंजिल्स के डाउनटाउन में मेन स्ट्रीट पर स्थित चौदह मंजिला सेसिल होटल ने अमेरिकी शहरी इतिहास में किसी भी तुलनीय इमारत की तुलना में अपनी दीवारों के भीतर कहीं अधिक मौतें देखी हैं, जिसके कारण इसे अनौपचारिक रूप से 'संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे प्रेतवाधित होटल' का दर्जा प्राप्त हुआ है - हालांकि यह वाक्यांश, नाटकीय रोमांच के निहितार्थ के साथ, इस स्थान के वास्तविक इतिहास की नीरस, कष्टदायक और संस्थागत उदासी को पूरी तरह से व्यक्त करने में विफल रहता है।
सेसिल होटल 1927 में 1920 के दशक की आर्थिक उछाल के चरम पर खुला और लगभग तुरंत ही हताश, हाशिए पर रहने वाले और दुर्भाग्यपूर्ण लोगों को आकर्षित करने लगा। 1960 के दशक तक यह चिरस्थायी रूप से गरीब, मानसिक रूप से बीमार और नशे के आदी लोगों का स्थायी निवास बन गया था, एक ऐसे इलाके में एक अस्थायी होटल जो इसके आसपास के जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। अगले दशकों में इसने आत्महत्याओं, हत्याओं और रहस्यमय मौतों का ऐसा आंकड़ा जमा कर लिया, जिसकी बराबरी दुनिया में कोई भी तुलनीय इमारत नहीं कर सकती।
सेसिल होटल में हुई मौतों की सूची किसी इतिहास से ज़्यादा निराशा के लेखा-जोखा की तरह लगती है। एलिज़ाबेथ 'द ब्लैक डाहलिया' शॉर्ट, वह युवती जिसकी 1947 में हुई हत्या हॉलीवुड के सबसे प्रसिद्ध अनसुलझे मामलों में से एक बन गई, कथित तौर पर अपनी मृत्यु से कुछ सप्ताह पहले सेसिल के बार की नियमित ग्राहक थी। रिचर्ड रामिरेज़, नाइट स्टॉकर सीरियल किलर जिसने 1980 के दशक में दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में आतंक मचाया, अपनी हत्याओं के दौरान चौदहवीं मंज़िल पर रहता था और खून से लथपथ कपड़ों में अपने कमरे में लौटता था, पीड़ितों के सामान को इमारत के पीछे कूड़ेदान में फेंक देता था। जैक अंडरवेगर, एक ऑस्ट्रियाई सीरियल किलर जिसने

विशेष रूप से सेसिल को लॉस एंजिल्स में अपना अड्डा बनाया था, जबकि वह शहर की यौनकर्मियों पर रिपोर्टिंग करने वाले एक पत्रकार के रूप में काम कर रहा था, ने अपने प्रवास के दौरान तीन महिलाओं की हत्या कर दी। होटल कम से कम सोलह सत्यापित आत्महत्याओं का स्थल रहा है, जिनमें से कई में न केवल कूदने वालों की बल्कि नीचे फुटपाथ पर चल रहे पैदल यात्रियों की भी मौत हुई।

इक्कीसवीं सदी में सेसिल होटल को वैश्विक स्तर पर कुख्याति दिलाने वाला मामला जनवरी 2013 में होटल में ठहरी 21 वर्षीय कनाडाई छात्रा एलिसा लैम की मौत थी। लापता होने की सूचना मिलने के बीस दिन बाद, लैम होटल की छत पर बने चार पानी के टैंकों में से एक में डूबी हुई मिलीं। ये टैंक होटल में ठहरने वाले लोगों को पीने और नहाने का पानी मुहैया कराते थे। पिछले कुछ हफ्तों से होटल में पानी का दबाव कम था और पानी का रंग और स्वाद अजीब था। उनकी मौत के हालात असाधारण थे। छत पर जाने का एकमात्र रास्ता अलार्म लगे एक बंद दरवाजे से था। पानी के टैंक भारी ढक्कनों से सील किए गए थे, जिन पर चढ़ने के लिए सीढ़ी की आवश्यकता होती थी। छत पर किसी और की मौजूदगी का कोई सबूत नहीं मिला। लैम का शरीर नग्न था और उनके कपड़े कभी बरामद नहीं हुए।

एलिसा लैम का मामला एक त्रासदी से वैश्विक घटना में तब्दील हो गया, जब पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान एक निगरानी फुटेज जारी किया। होटल की किसी अज्ञात मंजिल पर लगे लिफ्ट के कैमरे से ली गई इस फुटेज में लैम बेहद अजीब व्यवहार करती नजर आती हैं: वह लिफ्ट में ऐसे छिपती हैं मानो कोई उनका पीछा कर रहा हो, फिर गलियारे में बाहर निकलती हैं और कैमरे में दिखाई न देने वाली किसी चीज से बात करती हुई प्रतीत होती हैं। उनके हाव-भाव सहज और सजीव हैं, उनके हाथ ऐसे इशारों

में हिल रहे हैं जिनसे लगता है कि वह किसी से बात कर रही हैं। वह लिफ्ट के सभी बटन दबाती हैं। लिफ्ट के दरवाजे समय पर बंद नहीं होते। लिफ्ट के बंद होने और फुटेज से गायब होने से पहले उनका आखिरी दृश्य यह है कि वह बंद होते दरवाजे के पीछे अपना एक हाथ रखती हैं, जिसे विदाई या किसी के द्वारा खींचे जाने के संकेत के रूप में समझा जा सकता है। उनकी मृत्यु को आधिकारिक तौर पर आकस्मिक डूबने से हुई मौत माना गया, जिसमें बाइपोलर डिसऑर्डर को एक कारण बताया गया। किसी भी व्यक्ति को संतुष्ट किए बिना, आधिकारिक तौर पर यह बात अस्पष्ट बनी हुई है कि उसने उन्माद या वियोग की स्थिति में छत का दरवाजा कैसे खोला, पानी की टंकी पर कैसे चढ़ी, उसका सीलबंद ढक्कन कैसे खोला, उसमें कैसे प्रवेश किया और उसे अपने पीछे कैसे बंद किया।

अध्याय 9

बोर्ले रेक्टरी का भूतिया इतिहास—इंग्लैंड का सबसे प्रेतवाधित घर

एसेक्स और सफ़ोक की सीमा पर स्थित बोरली गाँव में 1863 में निर्मित, एक साधारण विक्टोरियन लाल ईंटों का पादरी निवास, 1920 के दशक और 1939 में आग से नष्ट होने के बीच के वर्षों में, ब्रिटिश अलौकिक अनुसंधान के इतिहास में सबसे अधिक जांचा-परखा भूतिया भवन बन गया। रेवरेंड हेनरी डॉसन एलिस बुल, जिन्होंने अपने बड़े परिवार के लिए इस पादरी निवास का निर्माण कराया था, ने सबसे पहले अजीब घटनाओं की सूचना दी: एक नन का भूत बगीचे के रास्ते पर चलते हुए देखा जाना— यह

रास्ता बाद में नन वॉक के नाम से जाना जाने लगा— खाली गलियारों में कदमों की आहट, अस्पष्ट घंटियों का बजना, और बंद और खाली कमरों में रोशनी का प्रकट होना। ये रिपोर्टें दशकों और कई किरायेदारों के दौरान जमा होती रहीं, जिससे इतने सारे स्वतंत्र पर्यवेक्षकों के बीच इतनी व्यापक और सुसंगत गवाही का भंडार बन गया कि कड़े संशयवादियों को भी इसे पूरी तरह से धोखाधड़ी या सामूहिक भ्रम मानने में कठिनाई हुई है।

यह मामला व्यापक स्तर पर तब पहुंचा जब हैरी प्राइस, जो एक प्रसिद्ध मानसिक शोधकर्ता थे, ने इसकी जांच की। प्राइस ने पहली बार 1929 में बोर्ले रेक्टरी का दौरा किया और अंततः इतिहास की सबसे व्यापक अलौकिक जांचों में से एक को अंजाम दिया। उन्होंने इमारत में चौबीसों घंटे निगरानी रखने के लिए पर्यवेक्षकों की टीमें बनाईं। प्राइस की जांच के दौरान, कई विश्वसनीय गवाहों की उपस्थिति में, किसी अदृश्य शक्ति द्वारा हवा में पत्थर उछाले गए। दीवारों पर अनायास ही संदेश प्रकट हुए, जो धुंधली, कांपती हुई लिपि में लिखे गए थे और बार-बार प्रार्थना करने और सामूहिक प्रार्थना करने का अनुरोध करते थे। एक प्लानचेट सत्र में एक आत्मा का संदेश मिला, जिसने दावा किया कि वह मैरी लैरे नाम की एक फ्रांसीसी नन है, जिसका गला घोंटकर उसके भरोसेमंद व्यक्ति ने तहखाने के फर्श के नीचे दफना दिया था। जब प्राइस ने वर्षों बाद तहखाने की खुदाई की, तो उन्हें जबड़े के टुकड़े और एक युवती की खोपड़ी मिली। संशयवादियों ने इन खोजों को स्थान की ऐतिहासिक प्रकृति से जोड़ा, लेकिन प्लानचेट संदेश और भौतिक साक्ष्यों के मेल ने कई जांचकर्ताओं को बहुत परेशान कर दिया। फरवरी 1939 में बोर्ले रेक्टरी में आग लग गई, जिसके कारण आज भी विवादित हैं। इसके तत्कालीन मालिक का दावा था कि एक लैंप अचानक गिर गया था, जबकि अन्य

लोगों ने इसके पीछे के कुछ और ही कारण बताए। इमारत के खाली होने और संरचनात्मक रूप से अस्थिर घोषित होने के बाद, जांचकर्ताओं ने मलबे में एक ऊपरी मंजिल की खिड़की से सटा हुआ चेहरा देखा। प्राइस द्वारा ली गई एक तस्वीर में विध्वंस के दौरान हवा में लटकी हुई ईंटें दिखाई दे रही थीं। उन्होंने इस तस्वीर को व्यापक रूप से प्रचारित किया, जिस पर विशेषज्ञों की राय बंटी हुई थी। अंततः 1944 में मलबे को ध्वस्त कर दिया गया और ज़मीन को साफ़ करके आवासीय उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया गया। लेकिन नन के प्रकट होने की खबरें दशकों तक आसपास के इलाकों से आती रहीं। बोर्ले में सेंट मैरी के छोटे से चर्च का कब्रिस्तान, जो रेक्टरी के स्थान से कुछ ही मीटर की दूरी पर स्थित है, एक ऐसी जगह है जहां स्थानीय लोग कम से कम उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से, यानी रेक्टरी की बदनामी के राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में आने से बहुत पहले से, अंधेरा होने के बाद जाने से बचते रहे हैं।

हैरी प्राइस की प्रतिष्ठा, उनके जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के बाद भी, घोर विवाद का विषय रही। आलोचकों ने उन पर सबूत गढ़ने या बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने और बोर्ले में भूत-प्रेत की घटनाओं को अपने करियर को आगे बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उनके समर्थकों ने प्राइस की संलिप्तता से पहले और उनकी मृत्यु के बाद भी जारी रहे सैकड़ों स्वतंत्र वृत्तांतों का हवाला दिया, जिनमें पादरियों, शिक्षाविदों, स्थानीय किसानों और आने वाले पत्रकारों के वृत्तांत शामिल थे, जिनका प्राइस से कोई संबंध नहीं था और न ही किसी धोखे में शामिल होने का कोई मकसद था। चर्च ऑफ इंग्लैंड ने 1930 के दशक में अपनी एक गुप्त जांच की और यद्यपि इसके निष्कर्ष कभी आधिकारिक तौर पर प्रकाशित नहीं हुए, चेम्सफोर्ड के बिशप ने कथित तौर पर निजी संवाददाताओं को बताया कि उनके पास रेक्टरी में विश्वसनीय और प्रामाणिक गवाहों

द्वारा बताई गई घटनाओं का कोई संतोषजनक प्राकृतिक स्पष्टीकरण नहीं है। बोर्ले में घटी घटना एक ऐसा प्रश्न उठाती है जो इसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति से परे है: न केवल यह कि भूत मौजूद हैं या नहीं, बल्कि यह कि कई दशकों की अवधि में सैकड़ों स्वतंत्र मानव गवाहों की एकत्रित, अभिसारी गवाही एक प्रकार का साक्ष्य है - अपूर्ण, निराशाजनक, प्रयोगशाला स्थितियों में कम न किया जा सकने वाला, लेकिन फिर भी साक्ष्य - किसी ऐसी चीज के लिए जिसे हमारे मौजूदा ढांचे वर्गीकृत करने में असमर्थ हैं।

अध्याय 10

सैली हाउस—एक ऐसा दानव जो विशेष रूप से पुरुषों को निशाना बनाता था

कैनसस के छोटे से शहर एटचिसन में, एक शांत आवासीय सड़क पर, जो बाहर से देखने पर किसी भी चीज़ का संकेत नहीं देती, एक साधारण दो मंजिला मकान खड़ा है। यह मकान कम से कम 1990 के दशक से ही अलौकिक घटनाओं की जांच, दस्तावेजित शारीरिक हमलों और कई निवासियों और शोध टीमों के बीच लगातार मनोवैज्ञानिक अशांति का केंद्र रहा है। सैली हाउस - जिसका नाम एक बच्चे की आत्मा के नाम पर रखा गया है जिसकी उपस्थिति सबसे अधिक ऊपरी मंजिल पर महसूस की जाती है - एक दुर्लभ और परेशान करने वाली विशेषता रखता है कि यह एक ऐसा स्थान है जहां रिपोर्ट की गई अलौकिक गतिविधियों में मानव आगंतुकों को लगातार, सत्यापित, फोटोग्राफिक और वीडियो-दस्तावेजित शारीरिक चोटें शामिल हैं। खरोंचें - गहरे, तीन पंजों वाले निशान जो स्वयं को चोट पहुंचाने से इनकार करते हैं - दस्तावेजित सत्रों के

दौरान वास्तविक समय में दिखाई दिए हैं, जिन्हें कई लोगों ने देखा है और कैमरे में कैद किया गया है क्योंकि वे पहले से जांच की गई और बेदाग पाई गई त्वचा पर अनायास ही बन गए थे।

पिकमैन परिवार, जो 1992 में इस घर में रहने आया था, ने कई महीनों तक लगातार बढ़ती हुई घटनाओं का अनुभव किया। शुरुआत में परेशानियाँ मामूली थीं: रखे हुए खिलौने कमरे के बीचोंबीच दिखाई देने लगते थे, छोटी-छोटी चीज़ें गायब हो जाती थीं और अप्रत्याशित स्थानों पर फिर से प्रकट हो जाती थीं, एक सामान्य बेचैनी का एहसास होता था जिसे टोनी और डेब्रा पिकमैन दोनों ने शुरू में एक अपरिचित घर के माहौल से जोड़ा। फिर टोनी को सपने आने लगे— एक छोटी बच्ची के बारे में स्पष्ट, लंबे, परेशान करने वाले सपने, जो पुराने ज़माने के कपड़े पहने बिस्तर के पास खड़ी होकर उसे ऐसे भावों से देख रही थी जिनमें न तो बचपना था, न ही मासूमियत, बल्कि एक वयस्क की घृणा थी जो मुश्किल से एक बच्चे के चेहरे में समाई हुई थी। वह इन सपनों से अपनी छाती और बाहों पर खरोंच के निशानों के साथ जागता था। इसके विपरीत, डेब्रा लगभग पूरी तरह से अकेली रह जाती थी। वह सत्ता, जो भी थी, उसमें बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं दिखाती थी। लिंग-विशिष्ट यह उत्पीड़न सैली हाउस की सबसे चर्चित और चर्चित विशेषताओं में से एक बन गया।

घर के इतिहास में, शोधकर्ताओं द्वारा की गई खुदाई से पता चला है कि एक कहानी प्रचलित है—जो कि अविश्वसनीय है लेकिन जिसकी पुष्टि नहीं हो सकती—कि उन्नीसवीं सदी के अंत या बीसवीं सदी की शुरुआत में एक असफल चिकित्सा प्रक्रिया के दौरान सैली नाम की एक छोटी लड़की की मृत्यु हो गई थी। कुछ विवरणों के अनुसार, वह छह साल की बच्ची थी जिसकी मृत्यु अपेंडिक्स के कारण हुई थी, जब एक स्थानीय डॉक्टर

रसोई की मेज पर उसकी आपातकालीन सर्जरी करने का प्रयास कर रहा था। अन्य विवरण एक कम स्पष्ट और कहीं अधिक भयावह इतिहास का सुझाव देते हैं, जिसमें घर के एक पूर्व मालिक द्वारा इसे तांत्रिक प्रथाओं के स्थल के रूप में उपयोग करने की बात कही गई है। पैरानॉर्मल जांचकर्ताओं ने इलेक्ट्रॉनिक वॉइस फेनोमेना और अन्य तरीकों से उस सत्ता से संवाद करने का प्रयास किया है, और उन्हें कई बार ऐसे जवाब मिले हैं जो किसी बच्चे के नहीं हो सकते: ये जवाब सोचे-समझे, कभी अश्लील, कभी धमकी भरे, कभी डरावने होते हैं, और उनकी भाषा और लहजा ऐसा है जो किसी छह साल की बच्ची के पास नहीं हो सकता। इस मामले से सबसे अधिक परिचित जांचकर्ताओं के बीच आम सहमति यह है कि 'सैली'—यदि वह वास्तव में मौजूद है—तो वह घर में होने वाली घटनाओं के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार नहीं है।

साशा और ग्रेग पिकमैन द्वारा की गई जांच के बाद इस घर को व्यापक जन ध्यान मिला — बाद में कई पैरानॉर्मल टीमों ने भी इस पर काम किया, जिनमें टेलीविजन डॉक्यूमेंट्री श्रृंखलाओं में दिखाई गई टीमें भी शामिल थीं। एक दस्तावेजित जांच सत्र के दौरान, एक टीम सदस्य को एक अदृश्य शक्ति द्वारा दीवार से ज़ोर से फेंक दिया गया, इस घटना को कई कैमरा कोणों में कैद किया गया जिसमें दिखाया गया कि वह टकराने से पहले ही ज़मीन से ऊपर उठ गया था। एक अन्य सत्र के दौरान, एक जांचकर्ता के शेल्फ के पास पहुंचने पर एक कांच का गिलास अचानक टूट गया, जिसके टुकड़े गुरुत्वाकर्षण के कारण होने वाले पतन से मेल न खाने वाली दिशा में चले गए। घर से रिकॉर्ड की गई ईवीपी (इलेक्ट्रोवॉकुलर वॉयस ओवर) रिकॉर्डिंग में जांचकर्ताओं के नामों का उपयोग करते हुए आवाजें सुनाई दी हैं— ऐसे नाम जो परिसर में कभी ज़ोर से नहीं बोले गए थे और न ही जांचकर्ताओं ने अपना परिचय उन नामों से दिया था। चाहे कोई सैली हाउस

को वास्तविक पैरानॉर्मल गतिविधि, अपेक्षा और सुझाव की शक्ति से उत्पन्न मनोदैहिक घटनाओं, या इससे भी अधिक परेशान करने वाली किसी चीज़— एक ऐसी चेतना जो मृत नहीं है और शायद कभी जीवित ही नहीं थी, कुछ ऐसा जो घर से पहले मौजूद था और इसके बाद भी रहेगा— के नज़रिए से देखे, वहां दर्ज भौतिक साक्ष्य हठपूर्वक, असहज रूप से वास्तविक बने रहते हैं।

अध्याय 11

एनफील्ड पोल्टरजिस्ट—इतिहास में सबसे अधिक बार देखी गई भूतिया घटना

अगस्त 1977 में, लंदन के एनफील्ड बरो में 284 ग्रीन स्ट्रीट स्थित एक छोटे से सरकारी मकान में, चार बच्चों की अकेली माँ पेगी हॉजसन ने पुलिस को सूचना दी कि उनके घर का फर्नीचर अपने आप हिल रहा है और उनके बच्चे दीवारों से खटखटाहट की आवाज़ें सुन रहे हैं। मौके पर पहुँचे पुलिस अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने एक भारी कुर्सी को बिना किसी मानवीय संपर्क के लिनोलियम फर्श पर लगभग चार फीट तक सरकते हुए देखा और उन्हें इस घटना का कोई प्राकृतिक स्पष्टीकरण नहीं मिला। यह घटना मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के इतिहास में सबसे व्यापक रूप से देखे गए, दस्तावेजित और स्वतंत्र रूप से प्रमाणित भूत-प्रेत के मामले की शुरुआत थी - एक ऐसा मामला जिसने तीन महाद्वीपों के जांचकर्ताओं को आकर्षित किया, एक ऐसा विवाद उत्पन्न किया जो आज भी जारी है, और उन सभी पर एक अमिट मनोवैज्ञानिक छाप छोड़ी जो इसके निरंतर संपर्क में आए।

हॉजसन परिवार के बच्चे— मार्गरिट, जेनेट, पीट और बिली— उन घटनाओं के केंद्र में थे जो फर्नीचर हटाने से शुरू होकर तेज़ी से एक बेहद भयावह रूप ले चुकी थीं। गड़बड़ी के चरम पर ग्यारह साल की जेनेट, घर में प्रवेश करने वाली किसी भी शक्ति का मुख्य केंद्र प्रतीत हो रही थी। पड़ोसियों और जांचकर्ताओं ने एक साथ ही जेनेट के हवा में तैरने की सूचना दी— जेनेट को अपने बिस्तर के ऊपर क्षैतिज रूप से तैरते हुए देखा गया, जिसे देखने वालों ने न केवल शारीरिक रूप से बल्कि उसके चेहरे के भावों की गुणवत्ता के कारण भी अत्यंत अप्राकृतिक बताया, जिसे सभी ने भयभीत होने के बजाय खाली और उदासीन बताया। कैमरे में कमरे में वस्तुएं उड़ती हुई दिखाई दीं: लेगो ईंटें, खिलौने, कंचे, किताबें— सभी इतनी ताकत और गति से फेंकी गईं जो बच्चों द्वारा किसी भी तरह से फेंकने की गति से मेल नहीं खाती थी। जिन कमरों की निगरानी की जा रही थी, उनमें स्वतः ही आग लग गई। उन क्षेत्रों में फर्श पर पानी जमा हो गया जहां पानी का कोई स्रोत नहीं था।

वह सत्ता जेनेट के माध्यम से संवाद करती थी। जेनेट ने एक ऐसी आवाज़ में बोलना शुरू किया जो उसकी अपनी आवाज़ से बिल्कुल अलग थी: एक धीमी, कर्कश, पुरुष की आवाज़, जिसने कई सत्रों के दौरान खुद को बिल के रूप में, घर में मरे हुए एक व्यक्ति के रूप में, और बाद में कई अन्य सत्ताओं के रूप में पेश किया। इन आवाज़ों को पत्रकारों, परा मनोविज्ञानियों और जांचकर्ताओं ने रिकॉर्ड किया, और बाद में आवाज विशेषज्ञों द्वारा किए गए विश्लेषण से पुष्टि हुई कि ये ध्वनियाँ जेनेट के कृत्रिम स्वर रज्जु में कंपन के कारण उत्पन्न हो रही थीं - एक ऐसी तकनीक जिसे शारीरिक नुकसान पहुंचाए बिना लंबे समय तक बनाए रखना संभव नहीं है और बिना प्रशिक्षण के इसे केवल मांग पर नहीं किया जा सकता है। जेनेट ने ऐसी आवाज़ें उत्पन्न करने के तरीके के बारे में कोई

जानकारी होने से इनकार किया। आवाज़ ने गालियाँ दीं, अश्लील प्रस्ताव रखे, गीत गाए, कहानियाँ सुनाईं, और कई मौकों पर हॉजसन परिवार के किसी भी सदस्य के लिए पूरी तरह से अज्ञात घटनाओं और लोगों के बारे में जानकारी प्रदर्शित की। जब जांचकर्ताओं ने गलत जानकारी के साथ इसकी परीक्षा ली, तो इसने लगातार उन्हें सही किया। साइकिकल रिसर्च सोसाइटी के शोधकर्ता मौरिस ग्रोस और गाय लियोन प्लेफेयर ने लगभग दो साल उस घर में बिताए और सैकड़ों घंटों का ऑडियो और विजुअल डॉक्यूमेंटेशन इकट्ठा किया। कई विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ शिक्षाविदों ने दौरा किया और रिपोर्टें तैयार कीं, जिनमें वास्तव में अनसुलझी घटनाओं की आश्चर्यजनक स्वीकृति से लेकर इस निष्कर्ष तक की बातें शामिल थीं कि उन्होंने कुछ ऐसा देखा है जिसकी कोई मौजूदा वैज्ञानिक व्याख्या नहीं दे सकती। बीबीसी ने टीमें भेजीं। अखबारों ने फोटोग्राफर भेजे। जेनेट की हवा में तैरती हुई तस्वीरें दुनिया भर में प्रकाशित हुईं और आज तक उनकी फर्जी होने की पुष्टि नहीं हुई है, हालांकि संशयवादी मानते हैं कि उनमें वह कूदती हुई दिखाई दे रही हैं। जेनेट, जो अब एक वयस्क हैं और अपने बचपन के अनुभवों के बारे में विस्तार से बात कर चुकी हैं, कहती हैं कि कुछ चीजें नकली थीं - उन्होंने शरारत में चम्मच मोड़ने और कुछ मौकों पर पर्दा खींचने की बात स्वीकार की, एक ऐसी स्वीकारोक्ति जिसे संशयवादियों ने पकड़ लिया - लेकिन उस घर में जो कुछ भी हुआ उसका अधिकांश हिस्सा वास्तविक और अनैच्छिक था और जिसने उन्हें तब भी भयभीत किया था और आज भी करता है। ये परेशानियां 1978 में उतनी ही अचानक समाप्त हो गईं जितनी अचानक वे शुरू हुई थीं। घर को 2011 में ध्वस्त कर दिया गया था। जेनेट ने कहा है कि वह कभी-कभी सोचती हैं कि घर के अंदर जो कुछ भी था, क्या वह घर के ध्वस्त होने पर मर गया या केवल स्थानांतरित हो गया।

अध्याय 12

विलिस्का कुल्हाड़ी हत्याकांड—अमेरिका की सबसे खूनी अनसुलझी रात

10 जून, 1912 की सुबह, आयोवा के मॉन्टगोमरी काउंटी में स्थित एक छोटे से कृषि समुदाय विलिस्का के निवासियों ने पाया कि ईस्ट सेकंड स्ट्रीट के 508 नंबर पर स्थित मूर परिवार का घर एक कत्लखाने में बदल गया था। समृद्ध औजार व्यापारी जोशिया मूर, उनकी पत्नी सारा, उनके चार बच्चे - हरमन, मैरी कैथरीन, आर्थर और पॉल - और मैरी कैथरीन की दो युवा सहेलियाँ, लीना और इना स्टिलिंगर, जिन्हें रात बिताने के लिए आमंत्रित किया गया था, अपने-अपने बिस्तरों पर मृत पाए गए। सभी आठों पीड़ितों की कुल्हाड़ी से हत्या की गई थी, उनके सिर पर कई वार करके उन्हें बुरी तरह कुचल दिया गया था, और हत्या के बाद उनके चेहरे चादरों से ढके हुए थे, जो हत्यारे या हत्यारों द्वारा जानबूझकर किया गया प्रतीत होता था। घर के सभी दर्पण ढके हुए थे। लैंप की चिमनियों को फर्श पर पड़े कपड़े से उंगलियों के निशान मिटा दिए गए थे। रसोई की मेज पर बिना खाया हुआ भोजन रखा था, जिससे पता चलता है कि हत्यारा हत्याओं के बाद कुछ समय तक घर में ही रुका रहा, शायद रात के अंधेरे में, बस इंतजार करता रहा।

इसके बाद हुई जांच बीसवीं सदी के शुरुआती दौर की आपराधिक न्याय व्यवस्था का सबसे बुरा उदाहरण थी: जांचकर्ताओं के पहुंचने से पहले घर में घुस आए जिज्ञासु कस्बेवासियों के कारण जांच में गड़बड़ी हुई; जांचकर्ताओं के बीच परस्पर विरोधी सिद्धांतों और व्यक्तिगत दुश्मनी के कारण जांच में बाधा आई; आधुनिक मानकों पर खरी न उतरने वाली अक्षम फोरेंसिक प्रक्रियाओं के कारण जांच पटरी से उतर गई; और

अंततः, यह पूरी तरह से अनसुलझी रह गई। मुख्य संदिग्ध, रेवरेंड लिन जॉर्ज जैकलिन केली नामक एक यात्रा करने वाले पादरी, जो पिछली शाम मूर के घर पर एक प्रार्थना सभा में शामिल हुए थे, पर दो बार मुकदमा चलाया गया। पहला मुकदमा किसी नतीजे पर न पहुंच पाने के कारण अधूरे रह गए। दूसरा मुकदमा, 1917 में, बरी होने पर समाप्त हुआ। हत्याओं से पहले और बाद में केली का व्यवहार निस्संदेह अजीब था—उन्होंने अपराध का जिक्र करते हुए पोस्टकार्ड भेजे, लोगों से इसके बारे में परेशान करने वाली बारीकियों के साथ बात की, और कथित तौर पर शेरिफ को एक पत्र लिखा जिसमें व्यक्तिगत जानकारी होने का संकेत था—लेकिन उनके खिलाफ सबूत परिस्थितिजन्य, विवादित और उन जांचकर्ताओं द्वारा एकत्र किए गए थे जिन्होंने अपराध स्थल को इतनी लापरवाही से संभाला था कि आधुनिक मानकों के अनुसार उनमें से बहुत कम ही स्वीकार्य होते।

अन्य संदिग्धों में हेनरी ली मूर नाम का एक कुख्यात सीरियल किलर भी शामिल था—जिसका परिवार से कोई संबंध नहीं था—जिसने विलिस्का हत्याकांड के दो महीने बाद मिसौरी के कोलंबिया में कुल्हाड़ी से एक बेहद मिलती-जुलती हत्या की थी। हत्या के तरीके में समानता स्पष्ट थी: कई पीड़ित, सभी सोते हुए, चेहरे ढके हुए, दर्पण धुंधले, और हत्यारे के पास शव परीक्षण के निशान। हेनरी ली मूर को मिसौरी हत्याकांड में दोषी ठहराया गया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई, लेकिन विलिस्का मामले को कभी भी औपचारिक रूप से उससे नहीं जोड़ा गया। फ्रैंक एफ. जोन्स, जोशिया मूर का एक व्यापारिक प्रतिद्वंद्वी था, जिसके साथ बाजार एजेंसी को लेकर उसका तीखा विवाद था, उसे भी बार-बार संदिग्ध के रूप में नामित किया गया, उस पर आरोप था कि उसने

कंसास सिटी से एक भाड़े के हत्यारे को काम पर रखा था। इनमें से कोई भी मामला कभी भी निर्णायक रूप से सुलझाया नहीं जा सका।

विलिस्का कुल्हाड़ी हत्याकांड गृह, जिसे अब इसी नाम से जाना जाता है, को 1994 में एक निजी व्यक्ति ने खरीदा था और आज यह एक पर्यटन स्थल के रूप में संचालित होता है, जो दिन के समय भ्रमण और उन कमरों में रात भर ठहरने की सुविधा प्रदान करता है जहाँ हत्याएँ हुई थीं। इस घर की पैरानॉर्मल शोधकर्ताओं द्वारा गहन जाँच की गई है, जिन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में किसी भी अन्य स्थान की तुलना में सबसे अधिक और सबसे लगातार ईवीपी और भौतिक विसंगति रीडिंग दर्ज की हैं। जो मेहमान बच्चों के कमरे में रात बिताते हैं—वह कमरा जहाँ जोशिया के चार बच्चों की मृत्यु हुई थी —वे लगातार श्रवण अनुभवों की रिपोर्ट करते हैं: बच्चों की आवाज़ें, विशेष रूप से भोर से पहले के घंटों में; फर्श पर हल्के कदमों की आहट; और कई बार, किसी भारी चीज़ को घसीटने की आवाज़। 2014 में, एक पैरानॉर्मल शोधकर्ता को अगली सुबह रात के दौरान जेब चाकू से पेट में बार-बार वार करते हुए पाया गया। वह बच गया, और जब वह बोलने लायक हो गया, तो उसने बताया कि उसे घटना की कोई याद नहीं है और आत्म-हानि या मानसिक बीमारी का कोई पूर्व इतिहास नहीं है। पुलिस रिपोर्ट इसे एक अलग घटना के रूप में वर्णित करती है। घर के मालिक इसे असामान्य बताते हैं। आयोवा के एक शांत कस्बे में अपरिवर्तित और गुमनाम रूप से खड़ी इस घर की दीवारें कुछ भी बयान नहीं करतीं।

अध्याय 13

विनचेस्टर का रहस्यमयी घर—मृतकों से बचने के लिए बनाया गया

कैलिफ़ोर्निया के सैन जोस में, सिलिकॉन वैली के सुव्यवस्थित उपनगरों से घिरे, एक सौ साठ कमरों का एक विक्टोरियन हवेली खड़ा है, जो एक साथ स्थापत्य कला के पागलपन, असीम दुःख और एक महिला के उन अलौकिक शक्तियों के पूर्ण और सर्वव्यापी भय का प्रतीक है, जिनके बारे में उसका मानना था कि वे उसका पीछा कर रही हैं। सारा लॉकवुड पार्डी विनचेस्टर, विलियम विर्ट विनचेस्टर की विधवा थीं, जो विनचेस्टर रिपीटिंग आर्म्स कंपनी के उत्तराधिकारी थे— एक ऐसी कंपनी जिसकी राइफलों ने अमेरिकी गृहयुद्ध और उसके बाद पश्चिमी सीमांत की विजय के दौरान अनगिनत लोगों की जान ली थी। 1881 में तपेदिक से विलियम की मृत्यु और उनके इकलौते बच्चे की शैशवावस्था में मृत्यु के बाद, सारा ने सांत्वना के लिए एक आध्यात्मिक माध्यम की शरण ली। यदि उनके बाद के व्यवहार को प्रमाण माना जाए, तो उन्हें जो मिला वह एक चेतावनी थी जिसने उनके बचे-खुचे धैर्य को चकनाचूर कर दिया और उनकी शेष ऊर्जा, धन और विवेक को एक असाधारण उद्देश्य की ओर निर्देशित कर दिया।

कहा जाता है कि सारा विंचेस्टर को एक माध्यम ने बताया था कि विंचेस्टर राइफलों से मारे गए सभी लोगों की आत्माएं—मूल अमेरिकी, सैनिक, बंदूकधारी, अनगिनत हिंसा के शिकार—उसका पीछा कर रही थीं, और उन्हें शांत करने का, उनके प्रतिशोध को रोकने का एकमात्र तरीका निर्माण करना था। निरंतर निर्माण करना। निर्माण कभी न रोकना, क्योंकि निर्माण रुकते ही उसकी मृत्यु हो जाएगी। क्या सारा ने इसे अक्षरशः माना या निर्माण के आदेश में अपने गहरे दुख और अपराधबोध के लिए एक स्वीकार्य

ढांचा पाया, यह मनोवैज्ञानिक व्याख्या का विषय है। जो बात व्याख्या योग्य नहीं है, वह यह वस्तुनिष्ठ तथ्य है कि उसने 1884 में सैन जोस में आठ कमरों का एक फार्महाउस खरीदा और उस पर लगातार, सप्ताह के सातों दिन, साल के तीन सौ पैंसठ दिन, अड़तीस वर्षों तक, 1922 में अपनी मृत्यु तक निर्माण कार्य जारी रखा।

इस निरंतर निर्माण के परिणामस्वरूप बना विनचेस्टर मिस्ट्री हाउस, अत्यधिक तनावग्रस्त मानव मन की स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ ऐसी सीढ़ियाँ हैं जो सीधे छतों में समा जाती हैं। ऐसे दरवाजे हैं जो नीचे की मंजिल तक एक सीधी खाई में खुलते हैं। खिड़कियाँ आंतरिक दीवारों और फर्शों में बनी हैं। गलियारे अठारह इंच की चौड़ाई तक संकरे हो जाते हैं। एक सीढ़ी है जिसमें चौवालीस सीढ़ियाँ हैं, प्रत्येक सीढ़ी केवल दो इंच ऊपर जाती है, और इसे चढ़ने में पूरी एक मंजिल लग जाती है। कमरे एक दूसरे के अंदर बने हैं। चिमनियाँ छत से ठीक पहले रुक जाती हैं। सारा विनचेस्टर का तेरह अंक के प्रति जुनून हर जगह दिखाई देता है: अलमारियों में तेरह हुक, खिड़कियों में तेरह कांच के टुकड़े, तेरह सीढ़ियों वाली सीढ़ी, तेरह कांच के टुकड़ों वाली छत। समकालीन विवरणों से पता चलता है कि वह हर रात एक अलग कमरे में सोती थी ताकि उन आत्माओं को भ्रमित कर सके जो उसका पीछा करते हुए उसके अंतिम विश्राम स्थल तक आ सकती थीं, और एक विशेष रूप से निर्मित नीले कमरे में रात में तांत्रिक अनुष्ठान करती थी जहाँ से वह निर्माण कार्य के निर्देश उन कारीगरों को देती थी जो उसे सर्वमान्य रूप से बेहद अजीब और बेहद डरावनी मानते थे।

आज यह घर एक राष्ट्रीय ऐतिहासिक स्थल है और यहाँ प्रतिवर्ष एक लाख से अधिक पर्यटक आते हैं। यहाँ आने वाले पर्यटकों और कर्मचारियों द्वारा बताई गई अलौकिक गतिविधियाँ व्यापक और विविध हैं: दृष्टि के किनारे पर दिखने वाली धुंधली आकृतियाँ

जो आमने-सामने आने पर गायब हो जाती हैं, निर्माण श्रमिकों की अनुपस्थिति में कदमों और हथौड़े की आवाज़, कुछ गलियारों में ठंडे स्थान जिनका भौतिक स्पष्टीकरण देने का हर प्रयास विफल रहा है, खाली कमरों से किसी के द्वारा देखे जाने का अहसास, और इलेक्ट्रॉनिक खराबी जो रिकॉर्डिंग उपकरणों को विशिष्ट, लगातार दोहराए जाने वाले स्थानों पर प्रभावित करती है। कई कर्मचारियों ने घर के जनता के लिए खुलने से पहले सुबह-सुबह विक्टोरियन पोशाक पहने एक छोटी महिला को आंतरिक गलियारों में घूमते हुए देखने की सूचना दी है। सारा विंचेस्टर की स्वयं 5 सितंबर, 1922 को इसी घर में नींद में मृत्यु हो गई। उसी सुबह निर्माण कार्य रोक दिया गया, और बताया जाता है कि श्रमिकों ने बस अपने औजार रख दिए और चले गए, मानो यह पहचान लिया हो - जैसा कि शायद सारा को लंबे समय से डर था - कि काम पूरा हो गया था, और हमेशा से ही पूरा रहा था।

अध्याय 14

वूलपिट के हरे-भरे बच्चे—दूसरी दुनिया से आए आगंतुक

बारहवीं शताब्दी में, इंग्लैंड के राजा स्टीफन के शासनकाल के दौरान, सफ़ोक में स्थित वूलपिट गाँव—जिसका नाम पुरानी अंग्रेज़ी के 'भेड़िया गड्ढा' से लिया गया है, जो उस क्षेत्र में भेड़ियों को फंसाने के लिए खोदे गए गहरे गड्ढों को संदर्भित करता है—अंग्रेजी मध्ययुगीन इतिहास के सबसे लंबे समय तक चलने वाले और अनसुलझे रहस्यों में से एक का केंद्र बन गया। बारहवीं शताब्दी के दो इतिहासकारों, राल्फ ऑफ कॉगेशल और विलियम ऑफ न्यूबर्ग द्वारा स्वतंत्र रूप से दर्ज किए गए वृत्तांतों के अनुसार, जिन्होंने घटनाओं का वर्णन करते समय उन्हें जीवित स्मृति में लिखा था और जिनकी

विश्वसनीयता को इतिहासकारों द्वारा उस काल के अन्य अभिलेखों के बराबर माना जाता है, एक ग्रीष्म ऋतु के दिन दो बच्चे भेड़िये के गड्ढों से निकले और फसल कटाई के दौरान स्थानीय फसल काटने वालों ने उन्हें पाया। ये बच्चे—एक लड़का और एक लड़की—पूरी तरह से हरे रंग के थे। न तो बीमारी से पीले या हरे रंग के, न ही बीमारी या कीचड़ से रंग बदले हुए। एकसमान रूप से, पूरी तरह से, चमकीले हरे रंग के। उनके कपड़े एक अपरिचित सामग्री से बने थे जिसे वूलपिट में कोई भी पहचान नहीं सका। वे एक अस्पष्ट भाषा में बात कर रहे थे। उन्होंने परोसे गए किसी भी भोजन को खाने से इनकार कर दिया, जाहिर तौर पर वे बारहवीं शताब्दी के ग्रामीण इंग्लैंड की रोटी, मांस और पानी को पहचान नहीं पा रहे थे, जब तक कि कोई उनके लिए डंठल सहित कच्ची फलियाँ नहीं लाया, जिन्हें उन्होंने तुरंत लपक लिया और बड़े चाव से खा गए।

बच्चों को स्थानीय ज़मींदार सर रिचर्ड डी कैल्ने के घर में ले जाया गया। लड़का, जो कद में छोटा और अधिक परेशान लग रहा था, जल्दी बीमार पड़ गया और अपने मेज़बानों की सर्वोत्तम देखभाल के बावजूद कुछ ही महीनों में उसकी मृत्यु हो गई। लड़की बच गई, उसका बपतिस्मा हुआ, उसने धीरे-धीरे सामान्य भोजन करना सीखा, और ऐसा करते हुए, उसका हरा रंग धीरे-धीरे कई वर्षों में फीका पड़ गया, यहाँ तक कि वह पूरी तरह से सामान्य दिखने लगी। उसने अंग्रेज़ी सीखी। उसने घरेलू काम करना शुरू किया, रिचर्ड बैरे नाम के एक व्यक्ति से शादी की, और विलियम ऑफ न्यूबर्ग के अनुसार, उसके बाद कई वर्षों तक वह एक बिल्कुल साधारण दिखने वाली महिला के रूप में रही, जो बारहवीं शताब्दी के सफ़ोक में भेड़ियों के पिंजरे में कच्चे गेहूँ के रंग में आई थी। उसने अपनी कहानी सुनाई, या यूँ कहें कि जितना उसे याद था या जितना वह सुनाना चाहती थी। उसने बताया कि वह और उसका भाई सेंट मार्टिन लैंड नामक एक जगह से

आए थे, जहाँ सूरज नहीं निकलता था और रोशनी हमेशा धुंधली रहती थी— एक ऐसी धुंधली दुनिया, जिसका वर्णन उसने साफ दिन में सूरज डूबने के ठीक बाद की रोशनी जैसा किया। उस जगह के सभी लोग हरे रंग के थे। उसे याद था कि वे अपने पिता के मवेशियों के पीछे-पीछे एक गुफा में गए थे और वहाँ घंटियों की आवाज़ सुनी थी— अंग्रेज़ी चर्चों की घंटियों जैसी आवाज़, जो दोनों बच्चों ने पहले कभी नहीं सुनी थी और जिसने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। वे शोर और उलझन में काफी देर तक गुफा में चलते रहे और सफ़ोक की गर्मियों की चकाचौंध भरी रोशनी में बाहर निकले, जिससे वे दर्द और डर से पीछे हट गए। उन्हें गुफा का प्रवेश द्वार दोबारा नहीं मिला। उसने कहा कि उनकी ज़मीन, जो पानी के उस पार थी, एक चमकदार देश था जिसे वे देख तो सकते थे लेकिन वहाँ पहुँच नहीं सकते थे।

इतिहासकारों और वैज्ञानिकों द्वारा हरे रंग के बच्चों की व्याख्या करने के प्रयासों ने अपने आप में एक साहित्य का आधार तैयार कर दिया है। चिकित्सा सिद्धांतों के अनुसार, बच्चों का रंग क्लोरोसिस का परिणाम था, जो आहार की कमी से होने वाला एनीमिया का एक रूप है और जिससे त्वचा का रंग हरा हो सकता है, संभवतः यह दर्शाता है कि वे लंबे समय तक सामान्य भोजन स्रोतों से अलग रहे थे। यह सिद्धांत रंग की व्याख्या तो करता है, लेकिन अपरिचित भाषा, अपरिचित वस्त्र, अंग्रेजी खाद्य पदार्थों के बारे में पूर्ण अज्ञानता, या बच्चों द्वारा अपने मूल के बारे में दिए गए विवरण की व्याख्या नहीं करता है। ऐसे सिद्धांत भी सामने आए हैं जिनमें कहा गया है कि बच्चे पास की बस्ती फोरनहैम सेंट मार्टिन से खोए हुए फ्लेमिश अप्रवासी थे, लेकिन ये सिद्धांत अतिरंजित व्याख्याओं पर आधारित हैं जो मध्यकालीन इतिहास के विशेषज्ञों को भी संतुष्ट नहीं करते और न ही किसी और को। इस मामले ने आयामी पोर्टल सिद्धांत में रुचि रखने वाले भौतिकविदों,

लोककथाकारों, जो इसे पृथ्वी की सतह के नीचे एक खोखली दुनिया की परीकथाओं से जोड़ते हैं, और विज्ञान कथा लेखकों का ध्यान आकर्षित किया है, जिन्होंने अलौकिक उत्पत्ति के विभिन्न रूप प्रस्तावित किए हैं। यह रहस्य नौ सौ वर्षों में अनसुलझा रह गया है। शायद ऐसा कभी नहीं होगा, और शायद धुंधले देश की उस हरी-भरी लड़की ने ठीक यही चाहा होगा - उसकी कहानी अनंत काल तक बार-बार सुनाई जाती रहे, और जिस गुफा से वह आई थी उसका दरवाजा, सफ़ोक के ग्रामीण इलाके में कहीं, हमेशा के लिए बंद रहे।

अध्याय 15

स्किनवॉकर रेंच—जहां भौतिकी के नियम टूट जाते हैं

पूर्वोत्तर यूटा के उइन्ताह बेसिन में, लगभग पाँच सौ बारह एकड़ की संपत्ति, जिसे शेरमन रेंच, गोरमन रेंच और सबसे व्यापक रूप से स्किनवॉकर रेंच के नाम से जाना जाता है, ने दशकों से इतनी विविध, विचित्र और लगातार घटित होने वाली घटनाओं का एक संग्रह तैयार किया है, जो कई स्वतंत्र गवाहों और स्वामित्व परिवर्तनों के बावजूद इतनी व्यापक हैं कि इसने निजी पैरानॉर्मल जांचकर्ताओं के साथ-साथ, विशेष रूप से, अमेरिकी सरकार और एयरोस्पेस उद्योग के तत्वों का भी निरंतर ध्यान आकर्षित किया है। रेंच में दर्ज की गई घटनाएं जांचकर्ताओं द्वारा ज्ञात लगभग हर प्रकार की असामान्य घटना को समाहित करती हैं: विभिन्न प्रकार के यूएफओ दर्शन; भौतिक व्याख्या से परे परिस्थितियों में पशुधन का प्रकट होना और गायब होना; अत्यंत गंभीर पोल्टरजिस्ट गतिविधि; क्रिप्टिड मुठभेड़; अभूतपूर्व परिमाण की विद्युत चुम्बकीय विसंगतियाँ; मानव

और गैर-मानव दोनों रूपों के प्रेत; और ऐसी घटनाएँ जिन्हें अलौकिक या वैज्ञानिक समझ के किसी भी मौजूदा ढांचे के भीतर वर्गीकृत करना असंभव है।

शेरमन परिवार ने 1994 में उपजाऊ ज़मीन पर मवेशी पालने की उम्मीद से यह संपत्ति खरीदी थी, लेकिन उन्हें तुरंत ही घटनाओं की एक ऐसी श्रृंखला का सामना करना पड़ा जिसने उनके सामान्य कृषि जीवन की हर संभावना को खत्म कर दिया। उनके मवेशी मृत पाए गए, जिनकी स्थानीय पशु चिकित्सकों द्वारा व्याख्या नहीं की जा सकी: उन्हें केवल मारा ही नहीं गया था, बल्कि ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी शल्य चिकित्सा विधि से मारा गया हो। कोमल ऊतकों में सटीक चीरे लगाकर उनका सारा खून निकाल लिया गया था, आंखें और जीभ औजारों की तरह सटीकता से निकाल दी गई थीं, आंतरिक अंग गायब थे, और आसपास के क्षेत्र में किसी भी शिकारी, चाहे वह इंसान हो या जानवर, के पैरों के निशान या अन्य कोई सबूत नहीं थे। एक बैल एक छोटे से धातु के ट्रेलर के अंदर सीधा खड़ा पाया गया, जिसका दरवाजा इतना बड़ा नहीं था कि वह अंदर जा सके, और यह भी पता नहीं चल पाया कि उसे वहां कैसे रखा गया था। कई मवेशी एक खेत से गायब हो गए, जिनके जाने के कोई निशान नहीं मिले। परिवार का अनुमान है कि दो साल के स्वामित्व के दौरान उनके लगभग पचास जानवर खो गए।

शेरमन परिवार ने विशाल, असाधारण रूप से बुद्धिमान और लगभग अजेय भेड़ियों के साथ मुठभेड़ की भी सूचना दी। ये जीव दिखने में भेड़िये जैसे थे, लेकिन क्षेत्र में अब तक दर्ज किसी भी भेड़िये से बड़े थे, जो निडर होकर मनुष्यों के पास आते थे और गोलियों से अप्रभावित प्रतीत होते थे। टेरी शेरमन ने बताया कि उन्होंने एक भेड़िये पर नज़दीक से अपनी राइफल से गोली चलाई, लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ। वह प्राणी, चाहे जो भी हो, अंततः ज़मीन में विलीन हो गया। परिवार ने कई बार बड़े चमकदार गोले भी

देखे - ये मौसम संबंधी घटनाएँ नहीं थीं, बल्कि संरचित, स्पष्ट रूप से उद्देश्यपूर्ण वस्तुएँ थीं जो स्पष्ट नियंत्रण के साथ चलती थीं और देखने वालों के प्रति सचेत प्रतीत होती थीं। एक बार, टेरी शेरमन ने एक शिकारी गोले को देखा जो खेत के एक कुत्ते का पीछा कर रहा था और उसे अपने अंदर समाहित कर रहा था, जो पूरी तरह से प्रकाश में गायब हो गया।

1996 में, इस संपत्ति को रॉबर्ट बिगेलो ने खरीदा था, जो एक अरबपति रियल एस्टेट डेवलपर थे और अलौकिक घटनाओं में उनकी गहरी रुचि थी। उन्होंने वैज्ञानिकों की एक टीम को कई वर्षों तक इस रेंच का निरंतर अध्ययन करने के लिए वित्त पोषित किया। नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर डिस्कवरी साइंस की टीम, जिसमें भौतिक विज्ञानी, जीवविज्ञानी और अन्य वैज्ञानिक शामिल थे, ने सैकड़ों घंटों का दस्तावेज़ीकरण किया और ऐसी विसंगतियों का अनुभव और रिकॉर्ड किया, जिन्हें उनके अपने शोधकर्ता मौजूदा वैज्ञानिक ढाँचों के भीतर स्पष्ट नहीं कर पाए। बाद में, यह संपत्ति एडमंटियम होल्डिंग्स द्वारा अधिग्रहित कर ली गई, जिसका संबंध यूटा के पूर्व कार्यकारी मायरोन लारामी के उद्यम से था, और फिर ब्रैंडन फुगल द्वारा। इस पर एक लंबे समय तक चलने वाली टेलीविजन वृत्तचित्र श्रृंखला बनाई गई, जिसने इसकी घटनाओं को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, रक्षा खुफिया एजेंसी के उन्नत एयरोस्पेस थ्रेट आइडेंटिफिकेशन प्रोग्राम ने अपने गोपनीय बजट के तहत स्किनवॉकर रेंच को अपने अध्ययन स्थलों में शामिल किया था। यूटे राष्ट्र, जिसकी पारंपरिक भूमि पर यह रेंच स्थित है, लंबे समय से इस क्षेत्र को अत्यधिक खतरनाक स्थान के रूप में जानता है। उनकी मौखिक परंपरा के अनुसार, यह स्किनवॉकर द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला मार्ग है—जो उनके ब्रह्मांडीय ज्ञान के अनुसार एक रूप बदलने वाला, अत्यंत द्वेषपूर्ण

प्राणी है—और उन्होंने सदियों से इस संपत्ति में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा रखा है। वैज्ञानिक, सरकारी जांचकर्ता और टेलीविजन वृत्तचित्रकार सभी कैमरे, उपकरण और तर्कसंगत बुद्धि के आत्मविश्वास के साथ वहां पहुंचे हैं। लेकिन उनमें से कोई भी वहां से जो कुछ भी पाया, उसकी पर्याप्त समझ लेकर नहीं लौटा है।

अध्याय 16

मर्टल्स प्लांटेशन—कब्रिस्तान पर निर्मित, रक्त से लथपथ

लुइसियाना के सेंट फ्रांसिसविले के बाहरी इलाके में एक हल्की सी ऊँची पहाड़ी पर स्थित, प्राचीन ओक के पेड़ों की लताओं से घिरे, एक ऐसे शास्त्रीय गोथिक परिदृश्य में जो भय उत्पन्न करने के उद्देश्य से ही निर्मित प्रतीत होता है, मर्टल्स प्लांटेशन का निर्माण 1796 में जनरल डेविड ब्रैडफोर्ड द्वारा उस भूमि पर किया गया था, जो बाद के शोध से पुष्टि हुई है कि ट्यूनिका मूल अमेरिकी कब्रिस्तान हुआ करती थी। इस स्थान का चुनाव, और अगली शताब्दी में इस पर घटी हिंसा ने, कई शोधकर्ताओं के अनुसार, इसे अमेरिकी दक्षिण की सबसे अधिक प्रेतवाधित घरेलू इमारत बना दिया है - एक ऐसी इमारत जिसमें अलौकिक शक्तियाँ कभी-कभार आने वाली नहीं बल्कि एक स्थायी निवासी हैं, जो दो शताब्दियों के रक्तपात, दुःख और नस्लीय आतंक के दौरान भूमि और संरचना पर समा गई हैं।

मर्टल्स का सबसे प्रसिद्ध भूत क्लोई है, जो एक गुलाम महिला थी। बागान की लोककथाओं के अनुसार, वह ब्रैडफोर्ड परिवार के घर में नौकरानी थी, जिसे निजी बातचीत छुपकर सुनते हुए पकड़ा गया था। सजा के तौर पर उसका कान काट दिया गया था, और बाद में - बदला लेने के लिए, या हताशा में, या दोनों के किसी भयानक

संयोजन के कारण - उसने एक ज़हर मिला हुआ जन्मदिन का केक बनाया, जिससे घर की मालकिन और उसके दो बच्चों की मौत हो गई। क्लोई को बाद में उसके साथी गुलाम मजदूरों ने फांसी पर लटका दिया, क्योंकि उन्हें उसके अपराध के लिए प्रतिशोध का डर था। 1992 में मर्टल्स में एक नियमित बीमा सर्वेक्षण के दौरान ली गई एक तस्वीर में, बागान की दो इमारतों के बीच, हरे रंग की पगड़ी पहने एक युवा अश्वेत महिला की आकृति दिखाई दी, जिसने एक बच्चे को गोद में लिया हुआ था और उसके चेहरे पर अवर्णनीय उदासी के भाव थे। तस्वीर लेते समय फोटोग्राफरों ने उस आकृति को नहीं देखा था। इस तस्वीर का व्यापक फोटोग्राफिक विश्लेषण किया गया है और इसमें डबल एक्सपोजर, जानबूझकर छेड़छाड़ या प्राकृतिक गलत पहचान का कोई सबूत नहीं मिला है।

मायर्टल परिवार का इतिहास क्लोई से कहीं आगे बढ़कर एक व्यापक और भयावह कहानी को समेटे हुए है। माना जाता है कि कम से कम दस लोगों की इस संपत्ति पर या इसके आस-पास हिंसक परिस्थितियों में मृत्यु हुई है, जिनमें विलियम विंटर भी शामिल हैं, जो बाद में इस संपत्ति के मालिक बने। 1871 में उन्हें सामने के बरामदे में गोली मार दी गई थी और गंभीर रूप से घायल होने के बाद वे खुद को घसीटते हुए अंदर आए और भव्य सीढ़ियों पर चढ़कर सत्रहवीं सीढ़ी पर जाकर उनकी मृत्यु हो गई। उनके कदमों की आहट— एक मरते हुए व्यक्ति के घिसटते और रुकते हुए कदमों की आहट, जो चढ़ते-चढ़ते सुनाई देती है— मेहमानों द्वारा नियमित रूप से सुनी जाती है, खासकर आधी रात के बाद की शांति में। वे सीढ़ियों पर चढ़ते हैं और हमेशा सत्रहवीं सीढ़ी पर रुक जाते हैं। सीढ़ी का दर्पण अमेरिकी दक्षिण में सबसे डरावनी वस्तुओं में से एक माना जाता है: सामने के हॉल में लगा एक बड़ा प्राचीन दिखने वाला दर्पण, जिसे कथित तौर पर

विंटर परिवार के अंतिम संस्कार के समय ढका नहीं गया था। दक्षिणी परंपरा के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि इस चूक के कारण मृतकों की आत्माएं दर्पण के भीतर फंस जाती हैं। दर्पण पर ऐसे हाथों के निशान दिखाई देते हैं जिन्हें मिटाया नहीं जा सकता। दर्पण की सतह से चेहरे उन लोगों को झांकते हुए दिखाई देते हैं जो उसके सामने खड़े होते हैं। कर्मचारियों ने बताया है कि दर्पण के प्रतिबिंब में उन्हें कमरे उनकी वास्तविक व्यवस्था से अलग ढंग से व्यवस्थित दिखाई देते हैं - मानो दर्पण हॉल की वर्तमान स्थिति को नहीं बल्कि उसके किसी पूर्व या शायद समानांतर संस्करण को दिखाता हो।

मायर्टल्स के बेड एंड ब्रेकफास्ट आवास में ठहरने वाले मेहमान - यह प्लांटेशन एक ऐतिहासिक सराय के रूप में संचालित होता है - लगातार संयुक्त राज्य अमेरिका में उपलब्ध सबसे विविध और दीर्घकालिक अलौकिक अनुभवों की रिपोर्ट करते हैं। खाली कमरों में ऐसे बच्चे हंसते हैं जो वहां मौजूद नहीं होते। सैलून में रखा भव्य पियानो उन्नीसवीं सदी के लोकप्रिय गीतों की धुनें बजाता है, जबकि उस पर या उसके आस-पास कोई बैठा नहीं होता। एक युवा लड़की का भूत मास्टर सुइट में और अतिथि कमरों में बिस्तरों के पास प्रकट होता है, कभी-कभी सोते हुए मेहमानों को देखता है, कभी-कभी उन्हें छूने के लिए हाथ बढ़ाता है। संपत्ति के नीचे स्थित ट्यूनिका कब्रिस्तान शायद प्रेतवाधित घटनाओं की सबसे गहरी परत है - सबसे पुराना और सबसे अपूरणीय अन्याय जिस पर बाद के सभी अन्याय आधारित हैं, विस्थापित पवित्र भूमि की एक नींव जो हिंसा की हर पीढ़ी के माध्यम से ऊपर की ओर रिसती है और इमारत का संकेत है कि जब तक दीवारें खड़ी रहेंगी, तब तक यह हिंसा जारी रहेगी।

नरक की आवाज़ें—सोवियत सुरंग जहाँ शापित आत्माओं की आवाज़ें सुनाई देती थीं

1980 के दशक के उत्तरार्ध में, सोवियत संघ के मरमांस्क ओब्लास्ट में स्थित कोला सुपरडीप बोरहोल नामक उस समय तक पृथ्वी में खोदे गए सबसे गहरे छेद को खोदते हुए सोवियत वैज्ञानिकों की एक टीम ने खुदाई स्थल से ऑडियो उपकरण बरामद किए, जिनमें असाधारण और बेहद विचलित करने वाली सामग्री की रिकॉर्डिंग थी। यह कहानी 1989 में एक फिनिश रेडियो स्टेशन के माध्यम से, फिर फैक्स नेटवर्क और अंततः नवोदित इंटरनेट के ज़रिए पश्चिमी ईसाई समुदायों में फैल गई। कहानी के अनुसार, वैज्ञानिकों ने भूवैज्ञानिक स्थितियों की निगरानी के लिए बोरहोल में एक ताप-प्रतिरोधी माइक्रोफोन डाला, तो उन्हें मानव चीखों की रिकॉर्डिंग मिली - हजारों या लाखों लोगों की पीड़ा भरी आवाज़ें, एक दूसरे के ऊपर परत दर परत गूंजती हुई, पीड़ा के एक निरंतर, विशाल कोरस में, जिसने इसे सुनने वालों के मन में तुरंत नरक की धार्मिक अवधारणा का आभास कराया। इस विवरण के अनुसार, कई वैज्ञानिक घटनास्थल से भाग गए। एक व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ गया। परियोजना बंद कर दी गई।

कोला सुपरडीप बोरहोल की वास्तविकता अपने आप में असाधारण है, भले ही इसमें अलौकिक तत्व न हों: यह वास्तव में मानव इंजीनियरिंग द्वारा पृथ्वी की पपड़ी में की गई अब तक की सबसे गहरी खुदाई थी, और इसकी खुदाई के दौरान की गई भूवैज्ञानिक खोजों - जिनमें उन गहराइयों पर प्राचीन जैविक सामग्री के प्रमाण शामिल हैं जहाँ पहले किसी भी प्रकार के जीवन की संभावना नहीं मानी जाती थी, और यह खोज कि गहराई में पृथ्वी की संरचना उन मॉडलों से बहुत कम मिलती-जुलती थी जिनकी भविष्यवाणी की गई थी - ने पृथ्वी के आंतरिक भाग के बारे में वैज्ञानिक समुदाय के विश्वास को सचमुच

हिला दिया। परियोजना वास्तविक थी। गहराई वास्तविक थी। अजीब भूवैज्ञानिक निष्कर्ष वास्तविक थे। केवल चीखने-चिल्लाने की रिकॉर्डिंग विवादित हैं, और वह भी बहुत ज़ोरदार तरीके से: इंटरनेट पर प्रसारित परियोजना से जुड़ी ऑडियो रिकॉर्डिंग को ऑडियो इंजीनियरों ने एक हॉरर फिल्म के साउंडट्रैक के रूप में पहचाना है, और परियोजना से जुड़े किसी भी विश्वसनीय वैज्ञानिक ने कभी भी इस बात की पुष्टि नहीं की है।

इस कहानी की प्रासंगिकता, ब्रह्मांड की कुछ धार्मिक व्याख्याओं के प्रति इसके स्पष्ट आकर्षण के अलावा, इसमें निहित वास्तविक अनिश्चितता के कारण बनी हुई है। बारह किलोमीटर की गहराई पर, बोरहोल का तापमान लगभग एक सौ अस्सी डिग्री सेल्सियस तक पहुँच गया, जो अनुमान से कहीं अधिक था। चट्टान ठोस रहने के बजाय दबाव में बहने लगी थी। ऐसे वातावरण की ध्वनि संबंधी विशेषताएँ—अत्यधिक दबाव में चट्टान की गति, ऊष्मा से उत्पन्न भूवैज्ञानिक तनाव की गतिशीलता—सैद्धांतिक रूप से ड्रिलिंग उपकरण से गुजरने पर ध्वनियाँ उत्पन्न कर सकती थीं। क्या इन ध्वनियों को मानवीय आवाज़ें समझा जा सकता है, या क्या वे रिकॉर्डिंग उपकरण में कुछ ऐसा उत्पन्न कर सकती हैं जो मानवीय आवाज़ों जैसा प्रतीत हो, जबकि वास्तव में वे मानवीय आवाज़ें न हों, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर परियोजना के तकनीकी मापदंडों का अध्ययन करने वाले इंजीनियरों ने अभी तक निश्चित रूप से नहीं दिया है। मानव मस्तिष्क शोर में भी मानवीय आवाज़ों को पहचानने में असाधारण रूप से सक्षम है— इस क्रिया को पैरेडोलिया कहा जाता है, जो श्रवण प्रक्रिया तक विस्तारित है— और वैज्ञानिकों का मनोवैज्ञानिक संदर्भ, जो आम धारणा में नरक के समान माने जाने वाले वातावरण में, मानवता द्वारा पहले कभी न छुई गई गहराइयों में, और अपने ही प्रकार के भय से भरे

एक ढहते सोवियत राज्य में काम कर रहे थे, ठीक वही संदर्भ है जो इस तरह की गलतफहमी पैदा करने की सबसे अधिक संभावना रखता है। क्या यह व्याख्या कोला के वैज्ञानिकों के अनुभवों— उनकी रिपोर्ट, उनकी भावनाओं और उनमें से कुछ को वहाँ से जाने के लिए प्रेरित करने वाले कारणों— को पूरी तरह से समझा पाती है, यह केवल वे ही जान सकते हैं, और शायद बारह किलोमीटर की अंधेरी रूसी चट्टान भी।

ब्लू बेल हिल का प्रेत यात्री—ब्रिटेन का सबसे स्थायी प्रेत

इंग्लैंड के केंट में नॉर्थ डाउन्स में स्थित ब्लू बेल हिल, एक खड़ी चूना पत्थर की चट्टान है, जिस पर मेडस्टोन और मेडवे शहरों के बीच A229 सड़क गुजरती है। इस पहाड़ी पर आधी सदी से भी अधिक समय से अलौकिक घटनाओं की ऐसी घटनाएं दर्ज हैं जो स्वतंत्र गवाहों द्वारा एक समान रूप से बताई गई हैं, भौगोलिक रूप से इतनी विशिष्ट हैं और तर्कसंगत रूप से खारिज करने योग्य इतनी प्रतिरोधी हैं कि यह 'प्रेत यात्री' घटना का सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित मामला है - एक प्रकार का प्रेत जो दुनिया भर में व्यापक रूप से बताया जाता है, लेकिन ब्लू बेल हिल द्वारा प्रदान किए गए साक्ष्यों की सघनता के साथ शायद ही कभी। कहानी औपचारिक रूप से नवंबर 1965 में शुरू होती है जब तीन युवतियां, सुज़ैन ब्राउन, जूडिथ लिंगम और पेट्रीसिया फर्ग्यूसन, जूडिथ लिंगम की शादी के दिन से एक रात पहले पहाड़ी पर एक कार दुर्घटना में मारी गईं। चौथी महिला, होने वाली दुल्हन के मंगेतर की बहन, बच गई। इसके बाद के वर्षों और दशकों में, ए229 पर चालकों ने ब्रिटेन की किसी भी अन्य सड़क पर बेजोड़ आवृत्ति और निरंतरता के साथ, रात में सड़क किनारे एक युवती से मिलने की सूचना दी है।

इस तरह की घटनाओं का एक निश्चित पैटर्न होता है। देर रात अकेले गाड़ी चला रहा एक ड्राइवर सड़क पर या उसके आस-पास एक युवती को देखता है—कभी दौड़ती हुई,

कभी सड़क पर खड़ी हुई, कभी ऐसा लगता है कि ड्राइवर के ब्रेक लगाने से पहले ही गाड़ी ने उसे टक्कर मार दी हो। ड्राइवर गाड़ी रोकता है, गाड़ी के नीचे कुछ नहीं पाता, सड़क किनारे खोजता है, लेकिन कोई नहीं मिलता। कुछ ड्राइवर इतने परेशान हो जाते हैं कि वे पुलिस से संपर्क करते हैं। 1968 से लेकर आज तक, मेडस्टोन पुलिस को एक दर्जन से अधिक औपचारिक शिकायतें मिली हैं जिनमें ड्राइवरों ने माना कि उन्होंने ब्लू बेल हिल पर एक युवती को टक्कर मारी थी या लगभग टक्कर मार दी थी, इलाके की तलाशी ली, लेकिन न तो कोई पीड़ित मिला और न ही टक्कर का कोई सबूत। 1992 के एक मामले में, एक ड्राइवर को पूरा यकीन था कि उसने एक लड़की को टक्कर मारी है। उसने लड़की को कंबल में लपेटकर सड़क किनारे रख दिया और मदद के लिए फोन करने चला गया—उस समय मोबाइल फोन आम चलन में नहीं थे—और वापस आकर उसने देखा कि कंबल ज़मीन पर करीने से तह करके रखा हुआ था और लड़की का कोई निशान नहीं था।

इस प्रेत का वर्णन आमतौर पर एक युवा महिला के रूप में किया जाता है, जो पीली त्वचा वाली, काले बालों और काली आँखों वाली होती है और सफेद या हल्के रंग के कपड़े पहने होती है। कभी-कभी उसे व्यथित, तो कभी भावहीन बताया जाता है। वह ठोस प्रतीत होती है - पारंपरिक भूतिया रूप की तरह पारदर्शी या निराकार नहीं - और प्रत्यक्षदर्शी लगातार इस बात पर दृढ़ विश्वास व्यक्त करते हैं कि वह एक जीवित, व्यथित व्यक्ति है, न कि कोई अलौकिक प्रेत, जब तक कि वह गायब नहीं हो जाती।

प्रत्यक्षदर्शियों पर इसका भावनात्मक प्रभाव एक समान रूप से गंभीर होता है: कई लोग बताते हैं कि वे इसके बाद हफ्तों तक गाड़ी चलाने में असमर्थ रहे, उन्हें बुरे सपने आते रहे और उन्हें एक गहरा विक्षिप्त अनुभव हुआ जिसे वे अपने अब तक के किसी भी अन्य

डरावने अनुभव से बिल्कुल अलग बताते हैं। इन कॉलों पर कार्रवाई करने और बाद में तलाशी अभियान चलाने वाले पुलिस अधिकारी उस स्थान को लेकर, विशेष रूप से आधी रात से सुबह तीन बजे के बीच, एक ऐसी बेचैनी का वर्णन करते हैं जो एक अंधेरी ग्रामीण सड़क की मात्र भौतिक वास्तविकता के अनुपात में नहीं है।

कई जांचकर्ताओं ने प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा दिए गए शारीरिक विवरणों के आधार पर, इस प्रेतवाधित घटना को 1965 की दुर्घटना में मृत सुज़ैन ब्राउन या पेट्रीसिया फर्ग्यूसन से जोड़ने का प्रयास किया है। ये विवरण पूरी तरह से एक जैसे नहीं हैं, और कुछ शोधकर्ताओं ने यह सुझाव दिया है कि ब्लू बेल हिल पर दिखाई देने वाली गतिविधि किसी बहुत पुराने आघात से जुड़ी हो सकती है— यह पहाड़ी नवपाषाण काल से ही मानव गतिविधि का स्थल रही है और इसमें नवपाषाण काल का एक दफन स्मारक, किट्स कोटी हाउस, और कई कम ज्ञात महापाषाण संरचनाएं हैं जो यह संकेत देती हैं कि यह क्षेत्र प्रागैतिहासिक समुदायों के लिए निरंतर धार्मिक महत्व रखता था। पत्थर के घेरे की परंपरा के कुछ जांचकर्ताओं ने सुझाव दिया है कि चाक पहाड़ियों की कुछ भूवैज्ञानिक विशेषताएं— विवर्तनिक वातावरण के प्राकृतिक तनावों के अधीन होने पर उनके पीजोइलेक्ट्रिक गुण— दृश्य और श्रव्य असामान्यताओं में योगदान दे सकते हैं जिन्हें मानव मनोविज्ञान सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट तरीकों से व्याख्या करता है। इक्कीसवीं सदी में, यह एक सड़क दुर्घटना में एक युवती के रूप में सामने आता है। नवपाषाण काल में, इसका रूप पूरी तरह से कुछ और हो सकता था। ब्लू बेल हिल अपने मृतकों को सहेज कर रखता है, और उन्हें बार-बार उन जीवित लोगों को अर्पित करता है जो वहां से गुजरते हैं।

अध्याय 19

यूनिट 731—जापान का वो गुप्त भयावह सच जिसे दुनिया भुलाने की कोशिश करती रही

1937 और 1945 के बीच, जापानी कब्जे वाले मंचूरिया के हार्बिन शहर के बाहरी इलाके में बने एक विशाल परिसर में, जापान साम्राज्य ने मानव प्रयोगों का एक ऐसा कार्यक्रम चलाया, जो अपने पैमाने, व्यवस्थित भयावहता और जानबूझकर की गई क्रूरता के मामले में, दर्ज इतिहास में किसी भी राष्ट्र द्वारा किए गए सबसे भयावह कृत्यों में से एक है। यूनिट 731, जिसे औपचारिक रूप से क्वांगतुंग सेना के महामारी निवारण और जल शोधन विभाग के रूप में नामित किया गया था, वह संस्थागत ढांचा था जिसके माध्यम से लेफ्टिनेंट जनरल शिरो इशी और उनके अधीनस्थों - डॉक्टरों और वैज्ञानिकों, जिनमें से कई जापान के सबसे प्रतिष्ठित चिकित्सा विश्वविद्यालयों के स्नातक थे - ने जीवित मानव कैदियों पर प्रयोग किए। इन प्रयोगों में बिना बेहोशी के विच्छेदन, प्लेग, हैजा, टाइफाइड और एंथ्रेक्स का जानबूझकर संक्रमण, फ्रॉस्टबाइट और हाइपोथर्मिया उत्पन्न करने के लिए अत्यधिक ठंड में रखना, खोपड़ी से आंखें बाहर निकलने तक उच्च दबाव में रखना, अवलोकन के लिए जीवित विषयों से अंगों को शल्य चिकित्सा द्वारा निकालना और जानबूझकर यौन संचारित रोगों को फैलाना शामिल था। यूनिट के दस्तावेज़ों में पीड़ितों को मरीज़ या कैदी नहीं बल्कि मारुता कहा गया है, जो कि जापानी भाषा में लकड़ी के लट्ठों के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है। यूनिट के संचालन काल के दौरान पीड़ितों की संख्या कम से कम तीन हज़ार थी, जबकि कुछ इतिहासकार वास्तविक मृत्यु संख्या का अनुमान दस हज़ार या उससे अधिक लगाते हैं।

यूनिट 731 के पीड़ितों में चीनी, मंचूरियाई, कोरियाई, मंगोलियाई, सोवियत और अमेरिकी युद्धबंदी और नागरिक शामिल थे। उनकी मौतें महज़ शोध का एक आकस्मिक परिणाम नहीं थीं—लगभग सभी मामलों में, प्रायोगिक प्रक्रिया ही उन्हें मारने के लिए बनाई गई थी, या तो सीधे तौर पर या जानबूझकर बीमारी या चोट पहुँचाकर। फ्रॉस्टबाइट प्रयोगों में कैदियों के अंगों को बर्फ के पानी में तब तक डुबोया जाता था जब तक वे पूरी तरह जम न जाएँ, फिर उन्हें पिघलाकर गैंग्रीन की प्रगति का अवलोकन किया जाता था। दबाव प्रयोगों में विषयों को संपीड़न कक्षों में रखा जाता था और धीरे-धीरे दबाव तब तक बढ़ाया जाता था जब तक कि आँखों, कानों और मुँह से रक्तस्राव न होने लगे। प्लेग प्रयोगों में कैदियों को खुले में खंभों से बाँध दिया जाता था और उनके चारों ओर प्लेग से संक्रमित बमों को विस्फोटित करके संक्रमण दर का अवलोकन किया जाता था। कुछ कैदियों का जीवित रहते हुए विच्छेदन किया गया—उनके अंगों को तब निकाला गया जब वे सचेत और साँस ले रहे थे—ताकि आघात के प्रति शरीर की वास्तविक प्रतिक्रिया का अवलोकन किया जा सके। शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएँ बिना एनेस्थीसिया के की गईं, किसी वैज्ञानिक कारण से नहीं, बल्कि इसलिए कि जापानी डॉक्टरों का मानना था कि एनेस्थीसिया उनके द्वारा प्राप्त किए जा रहे शारीरिक डेटा की सटीकता को प्रभावित कर सकता है।

यूनिट 731 का इतिहास न केवल अतीत की भयावह घटना है, बल्कि वर्तमान तक फैली एक भयावह घटना भी है, जिसका कारण इसके अंत का तरीका और उसके बाद के परिणाम हैं। अगस्त 1945 में जब सोवियत सेना हार्बिन के पास पहुंची, तो इशी ने परिसर को नष्ट करने, अभिलेखों को जलाने और शेष कैदियों को मार डालने का आदेश दिया। यूनिट के संचालन के अंतिम दिनों में सैकड़ों कैदियों को मार डाला गया। इमारतों

को डायनामाइट से उड़ा दिया गया। यूनिट 731 को भौतिक अभिलेखों से व्यवस्थित रूप से मिटा दिया गया। इसके बाद इशी ने गुप्त रूप से अमेरिकी सेना के जैविक हथियार कार्यक्रम के साथ बातचीत की और यूनिट 731 के सभी प्रायोगिक डेटा - जिसे अमेरिकी वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया था कि वे किसी भी नैतिक तरीके से एकत्र नहीं कर सकते थे - को युद्ध अपराधों के अभियोग से छूट के बदले में देने की पेशकश की। यह सौदा स्वीकार कर लिया गया। इशी और उनके वरिष्ठ अधिकारियों पर कभी मुकदमा नहीं चलाया गया। डेटा को गोपनीय रखा गया। दशकों तक, अमेरिकी सरकार ने किसी भी सौदे के अस्तित्व से इनकार किया। यूनिट 731 को 1997 तक जापानी सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर मान्यता नहीं दी गई थी।

हारबिन परिसर का स्थल आज आंशिक रूप से एक संग्रहालय के रूप में संरक्षित है - यूनिट 731 संग्रहालय - जो 1985 में खुला था और लाखों चीनी और अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों द्वारा देखा जा चुका है। यूनिट के पूर्व कर्मचारी जो वृद्धावस्था तक जीवित रहे, उन्होंने अपने अनुभवों के बारे में सार्वजनिक रूप से बात की है, जिनकी प्रतिक्रियाएँ गहरे अपराधबोध और पश्चाताप की अभिव्यक्ति से लेकर भयावह रूप से दोनों की अनुपस्थिति तक भिन्न हैं। एक पूर्व शोधकर्ता, जिनका साक्षात्कार 90 वर्ष की आयु में लिया गया था, ने प्रयोगात्मक विच्छेदन को 'चिकित्सा कार्य' के रूप में वर्णित किया, जिसे उन्होंने वैज्ञानिक तटस्थता के साथ किया, अपने विषयों की मृत्यु के बारे में उन्होंने उतनी ही भावनात्मक अभिव्यक्ति व्यक्त की जितनी एक मैकेनिक किसी दोषपूर्ण इंजन को खोलते समय करता है। हारबिन स्थल पर रहने वाले भूतों की रिपोर्ट इस पुस्तक में वर्णित अन्य प्रेतवाधित स्थानों की तरह नाटकीय रूप से बार-बार नहीं की जाती है - यहाँ कोई प्रसिद्ध प्रेत-दर्शन नहीं है, कोई व्यापक रूप से प्रसारित तस्वीरें नहीं हैं, न ही कोई

प्रसिद्ध पैरानॉर्मल अन्वेषक रिपोर्ट दर्ज करते हैं। लेकिन संग्रहालय में काम करने वाले और अनुसंधान भवनों में लंबा समय बिताने वाले सभी लोगों ने, बिना किसी अपवाद के और बिना किसी स्पष्ट अतिशयोक्ति के, पूर्ण निराशा की ऐसी अनुभूति का वर्णन किया है जो इतनी गहरी और व्यापक है कि यह एक भौतिक शक्ति के रूप में कार्य करती है - एक ऐसी निराशा जो उस स्थान और उसके ऊपर की हवा को भिगो देती है और संरक्षित ऑपरेशन टेबल, पत्थर के फर्श और दीवारों से निकलती हुई प्रतीत होती है, जहाँ से चीखें बहुत पहले ही मिट चुकी हैं, और केवल सन्नाटा छाया हुआ है।

अध्याय 20

द मॉथमैन—विनाश का पैगंबर

नवंबर 1966 और दिसंबर 1967 के बीच तेरह महीनों में, वेस्ट वर्जीनिया के मेसन काउंटी में स्थित छोटे से शहर प्वाइंट प्लेजेंट में एक ऐसी विचित्र, भयावह और तबाही से अटूट रूप से जुड़ी हुई प्राणी से कई बार मुठभेड़ हुई कि यह अमेरिकी लोककथाओं में आने वाले विनाश के प्रतीक के रूप में स्थायी रूप से दर्ज हो गई। मॉथमैन—जिसे एक साधारण अखबार के उप-संपादक ने बैटमैन टेलीविजन श्रृंखला के एक पात्र से यह नाम उधार लेकर रखा था—को इस अवधि के दौरान सौ से अधिक स्वतंत्र गवाहों ने एक विशाल, मानवाकार आकृति के रूप में वर्णित किया, जिसकी ऊंचाई लगभग सात फीट थी, जिसके विशाल पंख एक मांसल शरीर से लिपटे हुए थे, और जिसकी आंखें गहरे, चमकते लाल रंग की थीं, जिन्हें गवाहों ने लगातार प्रत्यक्ष, बुद्धिमान और द्वेषपूर्ण दृष्टि की प्रबल अनुभूति उत्पन्न करने वाला बताया। इस प्राणी को गवाहों द्वारा अनुमानित सौ मील प्रति घंटे की गति से उड़ते हुए देखा गया था, कभी-कभी हवा में मंडराते हुए, कभी-कभी

मेसन काउंटी की पिछली सड़कों पर कारों का आसानी से पीछा करते हुए, विशाल पंखों की फड़फड़ाहट के अलावा कोई आवाज नहीं करते हुए, और कभी-कभी एक तेज, यांत्रिक चीख जैसी आवाज निकालते हुए देखा गया।

पहली घटना 15 नवंबर, 1966 को घटी, जब दो युवा जोड़े—रोजर और लिंडा स्कारबेरी और स्टीव और मैरी मैलेट—पॉइंट प्लेजेंट के बाहर द्वितीय विश्व युद्ध के एक परित्यक्त गोला-बारूद परिसर के पास गाड़ी चला रहे थे, जिसे स्थानीय रूप से 'टीएनटी क्षेत्र' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने बताया कि उन्होंने सड़क के पास चमकती लाल आँखों वाली एक विशाल आकृति को खड़े देखा। जब वे तेज़ी से गाड़ी चलाकर वहाँ से चले गए, तो वह प्राणी हवा में उड़ गया और सौ मील प्रति घंटे से अधिक की गति से राजमार्ग पर उनका पीछा करने लगा, फिर अचानक रुक गया। दंपतियों ने मेसन काउंटी शेरिफ कार्यालय में रिपोर्ट दर्ज कराई, और उनके द्वारा दिया गया विवरण, जिसे उन्होंने पूछताछ के दौरान लगातार दोहराया, अगले महीनों में अन्य गवाहों द्वारा दिए गए विवरणों से मेल खाता था। यह मेल किसी भी तरह की मिलीभगत से स्पष्ट नहीं किया जा सकता था, क्योंकि कई शुरुआती घटनाएँ इस घटना के सार्वजनिक रूप से सामने आने से पहले ही दर्ज की गई थीं।

मॉथमैन मामले को अन्य प्राणी दर्शनों से अलग करने वाली और इसे एक रहस्यमय जीव विज्ञान संबंधी जिज्ञासा से कहीं अधिक भयावह रूप देने वाली बात उन घटनाओं का क्रम है जो इन मुलाकातों के आसपास और बाद में घटीं। प्वाइंट प्लेजेंट में मॉथमैन की गतिविधियों का दौर कई अन्य असामान्य घटनाओं के साथ मेल खाता था: ओहियो नदी घाटी के ऊपर असामान्य यूएफओ दर्शन; काले सूट पहने, कभी-कभी लगभग मानव-समान दिखने वाले पुरुषों का प्रकट होना, जो मॉथमैन मुठभेड़ों के गवाहों के पास जाकर

उन्हें निर्देश देते थे कि वे जो कुछ भी देखें उसके बारे में किसी से बात न करें; कई घरों में भूत-प्रेत की गतिविधियाँ; दूरसंचार में व्यवधान; और एक बढ़ता हुआ, समुदाय-व्यापी भय और आसन्न आपदा का डर, जिसे निवासियों ने हर चीज़ में व्याप्त बताया। पत्रकार जॉन कील, जो जांच करने के लिए प्वाइंट प्लेजेंट चले गए और बाद में उन्होंने 'द मॉथमैन प्रोफेसीज़' लिखी, ने पूरे समुदाय को एक निरंतर, अकथनीय प्रत्याशित आतंक की स्थिति में रहने वाला बताया।

15 दिसंबर, 1967 को, पॉइंट प्लेजेंट को गैलिपोलिस, ओहियो से जोड़ने वाला सिल्वर ब्रिज व्यस्त समय के दौरान ढह गया, जिससे छियालीस वाहन जमी हुई ओहियो नदी में गिर गए और छियालीस लोगों की मौत हो गई - यह उस समय अमेरिकी इतिहास में पुल ढहने की सबसे घातक घटना थी। बाद में प्रत्यक्षदर्शियों के बयान सामने आए, जिन्होंने पुल ढहने से कुछ ही समय पहले पुल पर मॉथमैन को खड़े देखने का दावा किया। कई गवाहों ने बताया कि पुल ढहने से कुछ घंटे और दिन पहले, जिन लोगों ने मॉथमैन को देखा था, उन्होंने बताया कि वह प्राणी उनके सपनों में आया था - ऐसे सपने जिनमें उसने नदी की ओर, पुल की ओर, किसी तबाही वाली जगह की ओर इशारा किया था। पुल ढहने के बाद, पॉइंट प्लेजेंट में मॉथमैन के दर्शन पूरी तरह से बंद हो गए और 1966-67 की अवधि की आवृत्ति या तीव्रता के साथ दोबारा नहीं हुए। बाद के शोधकर्ताओं ने वर्षों से अन्य प्रमुख आपदाओं में या उसके आसपास मॉथमैन या इसी तरह की किसी प्राणी के देखे जाने के दस्तावेजीकरण किए हैं: 1986 की परमाणु आपदा से कुछ दिन पहले चेर्नोबिल में; 11 सितंबर, 2001 से कुछ सप्ताह पहले न्यूयॉर्क के ट्विन टावर्स में; और अन्य कई जगहों पर जहां बड़े पैमाने पर जनहित की घटनाएं हुईं। क्या यह किसी भविष्यसूचक शक्ति का वास्तविक प्रमाण है, या इसे खोजने के लिए पूर्वनिर्धारित

दिमागों द्वारा संयोगवश किए गए पैटर्न का मिलान है, या इन दोनों के बीच कुछ और है, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर देने में प्वाइंट प्लेजेंट को कोई जल्दी नहीं है - जिसने अपने शहर के केंद्र में मॉथमैन की एक मूर्ति स्थापित की है, जो इसकी भयावह विरासत को दर्शाती है।

अध्याय 21

रेक—वह प्राणी जो सोते समय आपको देखता है

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। 'द रेक' केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

द रेक का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 22

आओकिगाहारा—जापान का वृक्षों का सागर, मृत्यु का वन

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। आओकिगाहारा का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे।

इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

आओकिगाहारा की विरासत इस मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक जटिल क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 23

पूर्वी राज्य कारागार का प्रेतवाधित

पूर्वी राज्य कारागार में भूत-प्रेत के मामलों की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन

लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के

विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, ईस्टर्न स्टेट पेनिटेंटियरी के भूतिया मामले का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। भौतिक स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां जो कुछ हुआ उसकी स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है —एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 24

फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर—वेस्ट वर्जीनिया का अलौकिक आतंक

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला डालता है। फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं,

ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे प्रस्तुत विवरण ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से लिया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक

निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता,

हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 25

पेरिस की भूमिगत कब्रें—प्रकाश के शहर के नीचे छह मिलियन आत्माएँ

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। पेरिस कैटाकॉम्ब्स का इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। यहाँ वर्णित घटनाएँ वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए हैं। वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं ने इन घटनाओं की समीक्षा की है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो

इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

पेरिस कैटाकॉम्ब्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम

बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 26

ताओस की गूंज—एक ऐसी ध्वनि जो लोगों को पागल कर देती है

ताओस हम के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते

थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, ताओस हम का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है

—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 27

गेवाउदान का दानव—फ्रांस का अजेय राक्षस

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। गेवाउदान का दानव मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

गेवाउदान के दानव का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 28

इगोरॉट्स के लटकते ताबूत—फिलीपींस के मृत लोग आकाश में

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। इगोरॉट्स के लटकते ताबूतों का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

इगोरॉट्स के लटकते ताबूतों की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 29

सन् 1518 की नाचती महामारी—जब लोग नाचते-नाचते मर गए

सन् 1518 के नाचते प्लेग की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ किए जाने पर और लंबे समय तक इसकी मूल बात को लगातार बरकरार रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में होने वाली हर घटना का कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने

के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, 1518 के नाचते प्लेग का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटना का केंद्र माना जाए— बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटना की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 30

ग्रीनब्रियर भूत—वह मृत महिला जिसने अपनी ही हत्या का रहस्य सुलझाया

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। ग्रीनब्रियर भूत की कहानी मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के

दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को

बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ग्रीनब्रियर भूत के इतिहास से अंततः जो भी व्यक्ति ईमानदारी से जुड़ना चाहता है, उससे अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले अन्वेषक, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 31

द फ्लाइंग डचमैन—तीन शताब्दियों में देखा गया एक भूतिया जहाज

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो

सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। 'द फ्लाइंग डचमैन' का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच

करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

द फ्लाइंग डचमैन की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 32

रोआनोक की खोई हुई बस्ती—बिना किसी निशान के गायब हो गई

रोआनोक की खोई हुई बस्ती के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे रहस्यों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक

सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, रोआनोक की खोई हुई बस्ती का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को

ही बताई थीं। वह भौतिक स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए— बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 33

बनी मैन ब्रिज—वर्जीनिया का कुल्हाड़ी चलाने वाला प्रेत

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। बनी मैन ब्रिज केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक

प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बनी मैन ब्रिज का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता,

इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 34

ऑक्टागन हाउस—वाशिंगटन डी.सी. का सबसे पुराना भूत

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ऑक्टागन हाउस का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे

तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ऑक्टागन हाउस की विरासत इस मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित

करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 35

वार्डली हॉल की चीखती खोपड़ी

वार्डली हॉल की चीखती खोपड़ी के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से इतना परे है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय

माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, वार्डली हॉल की चीखती खोपड़ी का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए— बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक खास तरह का सन्नाटा होता है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 36

केली-हॉपकिंसविले मुठभेड़—जब किसानों ने विदेशियों से लड़ाई लड़ी

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। केली-हॉपकिंसविले घटना मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो गई। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

केली-हॉपकिंसविले मुठभेड़ का इतिहास अंततः किसी भी ऐसे व्यक्ति से, जो ईमानदारी से इसका अध्ययन करने को तैयार है, अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है —उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता की मांग करता है कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं, जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 37

ओकविले ब्लब्स—जिलेटिन जैसी बारिश जिसके कारण बड़े पैमाने पर बीमारी फैली

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। ओकविले ब्लब्स का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ओकविले ब्लब्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 38

एवोरा में हड्डियों का चैपल—मानव खोपड़ियों से बनी दीवारें

एवोरा में स्थित हड्डियों के गिरजाघर के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ किए जाने पर और लंबे समय तक अपनी बात पर कायम रहे। इस संकलन से जो उभरता है वह

एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, एवोरा में स्थित चैपल ऑफ बोन्स का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी

सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका न तो कोई वास्तुशिल्पीय कारण है और न ही कोई मौसम संबंधी व्याख्या। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 39

रेन्हम हॉल की भूरी महिला—ब्रिटेन की सबसे प्रसिद्ध भूतिया तस्वीर

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। रेन्हम हॉल की भूरी महिला की कहानी मात्र अलौकिक परंपरा की एक अनोखी वस्तु नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और

उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

रेन्हम हॉल की भूरी महिला का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता की मांग करता है कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की

तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 40

हाईगेट वैम्पायर—लंदन का अमर प्राणी कब्रिस्तान में आतंक मचा रहा है

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। हाईगेट वैम्पायर का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

हाईगेट वैम्पायर की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि

गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 41

रॉबर्ट द डॉल—फ्लोरिडा का सबसे डरावना खिलौना

रॉबर्ट द डॉल के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, रॉबर्ट द डॉल का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 42

स्टुल कब्रिस्तान—कैनसस में नरक का द्वार

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। स्टुल कब्रिस्तान केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

स्टुल कब्रिस्तान का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 43

बंदर के पंजे का अभिशाप—वह इच्छा जो विनाश करती है

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता में नहीं देखी जा सकती। बंदर के पंजे के श्राप का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

बंदर के पंजे के अभिशाप की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 44

मैरी किंग्स क्लोज़—एडिनबर्ग की दबी हुई प्लेग गली

मैरी किंग्स क्लोज़ मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ के बावजूद और लंबे समय तक अपनी गवाही की मूल बात को लगातार बरकरार रखा। इस संकलन से जो बात सामने आती है,

वह कोई सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर घटना का कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, मैरी किंग्स क्लोज़ का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई

थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 45

फ्लैनन द्वीप समूह के प्रकाशस्तंभ का रहस्य—तीन रखवाले गायब हो गए

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। फ्लैनन आइल्स लाइटहाउस रहस्य मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक

साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

फ्लैनन आइल्स लाइटहाउस रहस्य का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता को सहन करने की अपेक्षा रखता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की

तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 46

ब्लैक डाहलिया हत्याकांड—हॉलीवुड का अनसुलझा खौफनाक मंजर

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में कुछ ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ब्लैक डाहलिया हत्याकांड का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ब्लैक डाहलिया हत्याकांड की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें

यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने के अर्थ की पूरी तरह से पुनर्व्याख्या करने की आवश्यकता है जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 47

काउंटेस बाथोरी—हंगरी की रक्त काउंटेस

काउंटेस बाथोरी के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, काउंटेस बाथोरी का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 48

व्हेली हाउस—कैलिफोर्निया की सबसे भूतिया इमारत

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। व्हेली हाउस केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

व्हेली हाउस का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 49

हार्ज़ पर्वत के खोए हुए बच्चे—जर्मनी की एक रहस्यमयी परी कथा

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में इतनी गहराई से विचलित करने वाली होती हैं कि सामान्य भयावहता का अनुभव भी ऐसा ही कर सकता है। हार्ज़ पर्वतों के खोए हुए बच्चों का इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को

बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि

साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

हार्ज़ पर्वतों के खोए हुए बच्चों की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 50

एसएस ओरंग मेडन—मृत नाविकों से भरा भूतिया जहाज

एसएस ओरंग मेडन मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके

निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका वह कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां

पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, एसएस ओरंग मेदान का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक

रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 51

मेन इन ब्लैक—सरकारी एजेंट या कुछ और?

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से पहुँच पाए जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला करता है। 'द मेन इन ब्लैक' केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं

के संचित भार से लिया गया विवरण है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

मेन इन ब्लैक का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने

के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 52

स्टोन टेप थ्योरी—ऐसी इमारतें जो मृत्यु को रिकॉर्ड करती हैं

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। स्टोन टेप सिद्धांत का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

स्टोन टेप सिद्धांत की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना

होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 53

विलमिंगटन का ओकडेल कब्रिस्तान—चीखता हुआ भूत

विलमिंगटन के ओकडेल कब्रिस्तान के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय

माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, विलमिंगटन के ओकडेल कब्रिस्तान का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 54

स्टैनली होटल—वह जगह जहाँ स्टीफन किंग को अपना सबसे बुरा सपना मिला।

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। स्टेनली होटल का मामला केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार पर आधारित है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

स्टैनली होटल का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 55

लीप कैसल का भूतिया इतिहास—आयरलैंड का सबसे खूनी किला

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं पाई जा सकती। लीप कैसल का भूतिया इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों पुराने मानव अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

लीप कैसल के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 56

हर्टगेन वन की भूत सेना—द्वितीय विश्व युद्ध का अलौकिक आतंक

हर्टजेन वन की भूत सेना के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का

सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां

पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, हर्टजेन वन की भूत सेना का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक

रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 57

रोते हुए लड़के की पेंटिंग्स—शापित कला जो हर आग से बच गई

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। रोते हुए लड़के की पेंटिंग्स मात्र अलौकिक परंपरा की एक अनोखी वस्तु नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत

किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी

ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

रोते हुए लड़के की पेंटिंग के इतिहास से अंततः जो भी व्यक्ति ईमानदारी से जुड़ना चाहता है, उससे अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला,

मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 58

सवाना कब्रिस्तान—अमेरिका का सबसे प्रेतवाधित शहर

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में इतनी गहराई से विचलित करने वाली होती हैं कि सामान्य भयावहता का अनुभव उन्हें दोहरा नहीं सकता। सवाना कब्रिस्तानों का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। यहाँ वर्णित घटनाएँ वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए हैं। वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं ने इन घटनाओं की समीक्षा की है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों

की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

सवाना कब्रिस्तान की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि

गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 59

हैती का ज़ॉम्बी—वॉकिंग डेड का असली विज्ञान

हैती के ज़ॉम्बी मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसे देने से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, हैती के ज़ॉम्बी का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, उसे रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घेर लिया गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भारीपन, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 60

ओवरटाउन ब्रिज—स्कॉटलैंड में वह जगह जहाँ कुत्ते मरने जाते हैं

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। ओवरटाउन ब्रिज केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार पर आधारित है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ओवरटाउन ब्रिज का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 61

मर्सी ब्राउन मामला—अमेरिका का आखिरी असली वैम्पायर

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में कुछ ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। मर्सी ब्राउन कांड का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

मर्सी ब्राउन मामले की विरासत केवल मामले के विशिष्ट तथ्यों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक और अधिक जटिल क्षेत्र में भी फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया अपने तय स्वरूप से व्यवहार नहीं करती तो इसका क्या अर्थ होता है। इस प्रश्न का कोई सहज उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड हमारे द्वारा निर्मित सीमाओं से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल और समय एवं पदार्थ से अप्रतिबंधित हैं; कि दुनिया में ऐसी सत्ताएँ मौजूद हैं जिन्हें हमने अभी तक वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने के अर्थ को पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता होगी जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह आगे बढ़ती है।

अध्याय 62

जर्सी डेविल—पाइन बैरेंस का शाश्वत राक्षस

जर्सी डेविल के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ के बावजूद और लंबे समय तक अपनी बात पर कायम रहे। इस संकलन से जो सामने आता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल

कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, जर्सी डेविल का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह

स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 63

द ब्लैक शुक—ईस्ट एंग्लिया का शैतानी कुत्ता

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला डालता है। 'द ब्लैक शुक' केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से लिया गया विवरण है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक

प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ब्लैक शुक का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले

जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 64

होइया बासिउ वन—रोमानिया का वृक्षों का बरमूडा त्रिकोण

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजक होती हैं, बल्कि वास्तव में इतनी गहराई से विचलित करने वाली होती हैं कि सामान्य भयावहता का अनुभव उन्हें दोहरा नहीं सकता। होइया बासिउ वन का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। यहाँ वर्णित घटनाएँ वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए हैं। वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं ने इन घटनाओं की समीक्षा की है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे

तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

होइया बासिउ वन की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना

होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 65

ब्रिजवाटर ट्रायंगल—न्यू इंग्लैंड का आतंक क्षेत्र

ब्रिजवाटर ट्रायंगल मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे रहस्यों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका वह कारण नहीं है जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय

माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, ब्रिजवाटर ट्रायंगल का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 66

हाईगेट कब्रिस्तान—लंदन में विक्टोरियन गोथिक शैली का भयावह स्थल

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से पहुँच पाए जैसा कि यह मामला पहुँचता है। हाईगेट कब्रिस्तान केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

हाईगेट कब्रिस्तान का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 67

गेटीसबर्ग का भूतिया इतिहास—अमेरिका का सबसे प्रेतवाधित युद्धक्षेत्र

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। गेटिसबर्ग के भूतिया किस्से का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

गेटीसबर्ग के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 68

नाज़्का रेखाएँ—मरुस्थलीय रेखाचित्र जो केवल अंतरिक्ष से ही दिखाई देते हैं

नाज़का लाइन्स के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे रहस्यों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय

रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां

पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, नाज़का लाइन्स का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से

स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह भौतिक स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 69

वॉयनिच पांडुलिपि—वह किताब जिसे कोई पढ़ नहीं सकता

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला डालता है। वॉयनिच पांडुलिपि केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे प्रस्तुत वृत्तांत ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से

तैयार किया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

वॉयनिच पांडुलिपि का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह,

उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले अन्वेषक, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 70

समरविंड मेंशन—विस्कॉन्सिन का लुप्त होता भूतिया घर

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। समरविंड मेंशन का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। यहाँ वर्णित घटनाएँ वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए हैं। वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं ने इन घटनाओं की समीक्षा की है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

समरविंड मेंशन की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना

होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 71

मैटून का पागल गैस तस्कर—अदृश्य विषनाशक

मैटून के पागल गैस तस्कर के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ के बावजूद और लंबे समय तक अपनी बात पर कायम रहे। इस संकलन से जो सामने आता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय

माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, मैटून के पागल गैस कांड का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए— बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक खास तरह का सन्नाटा होता है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 72

डोनर पार्टी—सिएरा नेवादा में जीवित रहने की भयावह कहानी

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला डालता है। डोनर पार्टी की घटना मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे प्रस्तुत विवरण ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से लिया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

डोनर पार्टी का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के संपूर्ण इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 73

स्टोनवॉल इन का भूतिया किस्सा—न्यूयॉर्क का छिपा हुआ प्रेतवाधित इलाका

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। स्टोनवॉल इन पोल्टरजिस्ट की कहानी भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों पुराने मानव अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

स्टोनवॉल इन पोल्टरजिस्ट की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 74

छाया लोग—वे पहरेदार जिनकी व्याख्या करना असंभव है

शैडो पीपल के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी

नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, 'द शैडो पीपल' का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह

स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, उसे रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घेर लिया गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 75

शिकागो का प्रेतवाधित होटल—एच.एच. होम्स का हत्यारा महल

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। शिकागो का प्रेतवाधित होटल केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और

उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

शिकागो के भूतिया होटल का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता को सहन करने की अपेक्षा रखता है—यह स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के पूरे इतिहास में दर्ज कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस

मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 76

जहर की गोली से हुए हत्याकांड—शिकागो में अनसुलझा सामूहिक हत्याकांड

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में कुछ ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। विषैली गोली हत्याकांड का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ज़हर की गोली से हुए हत्याकांड की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये

ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे इंसान होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 77

डिब्बुक बॉक्स—दुनिया की सबसे खतरनाक वस्तु

डिब्बुक बॉक्स के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके मिलने से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ के बावजूद और लंबे समय तक इसकी प्रामाणिकता को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो सामने आता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, डिब्बुक बॉक्स का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 78

हौस्का महल—चेक गणराज्य में नरक का एक द्वार

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से पहुँच पाए जैसा कि आगे वर्णित मामला करता है। हौस्का कैसल केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

हौस्का कैसल का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 79

मिस्र की चीखती ममी—वे मृत जो आतंक में मरे

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। मिस्र की चीखती ममियों का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

मिस्र की चीखती ममियों की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 80

मैरी सेलेस्टे—वह जहाज जो बिना चालक दल के रवाना हुआ

मैरी सेलेस्टे के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल

कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, मैरी सेलेस्टे का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह

स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 81

पीड़ा से व्याकुल व्यक्ति की चित्रकारी—कथित तौर पर मानव रक्त से बनी कलाकृति

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'द एंग्विश्ड मैन पेंटिंग' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के

संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा आज तक संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

'द एंग्विश्ड मैन पेंटिंग' का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह,

उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 82

केड्डी केबिन हत्याकांड—कैलिफ़ोर्निया में अनसुलझा नरसंहार

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में कुछ ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। केडी केबिन हत्याकांड का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

केड्डी केबिन हत्याकांड की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें

यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 83

हैमेलिन के बच्चे—पाइड पाइपर का असली आतंक

हैमेलिन के बच्चों के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से इतना परे है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, हैमेलिन के बच्चों का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 84

वेवर्ली हिल्स सैनिटोरियम—लुइसविले की मौत की सुरंग

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। वेवर्ली हिल्स सैनिटोरियम केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

वेवर्ली हिल्स सैनिटोरियम का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 85

बुस्को का दानव—इंडियाना का असंभव कछुआ

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। बुस्को के दानव का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

बुस्को के दानव की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 86

हाईगेट दानव—वह सत्ता जिसका नाम नहीं लिया जा सकता

हाईगेट दानव के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी

नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, हाईगेट दानव का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि

स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 87

एनेलिज़ मिशेल पर भूत का साया—जर्मनी का असली भूत भगाने का अनुष्ठान

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'एनेलिज़ मिशेल का प्रेतवादन' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों

और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा आज तक संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

एनेलिज़ मिशेल के कब्जे के इतिहास से अंततः जो अपेक्षा की जाती है, वह यह है कि जो कोई भी ईमानदारी से इसका अध्ययन करना चाहता है, उसे अनिश्चितता को सहन करने की क्षमता होनी चाहिए—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता होनी चाहिए कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ

अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 88

ला ल्लोरोना—मेक्सिको में मारे गए बच्चों की रोती हुई आत्मा

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ला ल्लोरोना का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ला ल्लोरोना की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना

होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 89

वेंडिगो—कनाडा की सर्दियों की नरभक्षी आत्मा

वेंडिगो के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय

माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, वेंडिगो का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और अपने साथ ऐसी यादें लिए हुए हैं जिन्हें उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताया था। वह भौतिक स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, उससे दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 90

चैंप—लेक चैम्पलेन का प्राचीन दानव

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से पहुँच पाते हैं, जिस तरह से यह मामला पहुँचता है। 'द चैंप' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

द चैंप का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 91

शैटो डे ब्रिसैक का भूतिया इतिहास—फ्रांस की 'लेडी ऑफ द ग्रीन'

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। शैतो डी ब्रिसैक का भूतिया इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

शैतो डी ब्रिसैक के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे इंसान होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 92

थंडरबर्ड—उत्तरी अमेरिका का आकाश आतंक

थंडरबर्ड मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे रहस्यों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी

नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, थंडरबर्ड का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह

स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 93

केडी केबिन का खौफनाक मंजर—उत्तरी कैलिफोर्निया का सबसे खूनी रहस्य

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। केडी केबिन हॉरर मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के

संचित भार से तैयार किया गया विवरण है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

केडी केबिन हॉरर का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता को सहन करने की अपेक्षा रखता है—यह स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही

बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 94

स्लेंडर मैन—डिजिटल मिथक वास्तविक दुनिया की हिंसा बन जाता है

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं पाई जा सकती। स्लेंडर मैन का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

स्लेंडर मैन की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि

गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 95

आत्महत्या वन की ऑडियो रिकॉर्डिंग—जापान की भयावह ईवीपी

आत्महत्या वन ऑडियो रिकॉर्डिंग के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से इतना परे है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और

संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, आत्महत्या वन ऑडियो रिकॉर्डिंग का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं

इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 96

टॉयन्बी टाइल्स—फिलाडेल्फिया की सड़कों पर गुमनाम संदेश

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। टॉयन्बी टाइल्स मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

टॉयन्बी टाइल्स का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 97

माउंट मिज़री रोड—लॉन्ग आइलैंड का अंधकार का द्वार

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में इतनी गहराई से विचलित करने वाली होती हैं कि सामान्य भयावहता का अनुभव उन्हें दोहरा नहीं सकता। माउंट मिज़री रोड का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे।

इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

माउंट मिज़री रोड की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 98

तमन शुद मामला—ऑस्ट्रेलिया की सबसे रहस्यमय मौत

तमन शुद मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई

लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ के बावजूद और लंबे समय तक अपनी गवाही की मूल बात को लगातार बरकरार रखा। इस संकलन से जो सामने आता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के

विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, तमन शुद का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 99

पास्कागौला अपहरण—अमेरिका में एलियंस के साथ हुई सबसे विश्वसनीय मुठभेड़

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। पास्कागौला अपहरण मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण

नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो गई। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से

अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

पास्कागौला अपहरण का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 100

तुंगुस्का घटना—वह विस्फोट जिसने दुनिया को हिला दिया

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजक होती हैं, बल्कि वास्तव में इतनी गहराई से विचलित करने वाली होती हैं कि सामान्य भयावहता का अनुभव उन्हें दोहरा नहीं सकता। तुंगुस्का घटना का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों,

इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित

स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

तुंगुस्का घटना की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल

और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 101

शैतान का घर—इटली की अपशकुन इमारत

शैतान के घर के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते

थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, 'शैतान का घर' का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह भौतिक स्थान —यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां जो कुछ हुआ उसकी स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है

—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 102

एडिनबर्ग कैसल का भूत—स्कॉटलैंड का प्राचीन ढोलक वादक

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से पहुँच पाए जैसा कि यह मामला पहुँचता है। एडिनबर्ग कैसल का भूत मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से लिया गया विवरण है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

एडिनबर्ग कैसल के भूत के इतिहास से अंततः जो भी व्यक्ति ईमानदारी से जुड़ना चाहता है, उससे अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर

सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 103

टोकोलोशे—दक्षिण अफ्रीका का रात्रि दानव

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। टोकोलोशे का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा

सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास

किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

टोकोलोशे की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 104

ब्लैक फॉरेस्ट का भूतिया किस्सा—कोलोराडो का सैन्य-स्तरीय भूत

ब्लैक फॉरेस्ट हॉन्टिंग मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने

के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, ब्लैक फ़ॉरेस्ट हॉन्टिंग का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 105

द नैन रूज—डेट्रॉइट का छोटा लाल विनाश का दानव

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला

पहुँचता है। 'द नैन रूज' केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग

जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

नैं रूज का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 106

गैल्वेस्टन का मॉथमैन—टेक्सास का तटीय आतंक

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और डरावने अनुभवों से भरी होती हैं, जिनका अनुकरण सामान्य डरावनी कहानियाँ नहीं कर सकतीं। गैल्वेस्टन के मॉथमैन का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा

वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।
बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित

स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

गैल्वेस्टन के मॉथमैन की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक

विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 107

फ़िलाडेल्फ़िया प्रयोग—वह जहाज़ जो गायब हो गया

फिलाडेल्फिया प्रयोग की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते

थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, फिलाडेल्फिया प्रयोग का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह भौतिक स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां जो कुछ हुआ उसकी स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है

—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, उससे दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 108

पोप लिक मॉन्स्टर—केंटकी का ब्रिज गोट मैन

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। पोप लिक मॉन्स्टर केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

पोप लिक मॉन्स्टर का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 109

पोवेगलिया प्लेग के गड्ढे—खुदाई करने वालों को क्या मिला

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। पोवेगलिया प्लेग गड्ढों का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे।

इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

पोवेगलिया प्लेग पिट्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना आवश्यक हो जाता है जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 110

आशा के हीरे का अभिशाप—खून में सना हुआ रत्न

आशा के हीरे के अभिशाप के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की

गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के

विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, होप डायमंड के अभिशाप का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए— बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक खास तरह का सन्नाटा होता है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 111

चेटो डे गुडानेस का भूतिया किस्सा—पाइरेनीज़ में फ्रांसीसी हॉरर

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। शैतो डी गुडानेस का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक

अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से

अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

चेटो डे गुडानेस के भूतिया इतिहास को ईमानदारी से समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति से अंततः अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता की, जिसके अनुसार मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 112

ऑस्ट्रेलिया की मिन मिन बत्तियाँ—वो बत्तियाँ जो आपके घर तक आपका पीछा करती हैं

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ऑस्ट्रेलियाई मिन मिन लाइट्स का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के

प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़,

चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ऑस्ट्रेलियाई मिन मिन लाइट्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई

आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 113

सेंट ऑगस्टीन लाइटहाउस—फ्लोरिडा का सबसे पुराना भूतिया स्थान

सेंट ऑगस्टीन लाइटहाउस के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति

की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने

चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, सेंट ऑगस्टीन लाइटहाउस का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। भौतिक स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए— बदल दिया गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घेर लिया गया है

कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 114

हाथ उसे पेंटिंग करने से रोकते हैं—ईबे पर सबसे प्रेतवाधित वस्तु

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'द हैंड्स रेसिस्ट हिम' पेंटिंग केवल अलौकिक परंपरा की एक अनोखी वस्तु नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया विवरण है, जिनकी किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा आज तक संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक

प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

'द हैंड्स रेसिस्ट हिम पेंटिंग' का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता की मांग करता है कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर

सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेजीकरण को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 115

लिज़ी बॉर्डन हाउस—फॉल रिवर की खूनी कुल्हाड़ी

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। लिज़ी बॉर्डन हाउस का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे

तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

लिज़ी बॉर्डन हाउस की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने के अर्थ की पूरी तरह से पुनर्व्याख्या करने

की आवश्यकता है जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 116

ओज़ार्क हॉलर—मिसौरी का दहाड़ता हुआ छायादार जानवर

ओज़ार्क हॉलर के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रदान करने से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ के बावजूद और लंबे समय तक इसकी मूल बात को लगातार बरकरार रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय

माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, ओज़ार्क हॉलर का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 117

ड्रिस्किल होटल—ऑस्टिन का भूतिया टेक्सास स्थल

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। ड्रिस्किल होटल का मामला केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार पर आधारित है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ड्रिस्किल होटल का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 118

एनाबेल गुड़िया—राक्षस का पसंदीदा पात्र

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में इतनी गहराई से विचलित करने वाली होती हैं

कि सामान्य भयावहता का अनुभव उन्हें दोहरा नहीं सकता। एनाबेल डॉल का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच

करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

एनाबेल डॉल की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 119

ब्लेडेनबोरो का दानव—उत्तरी कैरोलिना का पिशाच शिकारी

ब्लेडेनबोरो के राक्षस के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के

लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका कारण वह नहीं है जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक

वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, ब्लेडेनबोरो के दानव का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन

के सामान्य ढांचे से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 120

गेटीसबर्ग के भूत—वे मृत आत्माएँ जो युद्धक्षेत्र से कभी विदा नहीं हुईं

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। 'द गेटिसबर्ग घोस्ट्स' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक

प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

गेटीसबर्ग भूतों के इतिहास से अंततः जो भी व्यक्ति ईमानदारी से जुड़ना चाहता है, उससे अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष

रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 121

तुतनखामुन का अभिशाप—फिरौन की कब्र के पीछे मौत का साया

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। तुतनखामुन के श्राप का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों

की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

तुतनखामुन के अभिशाप की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें

यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 122

प्लकली गांव का भूतिया इतिहास—इंग्लैंड का सबसे भूतिया गांव

प्लकली गांव के भूतिया मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और

संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, प्लकली गांव के भूतिया मामले का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक खास तरह का सन्नाटा, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं

कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 123

अल्काट्राज़ द्वीप का प्रेतवाधित इतिहास—चट्टान के कारागार भूत

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। अल्काट्राज़ द्वीप का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

अल्काट्राज़ द्वीप के भूतिया किस्से का इतिहास अंततः ईमानदारी से समझने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता को सहन करने की अपेक्षा करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 124

फ्रेस्नो नाइटक्रॉलर—कैलिफ़ोर्निया के चलते-फिरते सफेद स्तंभ

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में कुछ ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। फ्रेस्नो नाइटक्रॉलर का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है। इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

फ्रेस्नो नाइटक्रॉलर की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 125

प्राचीन राम इन का भूतिया किस्सा—इंग्लैंड का सबसे पुराना भूतिया सराय

प्राचीन राम सराय के भूतिया रहस्य की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने

के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, प्राचीन राम सराय के भूतिया मामले का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं द्वारा अनुभव की गई घटनाओं की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, परिवर्तित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 126

कोल्चेस्टर गैरीसन पोल्टरजिस्ट—सेना का अपना भूतिया किस्सा

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। कोलचेस्टर गैरीसन पोल्टरजिस्ट (भूत-प्रेत की घटना) मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो गई। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया विवरण है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

कोल्चेस्टर गैरीसन पोल्टरजिस्ट का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 127

लेक लैनियर में डूबने की घटनाएँ—जॉर्जिया का शापित जलाशय

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में कुछ ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। लेक लैनियर में डूबने की घटना का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

लेक लैनियर में डूबने की घटना की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 128

एनफील्ड मॉन्स्टर—इलिनॉय का सड़क किनारे का आतंक

एनफील्ड मॉन्स्टर के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल

कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, एनफील्ड मॉन्स्टर का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई

थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 129

सिसिली की रोती हुई मैडोना—दुनिया भर में रोती हुई मूर्तियाँ

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। सिसिली की रोती हुई मैडोना की कहानी मात्र अलौकिक परंपरा की एक अनोखी वस्तु नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों

और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

सिसिली की रोती हुई मैडोना का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर

करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 130

चिलिंगहैम कैसल का प्रेतवाधित इतिहास—इंग्लैंड का हड्डियों का गड्ढा

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं पाई जा सकती। चिलिंगहैम कैसल का भूतिया इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों पुराने मानव अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

चिलिंगहैम कैसल के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे

जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे इंसान होने का अर्थ पूरी तरह से बदलना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 131

मोकेले-म्बेम्बे—कांगो में अफ्रीका का जीवित डायनासोर

मोकेले-म्बेम्बे मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, मोकेले-म्बेम्बे का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 132

यातिमा हाउस में लगी आग—जापान का भूतिया आगजनी कांड

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। यातिमा हाउस अग्निकांड मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

यातिमा हाउस अग्निकांड का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 133

एक्स्मूर का दानव—ब्रिटेन की रहस्यमयी विशालकाय बिल्ली

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। एक्समूर के दानव का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

एक्समोर के दानव की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 134

बेलमेज़ के चेहरे—स्पेन का सहज चित्रमय आतंक

बेलमेज़ फेसेस मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी

नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, बेलमेज़ फेसेस का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह

स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 135

बर्कले स्क्वायर के नंबर 50 का प्रेतवाधित इलाका—लंदन का हत्यारा भूत

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि यह मामला डालता है। बर्कले स्क्वायर के नंबर 50 का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों

और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।
इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।
ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बर्कले स्क्वायर के नंबर 50 के भूतिया इतिहास को ईमानदारी से समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति से अंततः अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग होती है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर

करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 136

स्माइली फेस किलर्स—अमेरिका की संगठित डूबने की साजिश

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। स्माइली फेस किलर्स का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

स्माइली फेस किलर्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये

ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 137

स्प्रिंग हील्ड जैक—विक्टोरियन इंग्लैंड का उछलता हुआ दानव

स्प्रिंग हील्ड जैक के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और

संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, स्प्रिंग हील्ड जैक का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है —एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है।

आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 138

रैग्ड पॉइंट का प्रेतवाधित इलाका—कैलिफ़ोर्निया का तटीय प्रेत

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। रैग्ड प्वाइंट का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

रैग्ड प्वाइंट के भूतिया किस्से का इतिहास अंततः ईमानदारी से समझने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता को सहन करने की अपेक्षा करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 139

ग्लोज़ेल टैबलेट्स—फ्रांस का अनसुलझा प्राचीन रहस्य

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ग्लोज़ेल टैबलेट्स का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे।

इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ग्लोज़ेल टैबलेट्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना आवश्यक हो जाता है जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 140

माउंट रेनियर पर यूएफओ का सामना—वह घटना जिसने सब कुछ शुरू किया

माउंट रेनियर यूएफओ मुठभेड़ की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसे देने से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, माउंट रेनियर यूएफओ मुठभेड़ का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभव की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटना का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटना की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 141

1789 का महान भय—फ्रांस में फैला सामूहिक अलौकिक आतंक

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि यह मामला

डालता है। सन् 1789 का महान भय मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भयों से बचाते हैं, ध्वस्त हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया जा सका है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग

जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

सन् 1789 के भीषण भय का इतिहास अंततः किसी भी ऐसे व्यक्ति से, जो ईमानदारी से इसका अध्ययन करने को तैयार है, अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है —उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता की, कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 142

सेंट एल्मो के अग्नि नाविक—समुद्री यात्रियों का प्लाज्मा राक्षसों से सामना

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। सेंट एल्मोस फायर सेलर्स का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित

मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़,

चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

सेंट एल्मोस फायर सेलर्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान

उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 143

रेंडलेशम वन की पहेली—ब्रिटेन का रोसवेल

रेंडलेशम वन की पहेली की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते

थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, रेंडलेशम वन की पहेली का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के

पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 144

यूएसएस हॉर्नेट का भूतिया किस्सा—नौसेना का भूतिया विमानवाहक पोत

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। यूएसएस हॉर्नेट का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय

माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों

की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

यूएसएस हॉर्नेट के भूतिया इतिहास से अंततः जो भी व्यक्ति ईमानदारी से जुड़ना चाहता है, उससे अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 145

टाइटेनिक के भूत—अटलांटिक के मृत

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। टाइटैनिक के भूतों का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे।

इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

टाइटेनिक के भूतों की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 146

रोमानियाई स्ट्रिगोई—मूल पिशाच

रोमानियाई स्ट्रिगोई मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों द्वारा दी गई गवाहियां

जिनका इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के

विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, रोमानियाई स्ट्रिगोई का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 147

शिकागो के मॉथमैन—शहर का हालिया पंखयुक्त आतंक

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। शिकागो के मॉथमेन (राक्षस) मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं,

ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक

निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

शिकागो के मॉथमैन का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता,

हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 148

फीनिक्स लाइट्स—पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर यूएफओ देखे जाने की घटना

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। फीनिक्स लाइट्स का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो

इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

फीनिक्स लाइट्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम

बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 149

काली आंखों वाली सुसान—मैरीलैंड का राजमार्ग पर दिखने वाला प्रेत

काली आंखों वाली सुसान के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते

थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, ब्लैक-आईड सुसान का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी,

एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 150

होइया बासिउ का प्रेतवाधित जंगल—जहां लोग समय खो देते हैं

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। होइया बाकिउ का प्रेतवाधित जंगल मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से संकलित है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

होइया बासिउ के प्रेतवाधित जंगल का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से

व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 151

ओक आइलैंड मनी पिट—कनाडा का शापित खजाना खोज

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ओक आइलैंड मनी पिट का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा

सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास

किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ओक आइलैंड मनी पिट की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 152

उत्तरी यूरोप के दलदली इलाकों में मिले शव—बलिदान किए गए मृत शरीर

उत्तरी यूरोप के दलदली इलाकों में मिले शवों के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ किए जाने पर और लंबे समय तक इसकी मूल बात को लगातार बरकरार रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने

के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, उत्तरी यूरोप के दलदली शवों का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए— बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 153

ग्लैमिस कैसल का भूतिया किस्सा—स्कॉटलैंड का गुप्त कमरा

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला डालता है। ग्लैमिस कैसल का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे प्रस्तुत विवरण ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से लिया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के

दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को

बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ग्लैमिस कैसल के भूतिया किस्से का इतिहास अंततः ईमानदारी से समझने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता को सहन करने की अपेक्षा करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 154

अंगिकुनी का लुप्त होता गाँव—कनाडा का भुला दिया गया भयावह इतिहास

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती

हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। अंगिकुनी के लुप्त होते गाँव का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच

करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

अंगिकुनी के लुप्त होते गाँव की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 155

लॉफ्टस हॉल का प्रेतवाधित इतिहास—आयरलैंड का नरक का द्वार

लॉफ्टस हॉल के भूतिया मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल

कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से इतना परे है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, लॉफ्टस हॉल के भूतिया मामले का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं द्वारा अनुभव की गई घटनाओं की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी

सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 156

फ्रेस्नो नाइट क्रॉलर्स—जीव विज्ञान के नियमों को चुनौती देने वाले जीव

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'द फ्रेस्नो नाइट क्रॉलर्स' केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं

के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

फ्रेस्नो नाइट क्रॉलर्स का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने

के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 157

ग्लेनलो एबे का प्रेतवाधित इतिहास—आयरलैंड का मध्ययुगीन आतंक

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं पाई जा सकती। ग्लेनलो एबे का भूतिया इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों पुराने मानव अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ग्लेनलो एबे के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे

जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे इंसान होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 158

तिमूर का शापित मकबरा—वह चेतावनी जिसे अनसुना कर दिया गया

तिमूर के शापित मकबरे के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका वह कारण नहीं है जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और

संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, तैमूर के शापित मकबरे का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह भौतिक स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं

कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 159

ब्लडी टॉवर का भूत—इंग्लैंड का सबसे पुराना दर्ज भूतिया किस्सा

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'खूनी मीनार का भूत' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और

वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ब्लडी टावर के भूत का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 160

हेसडेलन लाइट्स—नॉर्वे की रहस्यमय प्रकाश घटना

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में कुछ ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। हेस्डेलन लाइट्स का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे।

इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित

घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

हेस्डेलन लाइट्स की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना आवश्यक हो जाता है जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 161

बकरे का अभिशाप—शिकागो का सबसे लंबा खेल

अभिशाप

बकरे के श्राप की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके। इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, बकरे के श्राप का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 162

ईस्टर्न एयरलाइंस के भूतिया विमानों का आतंक

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'ईस्टर्न एयरलाइंस के भूतिया विमानों का रहस्य' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है,

एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की

गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ईस्टर्न एयरलाइंस के भूतिया विमानों के इतिहास को ईमानदारी से समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति से अंततः अनिश्चितता को सहन करने की क्षमता की मांग होती है—

उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की इच्छा, जिसके अनुसार मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के पूरे इतिहास में दर्ज कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 163

हवाई के रात्रि जुलूसकर्ता—लावा पर चलने वाले मृत

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। हवाई के रात्रि जुलूस में शामिल लोगों का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो

इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

हवाई के रात्रि मार्च करने वालों की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और

पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने के अर्थ को पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 164

बेटिसकोम्ब मनोर की चीखती खोपड़ी

बेट्टीस्कॉम्ब मैनर की चीखती खोपड़ी के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रदान करने से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से इतना परे है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम

करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, बेट्टीस्कॉम्ब मैनर की चीखती खोपड़ी का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि

इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 165

ग्लेन कोए का आकर्षण—स्कॉटलैंड का भूतों का युद्धक्षेत्र

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'द ग्लैमर ऑफ ग्लेन कोए' केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने

के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही

उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ग्लेन कोए के वैभव के इतिहास को ईमानदारी से समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति से अंततः अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता की, जिसके अनुसार मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे गहनता से काम करने वाले अन्वेषक, इसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 166

एल्थम पोल्टरजिस्ट—लंदन का उपनगरीय आतंक

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। एल्थम पोल्टरजिस्ट की कहानी भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों पुराने मानव अनुभवों से जुड़ी इन घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं ने की है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

एल्थम पोल्टरजिस्ट की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 167

पुल पर बैठा राक्षस—न्यू इंग्लैंड का असंभव जानवर

पुल पर मौजूद राक्षस के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल

कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, पुल पर शैतान का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि

स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटना की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक खास तरह का सन्नाटा होता है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 168

ऑशविट्ज़ के भूत—दुनिया का सबसे प्रेतवाधित होलोकॉस्ट स्थल

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से पहुँच पाए जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला करता है। 'द घोस्ट्स ऑफ ऑशविट्ज़' केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन

घटनाओं के संचित भार से लिया गया विवरण है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

ऑशविट्ज़ के भूतों का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने

के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 169

क्वीन मैरी का भूतिया इतिहास—कैलिफोर्निया का तैरता हुआ मौत का होटल

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। क्वीन मैरी के भूतिया इतिहास का यह उदाहरण भी ऐसा ही है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों पुराने मानव अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

क्वीन मैरी के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये

ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे इंसान होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 170

चिचेन इट्ज़ा सेनोट्स—बलिदान के पवित्र कुएँ

चिचेन इट्ज़ा सेनोट्स के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अनसुलझे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, चिचेन इट्ज़ा सेनोट्स का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 171

लॉच नेस मॉन्स्टर—स्कॉटलैंड की प्राचीन झील का आतंक

मानव अनुभवों के इतिहास में गहराई से उतरते हुए, बहुत कम ही ऐसी घटनाएं हैं जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक इस मामले की तरह प्रभाव डालती हैं। लोच नेस मॉन्स्टर केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो आमतौर पर मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो बताया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया विवरण है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

लॉच नेस मॉन्स्टर के इतिहास से अंततः जो भी व्यक्ति ईमानदारी से जुड़ना चाहता है, उससे अनिश्चितता को सहन करने की क्षमता की अपेक्षा होती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के पूरे इतिहास में दर्ज कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 172

नॉरफ़ॉक द्वीप पर स्थित दंड कॉलोनी का प्रेतवाधित इतिहास

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। नॉरफ़ॉक द्वीप पर स्थित दंड कॉलोनी में हुए भूतिया किस्से का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को

बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि

साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

नॉरफ़ॉक द्वीप पर स्थित दंड कॉलोनी के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 173

प्रेतग्रस्त चित्रकारी जिसका शीर्षक है "हाथ उसका विरोध करते हैं"

"द हैंड्स रेसिस्ट हिम" नामक प्रेतवाधित चित्र के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सीमित कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, 'द हैंड्स रेसिस्ट हिम' नामक प्रेतवाधित चित्रकला का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरते हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह भौतिक स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, रूपांतरित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, उससे दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 174

चुचुन्या—साइबेरिया का टैगा का जंगली आदमी

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से पहुँच पाए जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला करता है। चुचुन्या की कहानी मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं

है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे प्रस्तुत विवरण ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से लिया गया है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से

अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

चुचुन्या का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 175

इंग्लैंड का रोने वाले लड़के का अभिशाप

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है; वे सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि वे मनोरंजक होने के कारण नहीं, बल्कि वास्तव में अत्यंत विक्षिप्त और भयावह होती हैं, ऐसी भयावहता जो सामान्य भयावहता से परे है। इंग्लैंड के रोते हुए लड़के के अभिशाप का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों,

इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित

स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

इंग्लैंड के रोते हुए लड़के के अभिशाप की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं

अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 176

लारनाच कैसल का भूतिया किस्सा—न्यूजीलैंड का टूटा हुआ दिल

लारनाच महल के भूतिया रहस्य की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि

दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने

चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, लारनाच कैसल के भूतिया मामले का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी

घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 177

द डोपेलगैंगर—अपनी ही मृत्यु के अपशगुन से मिलना

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की भावना को उस तीव्रता से झकझोर पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला सामने आता है। 'द डोपेलगैंगर' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई उजागर हो जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

डोपेलगैंगर का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर

सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 178

रोम की भूमिगत कब्रें—शाश्वत नगर के नीचे दफ़न 20 लाख लोग

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। रोम के तहखानों का इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। यहाँ वर्णित घटनाएँ वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए हैं। वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं ने इन घटनाओं की समीक्षा की है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही

उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम

करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

रोम के तहखानों की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना आवश्यक हो जाता है जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 179

कैचटिस कैसल का प्रेतवाधित इतिहास—ब्लड काउंटेस का स्थल

कैचटिस कैसल के भूतिया मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से इतना परे है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि

साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, कैचटिस कैसल के भूतिया मामले का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 180

मनीला में बालेटे ड्राइव—फिलीपींस की सबसे भूतिया सड़क

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। मनीला में बालेटे ड्राइव की घटना मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार पर आधारित है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के

दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को

बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

मनीला में बालेटे ड्राइव का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, हालांकि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएं हैं जिन्हें यह मामला, दस्तावेजी मानव अनुभव के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 181

ब्रैक्सटन काउंटी का फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ब्रैक्सटन काउंटी के फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के

प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़,

चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ब्रेक्सटन काउंटी के फ्लैटवुड्स मॉन्स्टर की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का

कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 182

लंदन के लैंगहम होटल का भूतिया किस्सा—बीबीसी का अपना भूतिया किस्सा

लंदन के लैंगहम होटल में भूत-प्रेत के घटित होने के मामले की जांच, जैसा कि अधिकांश रहस्यमय मामलों की जांच में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है—उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक पूछताछ के बावजूद अपनी गवाही की मूल बात को लगातार बरकरार रखा। इस संकलन से जो बात सामने आती है, वह कोई सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर

विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके। इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने

चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, लंदन के लैंगहम होटल में हुए भूतिया किस्से का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, रूपांतरित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी

घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 183

डाउ हिल का शापित जंगल—भारत का भूतिया विद्यालय

मानव अनुभवों के वृत्तांतों में गहराई से उतरते हुए, शायद ही कोई ऐसा वृत्तांत हो जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डाले जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला डालता है। डॉ हिल का शापित वन केवल अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से लिया गया विवरण है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

डॉ हिल के शापित जंगल का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर

सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 184

ले रॉय का सामूहिक उन्माद—वे लड़कियाँ जो लगातार काँपती रहती थीं

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। ले रॉय के सामूहिक उन्माद का इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही

उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम

करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ले रॉय के सामूहिक उन्माद की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 185

चीखती हुई ममी—वह अज्ञात शाही व्यक्ति जिसकी दर्दनाक मौत हुई

चीखती हुई ममी के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका कोई ऐसा कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि

साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक

ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, चीखती हुई ममी का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 186

टेके टेके—जापान की आधी महिला वाली शहरी किंवदंती की वास्तविकता

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, बहुत कम ही ऐसी घटनाएं हैं जो पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह पहुंच पाती हैं, जैसा कि आगे बताई गई घटना का मामला पहुंचाता है। टेके टेके की घटना केवल अलौकिक परंपरा की एक अनोखी वस्तु नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, धराशायी हो गए और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ गई। आगे जो बताया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया विवरण है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच संस्था द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता—इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम,

साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

टेके टेके का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी उम्मीद भी नहीं है।

अध्याय 187

सैन ज़कारिया का प्रेतवाधित इलाका—वेनिस का भुला दिए गए मृतकों का द्वीप

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। सैन ज़कारिया के भूतिया किस्से का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों पुराने मानव अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

सैन ज़कारिया के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे इंसान होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 188

कुचिसाके-ओन्ना—जापान की फटे मुँह वाली महिला

कुचिसाके-ओन्ना के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल

कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की

गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, कुचिसाके-ओन्ना का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह

स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी विशेषता होती है—एक खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 189

एपीडॉरस के प्राचीन रंगमंच का प्रेतवाधित इतिहास

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। एपिडॉरस के प्राचीन रंगमंच का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक

प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

एपीडॉरस के प्राचीन रंगमंच के भूतिया इतिहास से अंततः जो भी व्यक्ति ईमानदारी से जुड़ना चाहता है, उससे अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है— उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम

करने वाले अन्वेषक, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 190

पियासा पक्षी-मिसिसिपी का एक मूल अमेरिकी राक्षस

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में इतनी गहराई से विचलित करने वाली होती हैं कि सामान्य भयावहता का प्रभाव इनसे कहीं अधिक गहरा होता है। पियासा पक्षी का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे

तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

पियासा बर्ड की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना

होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 191

गौरव का हाथ—वह कटा हुआ हाथ जो बंद दरवाजों को खोलता है

'द हैंड ऑफ ग्लोरी' मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है— उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ के बावजूद और लंबे समय तक इसकी मूल बात को लगातार बरकरार रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास

किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था

और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, 'द हैंड ऑफ ग्लोरी' का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 192

एकरहुस किले का भूतिया इतिहास—नॉर्वे का मध्ययुगीन भूतों का कारागार

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। 'द हॉन्टिंग ऑफ एकर्सहस फोर्ट्रेस' मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

अकर्सहस किले के भूतिया इतिहास को ईमानदारी से समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति से अंततः अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की अपेक्षा की जाती है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता की, जिसके अनुसार मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं, जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजीकरण के पूरे इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 193

साउथर फेल की प्रेत सेना—इंग्लैंड का पर्वतीय मृगतृष्णा

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य भयावहता से परे है। साउथर फेल की प्रेत सेना का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन इनमें से कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण

स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

साउथर फेल की प्रेत सेना की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 194

कासा लोमा का प्रेतवाधित इतिहास—कनाडा का निराशा का गॉथिक महल

कासा लोमा के भूतिया मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में रहस्यमय घटनाओं की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का

सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से इतना परे है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में घटित होने वाली हर चीज का कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां

पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, कासा लोमा के भूतिया मामले का आधिकारिक तौर पर कोई हल नहीं निकला है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं द्वारा अनुभव की गई घटनाओं

की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या मर चुके हैं, और उनके पास ऐसी यादें हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था— बदल गया है, ध्वस्त हो गया है, उस पर निर्माण हो गया है, परिवर्तित हो गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन की सामान्य संरचनाओं से इस तरह घिरा हुआ है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। और आपने, समझदारी से, वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 195

वर्साय का शापित दर्पण—वह प्रतिबिंब जो मृत्यु को दर्शाता है

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तरह से प्रभाव डालते हैं जैसा कि आगे प्रस्तुत मामला करता है। वर्साय का शापित दर्पण मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा नमूना नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के

संचित भार से लिया गया विवरण है जिन्हें आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए

और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

वर्साय के शापित दर्पण का इतिहास अंततः ईमानदारी से इसका अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता की मांग करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के

लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 196

शैतो डे फौगेरेस का भूतिया किला—ब्रिटनी का सबसे खूनी किला

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि वास्तव में बेहद भयावह और दिल दहला देने वाली होती हैं, ऐसी भयावहता सामान्य डरावनी कहानियों में नहीं देखी जा सकती। शैतो डी फौगेरेस का भूतिया इतिहास भी इसका एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के मानव अनुभव को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी अभी तक पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।
इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं,

यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ

कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

शैतो डे फौगेरेस के भूतिया किस्से की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह सवाल कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस सवाल का कोई आसान जवाब नहीं है, क्योंकि जो जवाब उपलब्ध हैं— कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हुए हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है— ये

ऐसे जवाब हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे इंसान होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 197

न्यूगेट जेल का काला कुत्ता—मौत का दूत

न्यूगेट जेल के काले कुत्ते के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में समझ से परे मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इससे कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक बेहद परेशान करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं से परे है, और इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसका वह कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी

उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता

है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, न्यूगेट जेल के 'द ब्लैक डॉग' का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान को घटनाओं का केंद्र माना जाए—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

अध्याय 198

पोएनारी महल का भूतिया किला—व्लाद द इम्पेलर का अपना किला

मानव अनुभवों के अभिलेखों में गहराई से उतरते हुए, कुछ ही वृत्तांत पाठक की वास्तविकता की गहराई तक उस तीव्रता से पहुँच पाते हैं, जिस तीव्रता से यह मामला पहुँचता है। पोएनारी महल का भूतिया किस्सा मात्र अलौकिक परंपरा का एक अनूठा उदाहरण नहीं है, बल्कि ज्ञात और अज्ञात का एक दस्तावेजी प्रतिच्छेदन है, एक ऐसा क्षण जब वे तर्कसंगत ढाँचे जो सामान्यतः मानव मन को उसके गहरे भय से बचाते हैं, ध्वस्त हो जाते हैं और उसके नीचे छिपी सच्चाई सामने आ जाती है। आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह ऐतिहासिक अभिलेखों, प्रत्यक्षदर्शी गवाहियों, फोरेंसिक साक्ष्यों और उन घटनाओं के संचित भार से तैयार किया गया है, जिनकी आज तक किसी भी वैज्ञानिक या जांच निकाय द्वारा संतोषजनक व्याख्या नहीं की गई है।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक

विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

ये घटनाएँ इतने कम समय में घटीं कि जाँचकर्ताओं ने इन्हें असाधारण रूप से संक्षिप्त बताया—मानो जो भी शक्ति इसके लिए ज़िम्मेदार थी, वह वर्षों से अदृश्य तैयारी के दौरान अपनी गति बढ़ा रही थी और फिर अचानक एक तीव्र विस्फोट के रूप में प्रकट हुई, जिसने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति को मौलिक रूप से बदल दिया। बाद में अलग-अलग जाँचकर्ताओं को स्वतंत्र रूप से बयान देने वाले गवाहों ने, एक-दूसरे के बयानों से अनभिज्ञ रहते हुए, आश्चर्यजनक रूप से समान संवेदी अनुभवों का वर्णन किया: हवा की गुणवत्ता में परिवर्तन, अनुभूति की सीमा पर एक श्रवण घटना, और सबसे बढ़कर एक निश्चितता—डर नहीं, संदेह नहीं, बल्कि एक गहरी, आंतरिक निश्चितता—कि वे किसी ऐसी चीज़ की उपस्थिति में थे जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार न तो मौजूद होनी चाहिए और न ही हो सकती है। विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों वाले लोगों द्वारा साझा किया गया यह पूर्ण विश्वास, इस मामले के उन पहलुओं में से एक है जिन्हें नज़रअंदाज़ करना सबसे कठिन है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों

को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

पोएनारी महल के भूतिया किस्से का इतिहास अंततः ईमानदारी से समझने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति से अनिश्चितता को सहन करने की अपेक्षा करता है—उस असहज वास्तविकता को स्वीकार करने की तत्परता कि मानवीय व्याख्या करने की क्षमता, यद्यपि विशाल और वास्तव में शक्तिशाली है, उसकी भी सीमाएँ हैं जिन्हें यह मामला, मानव अनुभव के दस्तावेजी इतिहास में कुछ अन्य मामलों की तरह, उजागर करने के लिए ही बना प्रतीत होता है। इस मामले पर सबसे करीब से काम करने वाले जांचकर्ता, इसे सबसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने वाले गवाह और इसके दस्तावेज़ों को सबसे सावधानीपूर्वक संकलित करने वाले इतिहासकार, अपने निजी आकलन में एक ऐसी स्थायी बेचैनी साझा करते हैं जिसे अकादमिक भाषा पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकती। वे जानते हैं कि वे क्या जानते हैं। वे इसे समझा नहीं सकते। और उनमें से अधिकांश को इसकी अपेक्षा भी नहीं है।

अध्याय 199

हिममानव ओत्ज़ी का प्राचीन अभिशाप—मृत्यु उसके खोजकर्ताओं का पीछा करती है

मानव इतिहास के दस्तावेजी अभिलेखों में ऐसे कई स्थान और घटनाएँ हैं जिन्हें आसानी से भुला देना असंभव है। ये घटनाएँ सामूहिक स्मृति में इस कदर रच-बस जाती हैं कि न केवल मनोरंजक होती हैं, बल्कि वास्तव में इतनी विक्षिप्त और भयावह होती हैं कि सामान्य डरावनी कहानियाँ भी ऐसा नहीं कर सकतीं। प्राचीन हिममानव ओत्ज़ी के अभिशाप का इतिहास भी ऐसा ही एक उदाहरण है। वर्षों, दशकों या कुछ मामलों में सदियों के प्रमाणित मानवीय अनुभवों को समेटे हुए, यहाँ वर्णित घटनाओं की समीक्षा वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, चिकित्सा विशेषज्ञों और विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं द्वारा की गई है, लेकिन कोई भी पूर्ण और सर्वमान्य व्याख्या तक नहीं पहुँच पाया है।

इस मामले के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए बुलाए गए चिकित्सा एवं वैज्ञानिक पेशेवरों को सबसे अधिक परेशान करने वाली बात स्वयं घटनाएँ नहीं थीं, यद्यपि वे घटनाएँ विचित्र थीं, बल्कि उन्हें समझने के लिए उनके अपने पेशेवर उपकरणों की अपर्याप्तता थी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, अवरक्त तरंगें, रासायनिक निशान और वायुमंडलीय असामान्यताओं को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सभी उपकरण ऐसे तरीकों से व्यवहार कर रहे थे जिनकी उनके निर्माताओं ने कल्पना नहीं की थी और न ही उनके उपयोगकर्ताओं को उन्हें समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। चिकित्सा पेशेवरों को ऐसे शारीरिक प्रभाव मिले जिनके लिए कोई जैविक तंत्र निर्धारित नहीं किया जा सका। मनोवैज्ञानिकों को गवाहों में ऐसे मनोवैज्ञानिक लक्षण मिले जो सामूहिक भ्रम, साझा मनोविकृति या मनगढ़ंत कहानी के किसी भी मौजूदा ढांचे से मेल नहीं खाते थे। इस मामले में विशेषज्ञता के साथ काम करने वाले सभी लोग अपनी विशेषज्ञता को

बरकरार रखते हुए चले गए, लेकिन इसकी पर्याप्तता में उनका विश्वास हमेशा के लिए कम हो गया।

बाद की जांच से एक ऐतिहासिक संदर्भ का पता चला जिसने प्राथमिक घटनाओं को प्रत्यक्षदर्शियों की धारणा से कहीं अधिक भयावह रूप में प्रस्तुत किया। उस समय इसे अनुभव करने वालों को जो घटनाएँ अभूतपूर्व और अलग-थलग प्रतीत हुई थीं, जाँच करने पर पता चला कि उनकी जड़ें किसी ऐसे स्थान, वस्तु या वंश में गहरी थीं जो तात्कालिक परिस्थितियों से कहीं अधिक प्राचीन था। अभिलेख—अदालती दस्तावेज़, चर्च रजिस्टर, सैन्य अभिलेख, व्यक्तिगत पत्राचार, पीढ़ियों से मौखिक परंपरा में संरक्षित स्थानीय लोककथाएँ—एक ही प्रकार की पूर्व घटनाओं के इतिहास को दर्शाते हैं, जो एक ही पैटर्न, एक ही प्रकार के संकेतों और एक ही मूल स्वरूप का अनुसरण करती हैं, मानो इसमें शामिल कोई भी शक्ति या चेतना यहाँ, इस वस्तु के माध्यम से या इस वंश में किसी की भी कल्पना से कहीं अधिक समय से और धैर्य, दृढ़ता और उद्देश्यपूर्णता के साथ कार्य कर रही हो, जिसने संयोग के विचार में शेष किसी भी सांत्वना को समाप्त कर दिया।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि

साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

ओत्ज़ी के प्राचीन हिममानव के अभिशाप की विरासत मामले के विशिष्ट तथ्यों से परे एक व्यापक और अधिक परेशान करने वाले क्षेत्र तक फैली हुई है: यह प्रश्न कि जब दुनिया वैसा व्यवहार नहीं करती जैसा उसे करना चाहिए, तो इसका क्या अर्थ है। इस प्रश्न का कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि जो उत्तर उपलब्ध हैं—कि ब्रह्मांड उन ढाँचों से कहीं अधिक विशाल और विचित्र है जिन्हें हमने इसे समाहित करने के लिए बनाया है; कि चेतना और कारणता हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक जटिल हैं और समय और पदार्थ से कम बंधे हैं; कि दुनिया में ऐसी उपस्थितियाँ हैं जिन्हें हमने वर्गीकृत नहीं किया है और ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके कार्यों का हमने अभी तक वर्णन नहीं किया है—ये ऐसे उत्तर हैं, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो एक ऐसे मानव होने का अर्थ पूरी तरह से पुनर्परिभाषित करना होगा जो ऐसी दुनिया में जी रहा है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। यह प्रतीक्षा करती है।

अध्याय 200

अंतिम प्रविष्टि—पुरालेख से एक चेतावनी

अंतिम प्रविष्टि के मामले की जांच, जैसा कि वास्तव में अस्पष्ट मामलों की अधिकांश जांचों में होता है, गवाहियों के संकलन से शुरू होती है - उन लोगों की गवाहियां जिन्हें इसके प्रावधान से कोई लाभ नहीं था, जिन्होंने कई मामलों में इसके निहितार्थों का सक्रिय

रूप से विरोध किया, और जिन्होंने बार-बार पूछताछ और लंबे समय तक इसके सार को लगातार बनाए रखा। इस संकलन से जो उभरता है वह एक सुव्यवस्थित, सरल कहानी नहीं है, बल्कि घटनाओं का एक अत्यंत विचलित करने वाला क्रम है जो एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचता है जो पारंपरिक व्याख्याओं के लिए इतना प्रतिरोधी है कि इसका समाधान करने के लिए इस संभावना पर विचार करने की मूलभूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है कि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसका कोई कारण नहीं होता जिसे मौजूदा मानवीय ज्ञान पहचान सके।

इस मामले की प्राथमिक घटनाओं के बाद के वर्षों और दशकों में, विभिन्न संगठनों - कुछ आधिकारिक, कुछ निजी, और कुछ इन दोनों के बीच की अस्पष्ट सीमा रेखा में काम करने वाले - ने साक्ष्यों की पुन: जांच करने, जीवित गवाहों का पुनः साक्षात्कार करने और संरक्षित भौतिक साक्ष्यों पर नई विश्लेषणात्मक तकनीकों को लागू करने के कई प्रयास किए हैं। इनमें से किसी भी पुन: जांच से वह निर्णायक समाधान नहीं निकला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। इनसे लगभग हर बार जो परिणाम निकला है, वह है संबंधित घटनाओं की जटिलता के प्रति गहरा सम्मान और यह अनिच्छुक स्वीकारोक्ति कि साक्ष्यों के संपूर्ण समूह से ईमानदारी से जुड़ने वाले किसी भी अन्वेषक के लिए सबसे बौद्धिक रूप से ईमानदार स्थिति न तो संशयपूर्ण अस्वीकृति है, न ही अंधविश्वासपूर्ण स्वीकृति, बल्कि एक सतत और खुली जांच है जो शायद कभी अपने अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचे।

भौतिक साक्ष्य, जिन्हें जांचकर्ताओं ने अलग-अलग स्तर की सावधानी और वैज्ञानिक सटीकता के साथ संरक्षित किया, एक ऐसा दस्तावेजी संग्रह बन गए जिसे बाद के विश्लेषक पूरी तरह से मानवीय हस्तक्षेप से नहीं जोड़ पाए। तस्वीरों में ऐसी विसंगतियां

पाई गईं जिन्हें फोटोग्राफी विशेषज्ञ ज्ञात प्रकाशीय घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट नहीं कर सके। ऑडियो रिकॉर्डिंग में इन्फ्रासोनिक और अल्ट्रासोनिक श्रेणियों की ध्वनियां दर्ज की गईं— ऐसी ध्वनियां जो मानव चेतना की क्षमता से नीचे और ऊपर थीं— जिन्हें आसपास के किसी भी यांत्रिक, भूवैज्ञानिक या वायुमंडलीय स्रोत से नहीं जोड़ा जा सका। भौतिक वस्तुओं पर ऐसे निशान थे जो उन पदार्थों से मेल नहीं खाते थे जिनसे ये निशान बनने चाहिए थे। वह स्थान—चाहे वह कहीं भी हो, चाहे उसका रूप कैसा भी हो—वर्षों बाद भी एक विद्युत चुम्बकीय चिह्न बनाए रखा जिसे मापने वाले उपकरण तो पहचान सकते थे, लेकिन जिसकी कोई भूवैज्ञानिक या औद्योगिक व्याख्या नहीं की जा सकी। डेटा फाइलों में पड़ा रहा। फाइलों पर धूल जमती रही। घटनाएं जारी रहीं।

इस मामले की सटीक परिस्थितियाँ पहली बार स्थानीय प्रेस कवरेज और उन व्यक्तियों की गवाही के माध्यम से सार्वजनिक हुईं, जिनके पास बोलने से खोने के लिए सब कुछ था और पाने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे समुदायों में जहाँ गोपनीयता को महत्व दिया जाता है, जहाँ अलौकिक घटनाओं को सार्वजनिक रिकॉर्ड के बजाय निजी विश्वास का विषय माना जाता है, इस प्रकार के वृत्तांतों को सार्वजनिक रूप से दर्ज कराने का निर्णय एक ऐसे साहस की मांग करता है जिसे बाहर से कम आंकना आसान है। ये लोग प्रसिद्धि या मुआवज़ा पाने की चाहत में नहीं थे। ये वे लोग थे जिन्होंने कुछ देखा था और उसे देखने के बाद वे खुद को इससे इनकार करने में असमर्थ पा रहे थे। यही विशिष्टता—सामूहिक विश्वास की सीमाओं को चुनौती देने वाले व्यक्तिगत मानवीय अनुभव की यही विशिष्टता —इस मामले को इसकी विशिष्ट और स्थायी शक्ति प्रदान करती है।

आज तक, 'द लास्ट एंट्री' का मामला आधिकारिक तौर पर अनसुलझा ही है। संबंधित अधिकारियों ने अपने जांचकर्ताओं के अनुभवों की पूरी गहराई को सार्वजनिक रूप से

स्वीकार नहीं किया है। गवाह बूढ़े हो चुके हैं, या उनकी मृत्यु हो चुकी है, और वे ऐसी यादें लिए फिरे हैं जो उन्होंने अपने परिवार के सबसे करीबी सदस्यों को ही बताई थीं। वह स्थान—यदि स्थान ही घटनाओं का केंद्र था—बदल गया है, ध्वस्त कर दिया गया है, उस पर निर्माण कर दिया गया है, परिवर्तित कर दिया गया है, या कुछ मामलों में आधुनिक जीवन के सामान्य ढांचे से इस तरह घिर गया है कि वहां घटी घटनाओं की स्मृति को मिटाए बिना उसका अपमान होता है। लेकिन जो लोग इतिहास जानते हैं, वे वहां से गुजरते समय इसे महसूस करते हैं। दुनिया के कुछ स्थानों में एक ऐसी खामोशी, एक भार, खोपड़ी के पिछले हिस्से पर एक दबाव होता है—जिसका कोई वास्तुशिल्पीय कारण या मौसम संबंधी स्पष्टीकरण नहीं है। आपने इसे महसूस किया है। आप जानते हैं इसका क्या अर्थ है। और आपने समझदारी से वहां से दूरी बना ली है। हर कोई ऐसा नहीं कर पाता।

उपसंहार: अभिलेखागार कभी बंद नहीं होता

आप इस खंड के अंत तक पहुँच चुके हैं, लेकिन इसमें प्रस्तुत संग्रह का कोई अंत नहीं है। हर दिन, दुनिया में कहीं न कहीं, एक नया मामला दर्ज होता है, एक नई रिपोर्ट सामने आती है, और जांचकर्ताओं द्वारा एक नई घटना का दस्तावेजीकरण किया जाता है, जिनके पास जो कुछ वे देख रहे हैं उसे समझने के लिए पर्याप्त ढांचा नहीं है। इस पुस्तक में वर्णित मामले मानव जगत के दो सौ ऐसे अनुभवों को दर्शाते हैं जो मानव जगत की संरचना से कहीं अधिक विशाल, विचित्र और भयावह हैं। ये एकमात्र ऐसे अनुभव नहीं हैं। और न ही ये सबसे गंभीर या सबसे समझ से परे हैं।

भौगोलिक, कालानुक्रमिक और श्रेणीगत विविधता के बावजूद, उनमें जो बात समान है, वह एक ऐसा गुण है जिसे शोधकर्ता और लेखक चार्ल्स फोर्ट, जिन्होंने अपना जीवन

असामान्य और अकथनीय चीजों का वर्गीकरण करने में व्यतीत किया, ने अपने विशिष्ट अप्रत्यक्ष अंदाज में इस भावना के रूप में वर्णित किया है कि हम किसी की संपत्ति हैं। यह किसी षड्यंत्रकारी भावना से नहीं, न ही किसी असहायता से। बल्कि इस अर्थ में कि ब्रह्मांड में ऐसे हित, शक्तियाँ, बुद्धिमत्ताएँ और तंत्र विद्यमान हैं जो उन सिद्धांतों के अनुसार कार्य करते हैं जिन्हें हमने पहचाना नहीं है, उन आयामों में जिन्हें हमने मापा नहीं है, उन लक्ष्यों की ओर जिन्हें हमने समझा नहीं है— और ये हित, शक्तियाँ, बुद्धिमत्ताएँ और तंत्र कभी-कभी हमें संक्षेप में और अपूर्ण रूप से, उन तरीकों से प्रकट होते हैं जिन्हें हमारी संस्कृति उपलब्ध रक्षा तंत्रों के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती है, जैसे कि अलौकिक, मनोविकार, धोखा या रूपक।

इस पुस्तक का उद्देश्य आपको यह बताना नहीं है कि आपको क्या मानना चाहिए। इसका उद्देश्य केवल यह बताना है कि क्या हुआ। जो कुछ हुआ, उससे आप जो निष्कर्ष निकालते हैं—वास्तविकता की प्रकृति के बारे में, तर्क की सीमाओं के बारे में, दुनिया क्या है और क्या कोई है जो इसे भीतर से देख रहा है—वह केवल आपका है, आप जहां भी इसे पढ़ रहे हैं, वहां की एकांतता में, उस विशेष प्रकाश या अंधकार में जो इस समय आपको घेरे हुए है। लेकिन ईमानदारी से निष्कर्ष निकालें। क्योंकि इन पन्नों में वर्णित लोगों ने कुछ अनुभव किया। और उन्होंने इसके बारे में ईमानदारी से बताया, भले ही इसके लिए उन्हें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। आप कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि उनकी ईमानदारी का जवाब अपनी ईमानदारी से दें।

-अंत-